राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

नवंबर - 2023

मूल्य ₹ 50/-

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

कर्ज का फंदा...

चीन की BRI योजना
की निकली हवा!

Socrates Social Research University

HONORIS CAUSA

An ISO 9001:2015 Certified Organization

(Regd. by Govt of GNCT Delhi &
NITI Aayog Govt of India, UNO)

इंटरनेशनल कर्मश्री अवार्ड 2023

with Honorary Doctorate Award

25th November, 2023, Saturday (05 PM onwards)

Venue :- IMC CHAMBER OF COMMERCE AND INDUSTRY

CHURCHGATE, MUMBAI, MAHARASHTRA-400020

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

•वर्ष : 8 •अंक: 08 •मुंबई •नवंबर-2023

मुद्रक-प्रकाशक,संपादक

नटराजन बालसुब्रमणियम

कार्यकारी संपादक

मंगला नटराजन अय्यर

उप संपादक

भाग्यश्री कानडे, तोषिर शुक्ला,
संतोष मिश्रा, जेदवी आनंद

ब्यूरो चीफ

ओडिशाः अशोक पाण्डेय
उत्तर प्रदेशः विजय दूबे
पटनाः राय यशेन्द्र प्रसाद

टंकन व पृष्ठ सज्जा

ज्योति पुजारी, सोमेश

मार्केटिंग मैनेजमेंट

राजेश अय्यर,शैफाली,

संपादकीय कार्यालय

Add: Tirupati Ashish CHS., A-102, A-1 Wing , Near Shahad Station , Kalyan (W) , Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in, mangsom@rediffmail.com
Website: swarnimmumbai.com

मालिक, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : बी. नटराजन द्वारा तिरुपति को. ऑप, हॉसिंग सोसायटी, ए-१ विंग १०२, नियर शहाड स्टेशन, कल्याण (वेस्ट)-४२११०३, जिलाः ठाणे, महाराष्ट्र से प्रकाशित व *महेश प्रिन्टर्स, बिरला कॉलेज, कल्याण से मुद्रित।*

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

सभी विवादों का निपटारा मुंबई न्यायालय होगा।

इस अंक में...

मराठा आरक्षण की मांग .	05
'वन बेल्ट वन रूट' प्रोजेक्ट पर विभिन्न देशों में संकट के बादल	10
पांच दिवसीय दिवाली का पर्व	16
पकवान	20
नीलगिरी की पहाडियों में बसा कुन्नूर	24
लोग मुझे अच्छी इंसान के रूप में याद रखेंः वहीदा रहमान	29
विलक्षण व्यक्तित्व के धनीः प्रो.अच्युत सामंत ...	30
ओडिशा हलचल.	32
सम्पन्नता, प्रसन्नता और प्रपन्नता...	35
अद्वैत वेदांत के दर्शन का संदेश देगा	37
मंगलसूत्र	40
ठूंठ में कोंपल (कथा सागर)	44
आलू की खेती...	56

सुविचारः

सभी भुगतान युक्त नौकरियां दिमाग को अवशोषित और अयोग्य बनाती हैं.

संपादकीय

चुनावी बांड योजना...

यूं तो चुनाव में चंदा देना आम बात है। लेकिन ये चंदा कौन दे रहा है? कितना दे रहा है, किसे दे रहा है और क्यों दे रहा है? ये सवाल हर चुनाव में उठते रहे हैं। इलेक्ट्रॉरल बांड का मुद्दा अब सुप्रीम कोर्ट भी पहुंच चुका है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि वह चुनावी बांड के जरिये राजनीतिक दलों को मिले चंदे के ब्योरे की जांच करेगा। मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ और न्यायमूर्ति संजीव खन्ना, न्यायमूर्ति बीआर गवई, न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने कई याचिकाओं पर सुनवाई के दौरान चुनाव आयोग से समीक्षा के लिए चुनावी बांड के माध्यम से राजनीतिक दल ों के वित्तपोषण का विवरण तैयार करने को कहा। बॉन्ड के खिलाफ दाखिल याचिका पर सुनवाई के दौरान याची के वकील प्रशांत भूषण ने दलील दी है कि इसमें पारदर्शिता नहीं है। इससे लोगों के जानने के अधिकार का उल्लंघन हो रहा है। चुनाव आयोग तक को पता नहीं होता। यह जानने का लोगों को मौलिक अधिकार है।

बजट २०१७ के दौरान संसद में तत्तकालीन वित्त मंत्री अरुण जेटली ने कहा था कि अभी तक चुनावी चंदा में कोई पारदर्शिता नहीं है। अगर नगद चंदा दिया जाता है तो धन का स्रोत, देने वाले और किसे दिया जा रहा है। कोई नहीं जान पाता है। अब चंदा देने वाला बैंक एकाउंट के जरिए ही चुनावी बांड खरीद सकेगा और राजनीतिक दल भी चुनाव आयोग को आयकर दाखिल करते हुए ये बताएंगे कि उन्हें कितना चंदा चुनावी बांड के जरिए मिला है। सरकार की माने तो इन बांड का मकसद राजनीतिक चंदे को पारदर्शी बनाना है। केवल वे राजनीतिक दल जो लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम १९५१ की धारा २९ए के तहत रजिस्टर्ड हैं। उन्होंने पिछले आम चुनाव में लोकसभा या विधानसभा के लिए डाले गए वोटों में कम से कम १ प्रतिशत वोट हासिल किए हों, वे ही चुनावी बांड हासिल करने के पात्र हैं।

चुनावी बांड योजना को अंग्रेजी में इलेक्टोरल बॉन्डस स्कीम कहते हैं। ये भारतीय स्टेट बैंक की नई दिल्ली, गांधीनगर, चंडीगढ़, बेंगलुरु, हैदराबाद, भुवनेश्वर, भोपाल, मुंबई, जयपुर, लखनऊ, चेन्नई, कलकत्ता और गुवाहाटी समेत २९ शाखाओं में मिलते हैं। बीजेपी को चुनावी बांड योजना बनने के बाद से पांच वर्षों में बांड के माध्यम से दिए गए धन का आधे से अधिक (५७ प्रतिशत) भाजपा के पास गया है। चुनाव आयोग को दिए खुलासे के मुताबिक, पार्टी को २०१७ से २०२२ के बीच बॉन्ड के जरिए ५,२७१.९७ करोड़ रुपये मिले। मार्च २०२२ को समाप्त होने वाले वित्तीय वर्ष में भाजपा को चुनावी बांड में १,०३३ करोड़ रुपये, २०२१ में २२.३८ करोड़ रुपये, २०२० में २,५५५ करोड़ रुपये और २०१९ में १,४५० करोड़ रुपये मिले। पार्टी ने वित्तीय वर्ष के लिए प्राप्तियों में २१० करोड़ रुपये की भी घोषणा की। कांग्रेस को २०२२ तक बेचे गए कुल चुनावी बांड का ९५२ करोड़ रुपये या १० प्रतिशत प्राप्त हुआ। कांग्रेस को वित्तीय वर्ष २०२२ में चुनावी बांड से २५३ करोड़ रुपये, २०२१ में १० करोड़ रुपये, २०२० में ३१७ करोड़ रुपये मिले। २०१९ में ३८३ करोड़ रुपये मिले। तृणमूल कांग्रेस, जो २०११ से पश्चिम बंगाल में सत्ता में है, ने पूरे वर्षों में कुल ७६७.८८ करोड़ रुपये के योगदान की घोषणा की है, जो भाजपा और कांग्रेस के बाद तीसरे स्थान पर है। मार्च २०२२ में खत्म होने वाले वित्तीय वर्ष में तृणमूल कांग्रेस को ५२८ करोड़ रुपये, २०२१ में ४२ करोड़ रुपये, २०२० में १०० करोड़ रुपये और २०१९ में ९७ करोड़ रुपये मिले। ओडिशा में सत्तारूढ़ बीजू जनता दल ने २०१८-२०१९ और २०२१-२०२२ के बीच चुनावी बांड में ६२२ करोड़ रुपये की घोषणा की। इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट के अनुसार, २००० से राज्य में प्रभुत्व रखने वाली पार्टी को योजना के शुरुआती वर्ष में चुनावी बांड के माध्यम से कोई दान नहीं मिला। हालाँकि, इस बात का कोई संकेत नहीं है कि उस राशि का कितना हिस्सा केवल बांड से प्राप्त हुआ है।

एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) के अनुसार, राष्ट्रीय पार्टियों ने चुनावी बांड दान में उल्लेखनीय वृद्धि का अनुभव किया, जिसमें वित्त वर्ष २०१७-१८ और वित्त वर्ष २०२१-२२ के बीच ७४३ प्रतिशत की वृद्धि देखी गई। इसके विपरीत, इसी अवधि के दौरान राष्ट्रीय पार्टियों को कॉर्पोरेट चंदा केवल ४८ प्रतिशत बढ़ा। भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) १,००० रुपये, १०,००० रुपये, १ लाख रुपये, १० लाख रुपये और १ करोड़ रुपये के मूल्यवर्ग में बांड जारी करता है। इस साल जुलाई में एडीआर ने कहा था कि २०१६-१७ और २०२१-२२ के बीच राजनीतिक दलों द्वारा प्राप्त सभी दान का आधे से अधिक हिस्सा चुनावी बांड के माध्यम से था और भाजपा को अन्य सभी राष्ट्रीय दलों की तुलना में अधिक धन प्राप्त हुआ। इसमें कहा गया है कि २०१६-१७ और २०२१-२२ के बीच सात राष्ट्रीय दलों और २४ राज्य दलों को लगभग १६,४३७ करोड़ रुपये का दान प्राप्त हुआ। इसमें से ९,१८८.३५ करोड़ रुपये लगभग ५६ प्रतिशत - चुनावी बांड के माध्यम से प्राप्त हुए। पहले चुनावी बॉन्ड के जरिये सियासी दलों तक जो धन आता था उसे वो गुप्त रख सकती थीं. लेकिन पिछले दिनों इस पर विवाद हुआ. मामला सुप्रीम कोर्ट तक पहुंचा। अब सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि सभी राजनीतिक दलों को इलेक्शन कमीशन के समक्ष इलेक्टोरल बॉन्ड्स की जानकारी देनी होगी. इसके साथ दलों को बैंक डीटेल्स भी देना होगा। अदालत ने कहा है कि राजनीतिक दल, आयोग को एक सील बंद लिफाफे में सारी जानकारी दें।

इलेक्टोरल बॉन्ड शुरू से ही विवादों में है। केंद्र ने २९ जनवरी २०१८ को इसे लागू किया था । तर्क था कि इसके जरिए डोनेशन से चुनावी फंडिंग व्यवस्था में सुधार होगा। अब इसे सुप्रीम कोर्ट में चुनौती देकर तमाम खामियां गिनाई गई हैं। अदालत में चुनाव आयोग ने भी बताया था कि इलेक्टोरल बॉन्ड के कारण राजनीतिक पार्टियों की फंडिंग की पारदर्शिता पर गंभीर प्रभाव पड़ेगा। बहरहाल, अब सुप्रीम कोर्ट के पांच जजों की संवैधानिक बेंच इसका परीक्षण कर रही है और उम्मीद है कि आम चुनाव से पहले इस पर सुनवाई पूरी होने के बाद फैसला आ जाए। जो भी फैसला होगा वह आने वाले दिनों में चुनावी फंडिंग की दिशा और दशा तय करने में अहम होगा। कई विशेषज्ञ मानते हैं कि चंदा लेने का ये तरीका लोकतंत्र के लिए खतरनाक है। वेस्टमिंस्टर विश्विद्यालय में सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ डेमोक्रेसी की डायरेक्टर निताशा कौल फाइनेंशियल टाइम्स के लिए लिखे एक लेख में बताया कि भारत में चुनाव किस हद तक महंगा होता है। वो आंकड़ों के हवाले से लिखती हैं कि २०१९ के आम चुनाव में २०१४ की तुलना में दोगुना खर्च हुआ था। भारत का आखिरी आम चुनाव २०१६ के यूएस प्रेसिडेंट इलेक्शन से ज्यादा महंगा था। इससे पता चलता है कि चुनाव में रुपयों का बोलबाला बढ़ा है। ■

मराठा आरक्षण की मांग

महाराष्ट्र में मचा बवाल...

मराठा आरक्षण कार्यकर्ता मनोज जारांगे पाटिल गुरुवार को कथित तौर पर महाराष्ट्र सरकार के एक प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात के बाद अपना अनिश्चितकालीन अनशन खत्म कर दिया. उन्होंने सरकार से दो महीने के भीतर मुद्दे का समाधान करने को कहा है. जारांगे ने जूस पीकर अपना अनशन समाप्त किया, साथ ही कहा कि अगर दो महीने के भीतर कोई निर्णय नहीं लिया गया तो वह मुंबई तक एक विशाल मार्च का नेतृत्व करेंगे. जालना जिले में उनके गांव अंतरवाली सरती में अनशन स्थल पर यह घोषणा तब हुई जब राज्य के ४ मंत्रियों ने उनसे मुलाकात की और उनसे अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल खत्म करने का अनुरोध किया. खबरों के मुताबिक जारांगे ने सरकारी प्रतिनिधिमंडल से बातचीत के दौरान मांग की थी कि पूरे महाराष्ट्र में मराठों को आरक्षण दिया जाना चाहिए. इससे पहले उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीशों संदीप शिंदे, एम जी गायकवाड़ और अधिकारियों सहित अन्य लोगों के एक प्रतिनिधिमंडल ने जारांगे से मुलाकात की थी, जो मराठा आरक्षण की मांग को लेकर २५ अक्टूबर से जालना जिले के अपने गांव अंतरवाली सरती में अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल पर थे.

गुरुवार को मीडिया के सामने हुई चर्चा के दौरान मनोज जारांगे ने मांग करते हुए कहा कि सरकार को मराठा समुदाय के आर्थिक और सामाजिक पिछड़ेपन के सर्वेक्षण के लिए पर्याप्त धन मुहैया कराना चाहिए और कई टीमें तैनात करनी चाहिए. उन्होंने मांग की कि मराठों को कुनबी जाति प्रमाण पत्र देने वाला एक सरकारी आदेश पारित किया जाना चाहिए और 'संपूर्ण' (महाराष्ट्र) शब्द को शामिल किया जाना चाहिए. इधर, महाराष्ट्र सरकार ने मराठवाड़ा क्षेत्र के मराठों को कुनबी प्रमाणपत्र देने की प्रक्रिया पहले ही शुरू कर दी है, जो उन्हें या उनके पूर्वजों को कुनबी बताने वाले पुराने रिकॉर्ड पेश कर सकते हैं. दरअसल कुनबी, एक कृषक समुदाय है, जिसे अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) श्रेणी में आरक्षण मिलता है. मनोज जारांगे ने पूछा कि 'जब अन्य जातियों को आरक्षण का लाभ मिल रहा है तो मराठों को क्यों नहीं मिल रहा?'

मराठा आरक्षण की मांग को लेकर महाराष्ट्र में एक बार बवाल मचा गया है। मनोज जरांगे के नेतृत्व में २४ अक्तूबर से आंदोलन चल रहा है। उधर कई स्थानों पर आंदोलन हिंसक भी हो चुका है। प्रदर्शनकारियों द्वारा कई विधायकों के आवास और सरकारी भवनों पर तोड़फोड़ और आगजनी किए जाने की घटनाएं सामने आई हैं। राज्य के कई जिलों में इंटरनेट पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। इस बीच, आरक्षण की मांग के समर्थन में भाजपा के एक विधायक और शिवसेना के एक सांसद ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया। इन तमाम घटनाक्रमों के बीच कहा जा रहा है कि यह मामला अभी शांत नहीं होने वाला है।

यूं तो महाराष्ट्र में मराठा समुदाय के लिए आरक्षण की मांग दशकों पुरानी है लेकिन इस साल अगस्त में यह मुद्दा दोबारा चर्चा में आया। दरअसल, मराठा नेता मनोज जरांगे के नेतृत्व में लोगों ने २९ अगस्त से जालना जिले में मराठा समुदाय के लिए आरक्षण की मांग को लेकर भूख हड़ताल शुरू की थी। इसके साथ ही जरांगे ने मराठा समुदाय के लिए कुनबी जाति प्रमाण पत्र की मांग उठाई। २९ अगस्त को शुरू हुआ आंदोलन जालना में पुलिस लाठीचार्ज के बाद हिंसक हो गया। १ सितंबर को जिले के सराटी गांव में हिंसक भीड़ को तितर-बितर करने के लिए पुलिस ने लाठीचार्ज किया और आंसू गैस के गोले छोड़े थे। इसके साथ ही पुलिस ने घटना को लेकर कई लोगों के खिलाफ मामले दर्ज किए। पुलिस की कार्रवाई के चलते राज्य की एकनाथ शिंदे सरकार भी बैकफुट पर आ गई। खुद राज्य के उपमुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस ने प्रदर्शनकारियों से माफी मांगी और कहा कि सरकार को पुलिस द्वारा बल प्रयोग पर खेद है।

इधर हिंसा के बाद भी आंदोलनकारी अपनी मांग पर अड़े रहे। इस बीच शिंदे सरकार के प्रतिनिधियों ने आंदोलन के अगुआ जरांगे के साथ कई दौर की बात की। वार्ताओं के बाद ७ सितंबर को महाराष्ट्र सरकार ने घोषणा की कि मराठवाड़ा क्षेत्र के सभी मराठों को निजाम-कालीन कुनबी जाति के प्रमाणपत्र दिए जाएंगे। १९६० से पहल मराठा समाज को कुनबी समाज का प्रमाणपत्र दिया जाता था लेकिन संयुक्त महाराष्ट्र का गठन होने के बाद यह प्रमाण पत्र मिलना बंद हो गया।

जरांगे द्वारा सरकार के समझौते को ठुकराए जाने के बाद आगे के कदमों पर चर्चा के लिए ११ सितंबर को सरकार ने एक सर्वदलीय बैठक बुलाई। इसके साथ ही सरकार ने मराठा समुदाय के सदस्यों को जाति प्रमाण पत्र देने की मांग को लेकर न्यायाधीश संदीप शिंदे (सेवानिवृत्त) की अध्यक्षता में पांच सदस्यीय पैनल का गठन कर दिया। १४ सितंबर को मराठा कार्यकर्ता मनोज जरांगे ने भूख हड़ताल वापस ले ली। सीएम शिंदे ने खुद धरना स्थल वाले अंतरवाली सरती गांव पहुंचकर जूस पिलाया। मनोज ने सरकार को मराठाओं को आरक्षण देने के लिए ४० दिन की समय सीमा दे दी।

मराठा आरक्षण लागू करने के लिए दी गई समय सीमा २४ अक्तूबर (गुरुवार) को खत्म हो गई। लिहाजा अगले ही दिन से जरांगे ने जालना के अपने पैतृक अंतरवाली सराती गांव में दूसरी बार भूख हड़ताल शुरू कर दी। जरांगे ने आरोप लगाया कि सरकार को ४० दिन का समय दिया गया था लेकिन उसने आरक्षण के लिए कुछ नहीं किया। एक

हिंसा का यह आलम है कि मराठवाड़ा के दो जिलों- जालना और बीड में इंटरनेट सेवाएं दो नवंबर तक के लिए बंद कर दी गई हैं. चार लोगों ने आत्मदाह का प्रयास किया है. मराठवाड़ा के आंदोलनकारी सिर्फ कुनबी समुदाय को आरक्षण के दायरे में लाने से खुश नहीं हुए. वे संपूर्ण मराठा समाज को ओबीसी आरक्षण के दायरे में लाना चाहते हैं, लेकिन इसमें कई बातें आड़े आ रही हैं. संपूर्ण मराठा समाज यदि आरक्षण के दायरे में आ गया, तो ओबीसी के लिए निर्धारित सारे कोटे पर मराठा समाज का ही परचम लहराएगा. महाराष्ट्र में यूं भी मराठा समाज के ताकतवर लोग हर क्षेत्र में छाये हैं. राज्य पुनर्गठन आयोग ने १९६० में बम्बई राज्य खत्म कर महाराष्ट्र राज्य बनाया. तब से अब तक महाराष्ट्र राजनीति में मराठा ही हावी हैं.

बार फिर मराठा समुदाय ने ओबीसी श्रेणी के तहत सरकारी नौकरियों एवं शिक्षा में आरक्षण की मांग को लेकर राज्य के विभिन्न हिस्सों में प्रदर्शन शुरू कर दिया। कुछ स्थानों पर आंदोलनकारियों ने कुछ नेताओं के आवास में तोड़फोड़ और आगजनी की। हिंसा की घटनाओं के बाद महाराष्ट्र के धाराशिव जिले में कर्फ्यू भी लगाया गया है।

इस बीच मंगलवार को महाराष्ट्र कैबिनेट की बैठक हुई। इस दौरान मराठा समुदाय को आरक्षण देने पर जस्टिस संदीप शिंदे समिति की अंतरिम रिपोर्ट को कैबिनेट ने स्वीकार कर लिया। बैठक में निर्णय लिया गया कि मराठों को कुनबी जाति प्रमाण पत्र जारी करने की प्रक्रिया शुरू होगी। साथ ही, यह भी निर्णय लिया गया कि पिछड़ा वर्ग आयोग मराठा समुदाय की सामाजिक और शैक्षणिक स्थिति का आकलन करने के लिए नए आंकड़े इकट्ठा करेगा। उधर सीएम शिंदे ने जरांगे को फोन पर आश्वासन दिया है कि राज्य सरकार मराठा आरक्षण मुद्दे को लेकर उच्चतम न्यायालय में सुधारात्मक याचिका दायर करने के लिए तैयार है। महाराष्ट्र में मराठा समुदाय के लिए सरकारी नौकरियों और शिक्षा में आरक्षण की मांग बहुत पुरानी है। साल १९९७ में मराठा संघ और मराठा सेवा संघ ने सरकारी नौकरियों और शैक्षणिक संस्थानों में आरक्षण के लिए पहला बड़ा मराठा आंदोलन किया। प्रदर्शनकारियों ने अक्सर कहा है कि मराठा उच्च जाति के नहीं बल्कि मूल रूप से कुनबी यानी कृषि समुदाय से जुड़े थे। मौजूदा स्थिति की बात करें तो मराठा समुदाय महाराष्ट्र की आबादी का लगभग ३१ प्रतिशत है। यह एक प्रमुख जाति समूह है लेकिन फिर भी समरूप यानी एक समान नहीं है। इसमें पूर्व सामंती अभिजात वर्ग और शासकों के साथ-साथ सबसे ज्यादा वंचित किसान शामिल हैं। राज्य में अक्सर कृषि संकट, नौकरियों की कमी और सरकारों के अधूरे वादों का हवाला देते हुए समाज ने आंदोलन किये हैं। २०१८ में महाराष्ट्र विधानमंडल से मराठा समुदाय के लिए शिक्षा और सरकारी नौकरियों में १६% आरक्षण का प्रस्ताव वाला एक विधेयक पारित किया गया। विधेयक में मराठा समुदाय को सरकार ने सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़ा वर्ग घोषित किया। विधानमंडल में पारित होने के बाद मराठा आरक्षण का मामला अदालती हो गया। जून २०१९ में बम्बई उच्च न्यायालय ने मराठा आरक्षण की संवैधानिकता को बरकरार रखा, लेकिन सरकार से इसे राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग की सिफारिश के अनुसार १६% से घटाकर १२ से १३% करने को कहा। इस आरक्षण को बड़ा झटका तब लगा जब मई २०२१ को जब सुप्रीम कोर्ट ने मराठा आरक्षण को असंवैधानिक ठहराया और कानून को रद्द कर दिया। अदालत ने माना कि मराठा आरक्षण ५० फीसदी सीलिंग का उल्लंघन कर दिया गया था।

देश की सर्वोच्च अदालत ने १९९२ के इंदिरा साहिनी फैसले में शिक्षा और रोजगार में मिलने वाले जातिगत आरक्षण पर ५० फीसदी की सीमा तय की थी। हालांकि, जुलाई २०१० के एक अन्य फैसले में सर्वोच्च न्यायालय ने राज्यों को फीसदी की सीमा से अधिक आरक्षण देने की सशर्त अनुमति दे दी। ऐसे मामलों में अदालत ने शर्त यह रखी कि राज्य चाहें तो ५० फीसदी से अधिक जतिगत आरक्षण बढ़ा सकते हैं जिसे उचित ठहराने लिए उन्हें वैज्ञानिक आंकड़े प्रस्तुत करने होंगे। ऐसे में कई राज्य तो ऐसे हैं जहां १९९२ के फैसले से पहल ` ही ५० फीसदी से अधिक जातिगत आरक्षण लागू हैं। इनमें तमिलनाडु है जहां एक कार्यकारी आदेश के जरिए १९८९ में ६९% आरक्षण लागू कर दिया गया था। वहीं कुछ राज्यों में हाल के वर्षों में इस सीमा को बढ़ाया गया है जिन्हे अदालती चुनौती का सामना करना पड़ा है। हरियाणा, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, झारखंड, महाराष्ट्र, राजस्थान जैसे कई राज्यों ने ५०% आरक्षण की सीमा से अधिक वाल ` कानून पारित किए हैं और वे निर्णय भी न्यायाल यों में चुनौती के अधीन हैं। इसके अलावा केंद्र सरकार ने २०१९ में आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को १०% आरक्षण देने के लिए १०३वां संविधान संशोधन किया। इसके तहत अनुच्छेद १५ में एक नए खंड को शामिल किया गया। जब केंद्र के फैसल ` को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती मिली, तो उसने दलील दी कि अनुच्छेद १५ में नया खंड जोड़ने से ५०% की अधिकतम सीमा लागू करने का सवाल कभी नहीं उठ सकता है जो राज्य को ईडब्ल्यूएस की बेहतरी और विकास के लिए विशेष प्रावधान बनाने का अधिकार देता है।

महाराष्ट्र में मराठा आंदोलन में सभी दल अपना फायदा देख रहे हैं, प्रदेश में स्थानीय निकाय, विधानसभा और लोकसभा चुनाव कतार में हैं, मुश्किल यह है कि राज्य में भाजपा को छोड़कर सभी राजनीतिक दल कांग्रेस, एनसीपी और शिवसेना में फूट है. ऐसे में यह आंदोलन किसे लाभ पहुंचाएगा और किसे नहीं यह कहना जल्दबाजी होगी.

प्रतिभा गनबोटे महाराष्ट्र के बारामती इलाके के क्षेत्र फाल्टन से आती हैं. सामाजिक कार्यकर्ता हैं और ओबीसी बिरादरी से हैं. आरक्षण को लेकर वे साफ कहती हैं, कि यह मुद्दा राजनीति से प्रेरित है. उनके अनुसार जो शरद पवार अभी तक मराठा आरक्षण के विरोध में थे, अचानक कैसे इसके सपोर्टर हो गए.

महाराष्ट्र में मराठा एक ताकतवर समुदाय है और कमजोर भी, लेकिन इस आंदोलन को हवा दे रहा है वही ताकतवर समुदाय. मराठाओं में पाटील, पवार आदि बहुत ताकतवर रहे हैं. आजादी के पूर्व जितने भी जमींदार थे सभी इसी पाटील समुदाय से थे. किंतु यही ताकतवर मराठा कमजोर मराठाओं को आगे कर अपनी लड़ाई लड़ रहे हैं. जीत गए तो सत्ता उनके हाथ में आएगी. तब शायद यही लोग इस आरक्षण मुद्दे को पीछे खिसका लेंगे.

प्रतिभा बताती हैं, इसीलिए बाबा साहब ने कहा था, कि आरक्षण की मियाद सिर्फ दस वर्ष रखी जाए. दस वर्ष में वह समुदाय आर्थिक और सामाजिक रूप से सक्षम हो जाएगा, अन्यथा वही परिवार बार-बार आरक्षण मांगेगा, जो पहले से ही सक्षम है. जिन ल ोगों को नौकरियों में आरक्षण मिला है, उनकी यदि निष्पक्ष जांच की जाए तो पता चलता है कि पिछल ी चार-पांच पीढ़ियों से वे कुछ लोग ही आरक्षण का लाभ उठा रहे हैं, जिनके पिता, दादा या परदादा आरक्षण के बूते आर्थिक और सामाजिक रूप से मजबूत हुए थे. ऐसी स्थिति में वे कहां जाएंगे, जो

आज तक आरक्षण का लाभ नहीं उठा पाए. यह एक तरह का नव-ब्राह्मणवाद है. यही कारण है, कि जो लोग समाज में नीचे तक जाते हैं, वे सवाल उठाने ल गे हैं कि आरक्षण का लाभ किसे मिला?

मराठा आरक्षण का मुद्दा इस बार जिस तरह से हिंसक मोड़ ले रहा है, उससे इतना तो साफ है कि इस आंदोलन के पीछे वे लोग हैं, जिनके राजनीतिक स्वार्थ इस आंदोलन से जुड़े हैं. मजे की बात है कि इस समय कांग्रेस के साथ गठबंधन में जो शरद पवार हैं, वे ताकतवर मराठा समुदाय से आते हैं और शिंदे सरकार के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे स्वयं कमजोर मराठा समाज के कुनबी समुदाय से हैं. मराठा समाज के कुनबी समुदाय को आरक्षण देने का फैसला सोमवार को महाराष्ट्र की कैबिनेट ने किया भी है. इनको आरक्षण ओबीसी कोटे में दिया जाएगा. सरकार ने यह फैसला आंदोलन के उग्र और हिंसक रूप को देखते हुए किया है. महाराष्ट्र में पूरा जन-जीवन ठप है. रोजमर्रा की चीजें मिल नी भी मुश्किल हैं. फाल्टन में रह रही रुचि भल्ला बताती हैं, लोग यहां छोटी-छोटी चीजों के लिए भी भटक रहे हैं.

हिंसा का यह आलम है कि मराठवाड़ा के दो जिलों- जालना और बीड में इंटरनेट सेवाएं दो नवंबर तक के लिए बंद कर दी गई हैं. चार ल ोगों ने आत्मदाह का प्रयास किया है. मराठवाड़ा के आंदोलनकारी सिर्फ कुनबी समुदाय को आरक्षण के दायरे में लाने से खुश नहीं हुए. वे संपूर्ण मराठा समाज को ओबीसी आरक्षण के दायरे में लाना चाहते हैं, लेकिन इसमें कई बातें आड़े आ रही हैं. संपूर्ण मराठा समाज यदि आरक्षण के दायरे में आ गया, तो ओबीसी के लिए निर्धारित सारे कोटे पर मराठा समाज का ही परचम लहराएगा. महाराष्ट्र में यूं भी मराठा समाज के ताकतवर लोग हर क्षेत्र में छाये हैं. राज्य पुनर्गठन आयोग ने १९६० में बम्बई राज्य खत्म कर महाराष्ट्र राज्य बनाया. तब से अब तक महाराष्ट्र राजनीति में मराठा ही हावी हैं. सिर्फ मनोहर जोशी और देवेंद्र फडनवीस या अंतुले ही गैर मराठा मुख्यमंत्री बने हैं.

जमीन और राजनीति मराठों के पास पर नौकरियों में गैर मराठा

फिर आखिर क्या पेच है, कि मराठा समाज अपने आरक्षण को लेकर बेचैन है? मराठा दरअसल एक योद्धा समुदाय है. शिवाजी के समय इस क्षेत्र में जब मराठा राज्य कायम हुआ, तब अधिकांश जागीरदार और जमीन का लगान वसूलने वाल ` इसी समाज से आए. आजादी के बाद महाराष्ट्र के अधिकतर किसान इसी मराठा समाज से थे.

बड़ी-बड़ी जोतें मराठाओं के पास थीं. गन्ना, कपास और तम्बाकू तथा प्याज से इस समाज के पास पैसा आया और राजनीतिक ताकत भी, लेकिन जब परिवार बढ़े और बंटे तब पता चला कि जमीन का रकबा तो घटता ही गया, इसलिए मराठा समाज के युवकों को नौकरी तलाशनी पड़ी. किंतु राज्य में नौकरियां या तो ब्राह्मणों के पास थीं अथवा सीकेपी (चंद्रसेनी कायस्थ प्रभु) के पास. ऐसे में मराठाओं को नौकरियों के लिए आंदोलन करने पड़े.

फड़नवीस के समय तेज हुआ आंदोलन

मराठा आरक्षण की छिटपुट मांग तो कोई ४० वर्ष पुरानी है, लेकिन मांग को तीव्रता मिली २०१६ में. तब महाराष्ट्र में देवेंद्र फड़नवीस सरकार थी. मराठा समाज के ताकतवर लोग समझ गए, कि अब किसानी के बूते मराठा समाज अपना राजनीतिक वर्चस्व कायम नहीं रख पाएगा. उस समय दो वर्ष ल गातार आंदोलन हुए तब राज्य सरकार ने मराठाओं के लिए १६ प्रतिशत आरक्षण देने का फैसला किया. किंतु इस आदेश से सुप्रीम कोर्ट द्वारा निर्धारित आरक्षण की सीमा का उल्लंघन हुआ. सुप्रीम कोर्ट की पांच सदस्यीय पीठ ने मई २०२१ में राज्य सरकार का यह आदेश रद्द कर दिया. तब आरक्षण समर्थक नेताओं ने कहा कि उसके समाज को कुनबी जाति का प्रमाणपत्र दे दिया जाए. यह जाति पहल ` से आरक्षण के दायरे में है. किंतु अब आरक्षण आंदोलन के नेता मनोज जरांगे पाटील कह रहे हैं,

कि पूरे मराठा समुदाय को कुनबी जाति का प्रमाण पत्र दिया जाए.

कुनबी को बचाए या मराठों को

राज्य सरकार के लिए यह मुश्किल है, कि वह पूरे मराठा समाज को कुनबी जाति का प्रमाण पत्र जारी कर दे. इससे महाराष्ट्र का कुनबी समाज भी नाराज हो जाएगा. सच यह भी है कि पाटील, पवार, देशमुख, चव्हाण, भोंसले आदि मराठा संपन्न हैं और ताकतवर भी. खुद प्रतिभा गनबोटे ने बताया कि फाल्टन पहले जिस रजवाड़े में था, वे नाइक निम्बालकर लोग भी मराठा हैं. वे सदैव सत्ता के साथ रहते हैं, सो आजकल वे भाजपा के साथ हैं. महाराष्ट्र विधानसभा के अध्यक्ष राहुल राजे नार्वेकर इसी राज परिवार से हैं. वे भी मराठा आंदोलन को अप्रत्यक्ष रूप से सपोर्ट कर रहे हैं. शिवाजी के मौजूदा वंशज भोंसले परिवार तो खुल्लमखुल्ला मराठा आंदोलन को हवा दे रहे हैं. लेकिन सभी लोग एक गलतफहमी में हैं. और वह यह है कि आंदोल न जितना तीव्र होगा सत्तारूढ़ भाजपा इसे ओबीसी बनाम मराठा बनाने की कोशिश करेगी.

महाराष्ट्र सरकार ने उनकी मांग पूरी नहीं की तो वह शाम से पानी पीना बंद कर देंगे। ताजा अल्टीमेटम जारांगे के पहले के विरोध प्रदर्शनों और पिछले कुछ महीनों में भूख हड़ताल के बाद आया है, जिसने राजनीतिक रूप से प्रभावशाली मराठा समुदाय के लिए आरक्षण की मांग को तेज करने का काम किया है, जिसमें महाराष्ट्र की लगभग ३० प्रतिशत आबादी शामिल है। मैट्रिक तक पढ़ाई करने वाले किसान जारांगे लगभग १५ वर्षों से मराठा आरक्षण आंदोलन का हिस्सा रहे हैं। वह मूल रूप से महाराष्ट्र के बीड जिले के मटोरी गांव के रहने वाले हैं, लेकिन जालना जिले के अंबाद में बस गए हैं, जहां से वह आंदोलन का नेतृत्व कर रहे हैं। मराठा आरक्षण आंदोलन में वर्षों से एक मजबूत चेहरे का अभाव था, एक शून्य जिसे जारांगे ने भर दिया है।

चार बच्चों के पिता जरांगे वर्तमान में किसी भी राजनीतिक दल से जुड़े नहीं हैं और यह दोहराने में सावधानी बरत रहे हैं कि उनका आंदोलन अराजनीतिक है। लेकिन वह २००४ तक कांग्रेस के जिला युवा अध्यक्ष थे। बाद में, जारांगे ने शिवबा संगठन की स्थापना की। उन्होंने २०११ से पिछले १२ वर्षों में ३५ बार विरोध प्रदर्शन किया है। जारांगे ने विरोध प्रदर्शन के वित्तपोषण के लिए लगभग दो एकड़ की अपनी जमीन बेच दी। वह आरक्षण की मांग को लेकर आत्महत्या करने वाले मराठा युवाओं के परिजनों के लिए ५० लाख रुपये की वित्तीय सहायता और सरकारी नौकरी की मांग कर रहे हैं। वह २५ अक्टूबर से जालना के अंतरवाली सरती गांव में अनशन पर हैं। अस्पताल में भर्ती होने से पहले सितंबर में १६ दिन का उपवास रखने के बाद यह उनका दूसरा भूख विरोध प्रदर्शन है।

पूरी दुनिया है चुप सिर्फ भारत देश ने धिक्कारा...

'वन बेल्ट वन रूट' प्रोजेक्ट पर विभिन्न देशों में संकट के बादल

अमेरिका की टक्कर में खुद को खड़ा करने की कोशिश में चीन ने बेल्ट एंड रोड इनिसिएटिव यानी बीआरआई के जरिए दुनिया के कई देशों में करोड़ों डॉलर के प्रोजेक्ट शुरू किए थे। बीआरआई प्रोजेक्ट के दस साल पूरे हो गए हैं। अफ्रीका से एशिया तक फैले और अरबों डॉलर के निवेश को देखते हुए, पिछले कुछ वर्षों में इसकी आलोचना भी हुई है। बीआरआई की १०वीं वर्षगांठ पर बीजिंग में हो रहे सम्मेलन में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और हंगरी के प्रधानमंत्री विक्टर ओर्बन पहुंचे हैं। अफगानिस्तान की तालिबान सरकार भी इसमें शामिल होगी। इस प्रोजेक्ट को लेकर चीन ने बड़े बड़े दावे किए थे। लेकिन इस परियोजना पर जिस तरह से चीन ने पैसा बहाया है, उसे वैसा फायदा हुआ नहीं है।

एससीओ शिखर सम्मेलन के दौरान बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) परियोजना का भारत ने विरोध जताया है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस महत्वाकांक्षी परियोजना को लेकर बीजिंग पर निशाना साधते हुए कहा कि संपर्क परियोजनाएं महत्वपूर्ण हैं, लेकिन अन्य देशों की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान करना भी जरूरी है. शिखर सम्मेलन में पीएम मोदी ने कहा, 'किसी भी क्षेत्र की प्रगति के लिए मजबूत संपर्क महत्वपूर्ण है. बेहतर कनेक्टिविटी न केवल आपसी व्यापार को बढ़ाती है, बल्कि आपसी विश्वास को भी बढ़ावा देती है. हालांकि, इन प्रयासों में एससीओ चार्टर के बुनियादी सिद्धांतों को बनाए रखना जरूरी है, विशेष रूप से सदस्य देशों की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान करना जरूरी है'.

चीन, भारत, रूस, पाकिस्तान, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान और उज्बेकिस्तान और अब ईरान यानी सभी एससीओ सदस्य देश वर्चुअल शिखर सम्मेलन के अंत में बीआरआई के पक्ष में दिखे, लेकिन भारत ने इससे इंकार कर दिया. दरअसल पीएम मोदी ने भारत ने बीआरआई का समर्थन करने वाले न्यू दिल्ली डिक्लेरेशन के पैराग्राफ पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया. ये चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग की पसंदीदा परियोजना है. २०२३ की न्यू दिल्ली डिक्लेरेशन के बीआरआई पैराग्राफ में कहा गया है, 'चीन की 'बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव' (बीआरआई) पहल के लिए अपने समर्थन की पुष्टि करता है. इसके तहत कजाकिस्तान गणराज्य, किर्गिज गणराज्य,पाकिस्तान, रूसी संघ, ताजिकिस्तान गणराज्य और उजबेकिस्तान गणराज्य इस परियोजना को संयुक्त रूप से लागू करने के लिए चल रहे काम पर ध्यान देते हैं. इसमें यूरेशियन इकोनॉमिक यूनियन और बीआरआई के निर्माण को जोड़ने के प्रयास शामिल हैं.

लेकिन बीआरआई परियोजना के बारे में ऐसा क्या है जो भारत को परेशान करता है? भारत इस पहल का विरोध क्यों कर रहा है, जबकि शी जिनपिंग इस बुनियादी ढांचा परियोजना को क्षेत्रीय सहयोग और व्यापार और निवेश में सुविधा बता रहे हैं. पहले

समझते हैं कि बीआरआई क्या है.

बीआरआई क्या है?

बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव को न्यू सिल्क रोड भी कहा जाता है. इसकी शुरुआत २०१३ में चीन के शी जिनपिंग ने की थी. यह प्रोजेक्ट बुनियादी ढांचे के जरिए पूर्वी एशिया और यूरोप को जोड़ने के लिए तैयार की गई एक पहल है. ये परियोजना अफ्रीका, ओशिनिया और लैटिन अमेरिका में शुरू हुई है, इससे चीन के आर्थिक और राजनीतिक प्रभाव में काफी विस्तार हुआ है. पहले इसे 'वन बेल्ट, वन रोड' पहल भी कहा जाता था, लेकिन अब इसे बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव का नाम मिला है. यूरोपीय बैंक के अनुसार, बीआरआई में भूमि मार्ग और समुद्री मार्ग शामिल है. भूमि मार्ग चीन को दक्षिण पूर्व एशिया, दक्षिण एशिया, मध्य एशिया, रूस और यूरोप से जोड़ता है और बाद में चीन के तटीय क्षेत्रों को दक्षिण पूर्व और दक्षिण एशिया, दक्षिण प्रशांत, पश्चिम एशिया, पूर्वी अफ्रीका और यूरोप से जोड़ता है.

इस मेगा परियोजना की लागत कितनी है?

द गार्जियन में छपी २०१८ की एक रिपोर्ट में इस परियोजना की लागत १ ट्रिलियन से ज्यादा आंकी गई

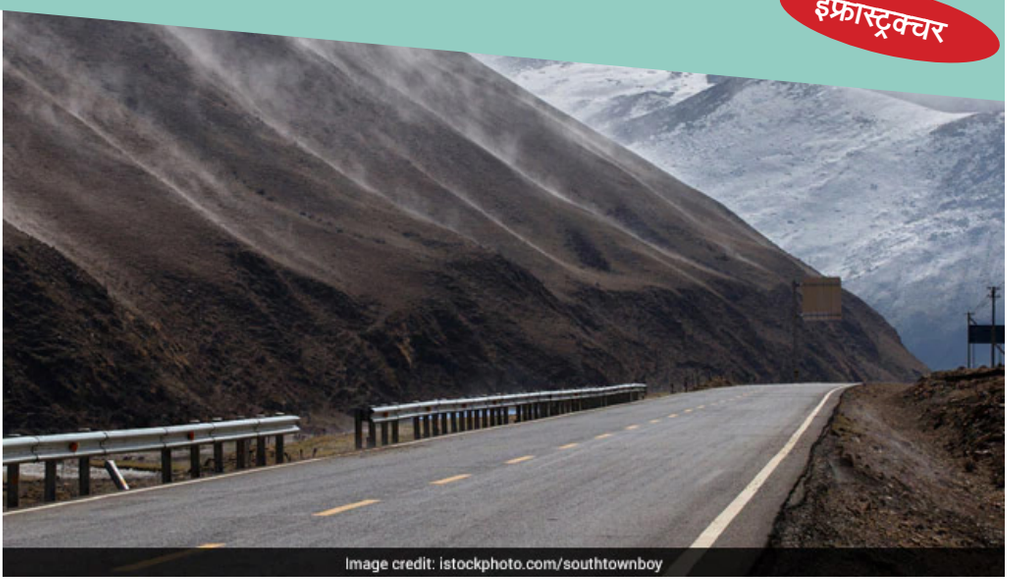

Image credit: istockphoto.com/southtownboy

थी, हालांकि अलग-अलग अनुमान हैं कि आज तक कितना पैसा खर्च किया गया है. एक विश्लेषण से पता चला है कि चीन ने इस पहल के लिए २१० अरब डॉल र से ज्यादा का निवेश किया है, जो एशिया में किसी भी परियोजना में निवेश की गई योजना में सबसे ज्यादा है. बेल्ट एंड रोड का मतलब यह भी है कि चीनी कंपनियां दुनिया भर में निर्माण कार्य में लगी हुई हैं. यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि बीआरआई शी जिनपिंग की पसंदीदा परियोजना है और इसे एशियाई राष्ट्र में अत्यधिक महत्वपूर्ण माना जा रहा है. अभी तक चीनी अधिकारियों ने ये भी नहीं बताया है कि को भी इस परियोजना में क्या शामिल है. जो कई तरह के संदेह पैदा करता है.

भारत बीआरआई का प्रतिरोधी क्यों है?

जब से यह परियोजना शुरू हुई है और देशों ने इसके लिए हस्ताक्षर करना शुरू किया है, भारत ने नियमित रूप से इसका विरोध किया है. विदेश मंत्री एस जयशंकर ने भी बुनियादी ढांचा परियोजना पर चिंता व्यक्त की है. बीआरआई को लेकर भारत की सबसे बड़ी चिंता ये है कि इसकी एक महत्वपूर्ण शाखा, चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (सीपीईसी) से शुरू होती है. ये गलियारा चीन के शिनजियांग उइघुर स्वायत्त क्षेत्र में काशगर से पाकिस्तान के दक्षिण-पश्चिम बलूचिस्तान में ग्वादर बंदरगाह तक जाती है. उसके बाद ये गिलगित बाल्टिस्तान में पाकिस्तान के कब्जे वाले भारतीय क्षेत्र में प्रवेश करता है. इसके अलावा निवेश परियोजना में पाकिस्तान के राष्ट्रीय राजमार्ग ३५ काराकोरम राजमार्ग का नवीनीकरण भी शामिल है. इसे चीन-पाकिस्तान मैत्री राजमार्ग भी कहा जाता है. इस परियोजना में नियंत्रण रेखा (एल ओसी) के उत्तर में गिलगित को स्कर्दू से जोड़ने वाले राजमार्ग का नवीनीकरण भी शामिल है.

भारत का दृढ़ मत है कि यह परियोजना संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय कानूनों का उल्लंघन करती है. भारत इस बात को लेकर भी चिंतित है कि यह परियोजना क्षेत्र में चीन की रणनीतिक उपस्थिति को बढ़ाती है. उसे यह भी डर है कि इस तरह की पहल से देश बीजिंग के कर्जदार हो जाएंगे.

अक्टूबर २०२१ में चीन में भारतीय दूतावास में द्वितीय सचिव प्रियंका सोहोनी ने कहा था, 'जहां तक चीन के बीआरआई का सवाल है, हम इससे विशिष्ट रूप से प्रभावित हैं. तथाकथित चीन पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (सीपीईसी) को एक प्रमुख परियोजना के रूप में शामिल करना भारत की संप्रभुता का उल्लंघन है.

पिछले साल विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने कहा था, 'हमने सीपीईसी परियोजनाओं में तीसरे देशों की प्रस्तावित भागीदारी को प्रोत्साहित करने पर रिपोर्ट देखी है. किसी भी पार्टी द्वारा इस तरह की कोई भी कार्रवाई सीधे तौर पर भारत की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का उल्लंघन करती है.

नवंबर २०२२ में विदेश मंत्री एस जयशंकर ने चीन के तत्कालीन प्रधानमंत्री ली क्विंग की मेजबानी में एससीओ की डिजिटल बैठक में परियोजना पर भारत की असहमति जताई थी. उन्होंने तब कहा था, 'कनेक्टिविटी परियोजनाओं को सदस्य राज्यों की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान करना चाहिए और अंतर्राष्ट्रीय कानून का सम्मान करना चाहिए'.

अपारदर्शी वित्तपोषण शैली बनी कर्ज की वजह

चीन ने २०१३ में जिस 'वन बेल्ट वन रोड' (ONE BELT ONE ROAD) परियोजना की शुरुआत की थी, अब वह कठघरे में खड़ी हो रही है. चीन ने OBOR को एशिया, यूरोप और अफ्रीका से जोड़ने वाली परियोजना के रूप में प्रचारित किया. तीन खरब अमरीकी डॉलर इस पर झोंक दिए. वह सेंट्रल एशिया, दक्षिणी-पूर्वी एशिया और मध्य-पूर्व में अपना दबदबा बढ़ाना चाहता है. चीन दुनिया का बड़ा मैन्युफैक्चरिंग हब है और उसे अपने उत्पाद बेचने के लिए बड़े बाजार की तलाश है. लेकिन, जिस आधार पर OBOR का विरोध शुरू हुआ है, उसका आधार कुछ और ही है. चीन ने अपने पड़ोसी देशों से आधारभूत ढांचा खड़ा करने के नाम पर समझौता किया, लेकिन उसने इसके एवज में इतना महंगा कर्ज उन देशों पर थोप दिया कि OBOR उन्हें बोझ लगने लगी.

जब ये देश क़र्ज़ चुकाने में नाकाम हो गए तो उनके प्राकृतिक संसाधनों का ज़बरदस्त दोहन किया. एशिया का एक छोटा सा देश लाओस जिसकी अर्थव्यवस्था ९००० करोड़ रुपये के आसपास है. चीन ने यहां पर रेलवे और हाईवे के निर्माण के लिए ५००० करोड़ का निवेश किया है. इसी के साथ अब इस देश की कुल अर्थव्यवस्था के ५२ फीसदी हिस्से पर चीन का कब्ज़ा हो चुका है.

चीन, पाकिस्तान, अमेरिका, अर्थव्यवस्था, भारत

शी जिनपिंग की सबसे महत्वाकांक्षी परियोजना एशिया, अफ्रीका और यूरोप को जोड़ने के मकसद से शुरू हुई थी. हाल के दिनों में चीन की इस असलियत का खुलासा दुनिया के कई 'थिंक टैंक' ने किया है और इसी का नतीजा है कि कई देशों ने राष्ट्रपति शी जिनपिंग के इस महत्वाकांक्षी इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट को रद्द कर दिया है. मलेशिया ने चीन समर्थित चार परियोजनाओं को रद्द कर दिया. ये चारों परियोजनाएं २३ अरब डॉलर की थीं. महातिर मोहम्मद को चीन विरोधी कहा जाता है. जानकार चीन के इन प्रोजेक्टों के रद्द होने के पीछे मलेशिया में सत्ता परिवर्तन बता रहे हैं. चीन के बैंकों के उच्च दर वाला ब्याज वहां की सरकार को रास नहीं आ रहा है और उन्हें अपनी अर्थव्यवस्था के लिए खतरा महसूस हो रहा है.

चीनी कर्ज़ का डर म्यांमार को भी सता रहा है. हाल ही में म्यांमार के वित्तमंत्री ने चीनी परियोजनाओं के आकार को बहुत हद तक सीमित करने का फैसला लिया है. उन्होंने कहा कि पड़ोसी देशों से उन्हें सबक मिला है कि ज़्यादा कर्ज़ कई बार अच्छा नहीं होता है. म्यांमार के क्याऊकप्यु में चीन विशेष आर्थिक क्षेत्र बनाने वाला है. यह हिन्द महासागर में है और १० अरब डॉलर का प्रोजेक्ट है. यह प्रोजेक्ट चीन के वन बेल्ट वन रोड का हिस्सा है. थाईलैंड ३००० करोड़ के प्रोजेक्ट को स्थगित कर चुका है. रेलवे और हाईवे की योजनाओं में निवेश के रास्ते चीनी क़र्ज़ इस छोटे से देश में गहरी पैठ बना चुका था.

थाईलैंड की सबसे बड़ी दिक्कत चीनी क़र्ज़ की अपारदर्शी शर्तें थीं, जिसका डर उसे लगातार सता रहा था. एक और एशियाई देश उज़्बेकिस्तान ने चीनी क़र्ज़ को अपनी अर्थव्यवस्था के लिए चुनौती बता डाला. दरअसल इस देश के ऊपर कुल विदेशी क़र्ज़ का ७४% हिस्सा चीन का है जो इनकी परेशानियों को बढ़ाने के लिए काफी था. पाइपलाइन और रेलवे प्रोजेक्ट को स्थगित करने में उज़्बेकिस्तान ने ज़रा भी देर नहीं लगायी और साथ में चीनी सरकार को एक कड़ा सन्देश भी दिया.

हाल के दिनों में पाकिस्तान और चीन का लव अफेयर पूरी दुनिया में चर्चा का विषय बना हुआ है. चीन-पाकिस्तान इकोनॉमिक कॉरिडोर के तहत चीन ५५ अरब डॉलर का निवेश करने वाला है जिसमें ग्वादर पोर्ट को भी विकसित किया जाना है. चीन का इसके राजस्व पर ९१ फ़ीसदी अधिकार होगा और ग्वादर अथॉरिटी पोर्ट को महज ९ फ़ीसदी मिलेगा. ज़ाहिर है अप्रत्यक्ष रूप से पाकिस्तान के पास ४० सालों तक ग्वादर पर नियंत्रण नहीं रहेगा. पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था पिछले कई वर्षों से अमेरिकी राहत पैकेज पर टिकी हुई थी, लेकिन हाल के वर्षों में

पड़ोसी श्रीलंका में चीन प्रायोजित बुनियादी ढांचे का विकास किया. बुनियादी ढांचा परियोजनाओं ने श्रीलंका को चीन के लगभग ८ बिलियन डॉलर के कर्ज से दबा दिया. श्रीलंका अपने बकाये का भुगतान नहीं कर सकता, इसलिए उसने हंबनटोटा बंदरगाह परियोजना के लिए ऋण-फॉर-इक्विटी स्वैप पर बातचीत की है. श्रीलंका का हम्बनटोटा बंदरगाह चीनी क़र्ज़ की भेट चढ़ चुका है। चीन के ६००० करोड़ रुपये की भारी भरकम क़र्ज़ को न चुका पाने की स्थिति में श्रीलंका को ये बंदरगाह ९९ साल की लीज़ पर चीन को सौपना पड़ा और औ इसके साथ-साथ इस क्षेत्र की १५००० एकड़ ज़मीन भी चीन को देना पड़ा जिसका इस्तेमाल आर्थिक गलियारे को विकसित करने के लिए किया जायेगा। दरअसल चीन की नज़र हमेशा से ही इस बंदरगाह पर थी क्योंकि ये पूरा क्षेत्र सामरिक लिहाज से बहुत ही महत्वपूर्ण है। दक्षिण एशिया में भारत को घेरने के किये चीन इसका इस्तेमाल कर सकता है।

अमेरिका की सख्ती ने चीन को उसके करीब लाने का काम किया है. लेकिन जानकार इस डील को चीन के पक्ष में एकतरफा जाते हुए देख रहे हैं.

दरअसल चीन का मुख्य मकसद बलूचिस्तान के प्राकृतिक संसाधनों का दोहन और भारत की दक्षिण एशिया में घेरेबंदी है. ब्लूमबर्ग की एक रिपोर्ट के मुताबिक चीन की सरकार कैश रिज़र्व के मामले में आज पूरी दुनिया में सबसे ऊपर है. जिसके पास लगभग ८०० लाख करोड़ की नगद राशि है. चीन ने लगातार चार दशकों तक १० % से ज्यादा की रफ़्तार से विकास करने के बाद इस मुकाम को हासिल किया है. चीन की अर्थव्यवस्था आज पूरे विश्व में दूसरे स्थान पर है और इसने चीनी अर्थव्यवस्था की महत्वाकांक्षाओं को कई गुना बढ़ा दिया है.

अमेरिकी बादशाहत को चुनौती देना अब चीन की फितरत बन चुका है. चीन ने पूरी दुनिया में आधुनिक साम्राज्यवाद की एक नयी तस्वीर पेश की है जिसका शिकार एशिया और अफ्रीका के छोटे देश बन रहे हैं. चीनी महत्वाकांक्षा को देखते हुए उसे आधुनिक युग का ब्रिटेन कहने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए. OBOR को लेकर भारत पहले ही ऐतराज जता चुका है. शुरुआत चीन और पाकिस्तान के बीच बन रहे चीन-पाकिस्तान इकोनॉमिक कॉरिडोर (CPEC) को लेकर हुई. यह सड़क पाक-अधिकृत कश्मीर से होकर बनाई जा रही है. भारत इसे विवादित क्षेत्र मानता है, और यहां सड़क बनाए जाने का विरोध कर रहा है. भारत की आपत्तियों को चीन नजरअंदाज करता आया है.हाल के दिनों में जिस तरह से कई देशों ने चीन के OBOR प्रोजेक्ट को रद्द किया है उसने चीनी महत्वाकांक्षाओं के ऊपर एक गहरा प्रश्न चिन्ह लगाया है. अगर चीन और उसके क़र्ज़ की हक़ीक़त इसी तरह दुनिया के सामने आती रही तो 'वन बेल्ट वन रोड' के तहत आने वाले प्रोजेक्ट और उनके उद्देश्यों का हिन्द महासागर में डूबना तय है.

सिर्फ श्रीलंका ही नहीं चीन ने १४७ से ज्यादा देशों के साथ अपने वित्तीय और राजनीतिक प्रभाव का फायदा उठाने की पहल में लगभग एक ट्रिलियन डॉलर का निवेश किया है. कम आय वाले देशों की आर्थिक स्थिति गंभीर है और इस परियोजना के बाद बदतर होने के कगार पर है. डेटा चिंताजनक है कम आय वाले देशों पर २०२२ में चीन के ऋण का ३७% बकाया है, जबकि बाकी दुनिया के लिए यही ऋण २४% है. इस परीयोजना में शामिल ४२ देशों पर चीन का कर्जा हो चुका है. एडडेटा और बीआरआई के आंकड़ों के अनुसार, सड़क-रेल-बंदरगाह-भूमि बुनियादी ढांचे के वित्तपोषण के लिए चीनी वैश्विक परियोजनाएं इसमें शामिल सभी देशों के लिए ऋण का एक प्रमुख स्रोत रही हैं. इसमें पाकिस्तान ७७.३ अरब डॉलर के ऋण के साथ सबसे आगे है. इसके बाद अंगोला (३६.३ अरब डॉलर), इथियोपिया (७.९ अरब डॉलर), केन्या (७.४ अरब डॉलर) और श्रीलंका (७ अरब डॉलर) का कर्जदार है.

IMAGE CREDIT: gwadarport.gov.pk

पश्चिमी एशिया और अफ्रीका के बाजारों में अपनी पैठ बढ़ाने के लिए हाल ही में १३ नवंबर को चीनी माल की पहली खेप ग्वादर बंदरगाह पहुंची है। पाकिस्तान का ग्वादर पोर्ट चीन के लिए खास महत्व रखता है।

अपने लाभ को देखते हुए चीन ने इस बंदरगाह को विकसित करने में पाकिस्तान के मदद की है। इसके अलावा चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा परियोजना भी विकसित की जा रही है, जिससे ग्वादर पोर्ट का महत्व चीन और पाकिस्तान के लिए और ज्यादा बढ़ जाएगा। गौरतलब है कि पश्चिम एशिया, यूरोप, फारस की खाड़ी में बाजार पर पकड़ बनाने के लिए चीन ग्वादर पोर्ट के अलावा चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (सीपीईसी) भी विकसित कर रहा है, जो करीब ३२१८ किमी लंबा है। इस कॉरिडोर में रेल लाइन, सड़क संपर्क व पाइपलाइन तीनों शामिल है। जिससे ग्वादर पोर्ट तक चीन माल तेजी से पहुंच सकता है।

मालदीव के वित्त मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, २०२२ की पहली तिमाही के अंत तक मालदीव का कर्ज बढ़कर ६.३९ अरब डॉलर हो गया. यह माल दीव के सकल घरेलू उत्पाद का ११३% है. कर्ज की वजह चीन की परियोजना है. चीन ने मालदीव में सिनामाले पुल और एक नए हवाई अड्डे जैसी बुनियादी परियोजनाओं को वित्त पोषित किया गया था.

बांग्लादेश पर बीजिंग के कुल विदेशी ऋण का ६% बकाया है, यानी लगभग ४ बिलियन डॉलर का कर्जा है. ढाका अब आईएमएफ से ४.५ अरब डॉलर के पैकेज की मांग कर रहा है. जिबूती और अंगोला पर पर भी बड़ा बोझ है क्योंकि ऋण सकल राष्ट्रीय आय (जीएनआई) के ४०% से ज्यादा है. लाओस और माल दीव दोनों पर जीएनआई (Gross National Income) का ३०% ऋण बोझ है . अफ्रीका पर बीजिंग का १५० बिलियन डॉलर से ज्यादा का बकाया है. जाम्बिया भी चीनी बैंकों के लगभग ६ बिलियन डॉलर के साथ ऋण चुका रहा है.

१. पाकिस्तान, श्रीलंका और बांग्लादेश आईएमएफ से राहत की मांग कर रहे हैं. चीन की बेल्ट एंड रोड परियोजना में अपारदर्शी वित्तपोषण शैली अपनाई गई है. इस वजह से कम से कम १० कम आय वाले देशों में ऋण ज्यादा हो गया है.

२. बता दें कि पिछली श्रीलंकाई सरकार चीन की तरफ ज्यादा झुकी हुई थी, वो भारत के खिलाफ थी. श्रीलंका में सरकार बदली जो भारत को लेकर थोड़ा नर्म है, अब बीजिंग ने आईएमएफ और पेरिस क्लब दोनों हवाला देकर ऋण चुकौती पर १० साल की रोक पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया है.

३. चीनी एक्जिम बैंक केवल दो साल की मोहलत की पेशकश कर रहा है, इसका प्रतिरोध श्रीलंका में हो रहा है.

४. पाकिस्तान के साथ भी ऐसा ही है. अधिकांश बीआरआई अनुबंधों को जनता से गुप्त रखा गया है. ताकि चीनी बैंकों से बिजली-सड़क-बंदरगाह बुनियादी ढांचे के वित्तपोषण में उच्च ब्याज दरों का खुलासा न हो.

'वन बेल्ट वन रोड' प्रोजेक्ट के मुख्य कॉरिडोर

इस प्रोजेक्ट के तहत चीन का सात गलियारे बनाए जाने की योजना है। इसमें पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) से गुजरने वाला चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा भी शामिल है, जिसका भारत कड़ा विरोध करता आ रहा है।

१. चीन-मंगोलिया-रूस

जून २०१६ में इस प्रोजेक्ट पर चीन, मंगोलिया और रूस ने हस्ताक्षर किये। जिनइंग से शुरू होने वाला यह हाइवे मध्य पूर्वी मंगोलिया को पार करता हुआ मध्य रूस तक पहुंचेगा।

२. न्यू यूरेशियन लैंड ब्रिज

इस योजना के तहत चीन यूरोप से रेल के जरिये जुड़ चुका है, लेकिन सड़क मार्ग की संभावनाएं भी बेहतर की जाएंगी। १०,००० किलोमीटर से लंबा रास्ता कजाखस्तान और रूस से होता हुआ यूरोप तक पहुंचेगा।

३. चाइना-पाकिस्तान कॉरिडोर

५६ अरब डॉलर से अधिक वाला यह प्रोजेक्ट चीन के पश्चिमी शिनजियांग प्रांत को पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर और पाकिस्तान के ग्वादर पोर्ट से जोड़ेगा। इस परियोजना पर काम भी शुरू हो गया है।

४. चाइना-सेंट्रल एंड वेस्ट एशिया कॉरिडोर

सदियों पुराने असली सिल्क रूट वाले इस रास्ते को अब रेल और सड़क मार्ग में तब्दील करने की योजना है। कॉरिडोर कजाखस्तान, किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान और तुर्कमेनिस्तान, ईरान, सऊदी अरब और तुर्की को जोड़ेगा।

५. दक्षिण पूर्वी एशियाई कॉरिडोर

इस कॉरिडोर के तहत चीन की परियोजना म्यांमार, वियतनाम, लाओस, थाइलैंड से गुजरती हुई इंडोनेशिया तक पहुंचेगी।

६. चाइना-बांग्लादेश-इंडिया-म्यांमार कॉरिडोर

इस परियोजना के तहत इन देशों को सड़क के जरिये जोड़ा जाना था, लेकिन भारत की उचित आपत्तियों को चलते यह परियोजना ठंडे बस्ते में जा चुकी है। अब चीन बांग्लादेश और म्यांमार को इस कॉरिडोर द्वारा जोड़ेगा।

७. चाइना-नेपाल-इंडिया कॉरिडोर

म्यांमार के अलावा चीन नेपाल के रास्ते भी भारत से संपर्क जोड़ना चाहता है। इसी को ध्यान में रखते हुए चीन ने नेपाल को भी वन बेल्ट वन रोड प्रोजेक्ट में शामिल किया है।

खरबों डॉलर के बेल्ट एंड रोड प्रोजेक्ट के १० साल.

बुनियादी ढांचे का निर्माण कभी भी जोखिम मुक्त नहीं होता है। हजारों बुनियादी ढांचा परियोजनाओं वाले बीआरआई जैसी किसी भी बड़ी पहल में कई विफलताओं के साथ-साथ सफलता की कहानियां भी होंगी। भारत ऋण जाल, पारदर्शिता की कमी और बीआरआई परियोजनाओं की स्थिरता से संबंधित मुद्दों को इंगित करने वाला पहला देश था। बाद में अमेरिका और यूरोपीय संघ ने भी इसी तरह की चिंता जताई। लेकिन ग्लोबल साउथ में बुनियादी ढांचे की भारी कमी बनी हुई है। इसलिए आलोचना के बावजूद, बीआरआई अभी भी एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के कई विकासशील देशों के लिए एक आकर्षक प्रस्ताव है। मजबूत चीनी रणनीतिक वित्तीय सहायता ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज आर्थिक स्थितियाँ एक दशक पहले की तुलना में कहीं अधिक कठिन हैं। चीनियों को कुछ कमज़ोरियों का एहसास हुआ है। उन्होंने पहले ही खुले, हरित और स्वच्छ गलियारों और इन परियोजनाओं को सतत विकास लक्ष्यों के साथ जोड़ने की बात शुरू कर दी है। लेकिन अगर वे इन नियमों का पालन करते हैं, तो कुछ परियोजनाओं के लिए वित्तपोषण संभव नहीं हो सकता है। बाद में अमेरिका और यूरोपीय संघ ने भी इसी तरह की चिंता जताई। लेकिन ग्लोबल साउथ में बुनियादी ढांचे की भारी कमी बनी हुई है। इसलिए आलोचना के बावजूद, बीआरआई अभी भी एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के कई विकासशील देशों के लिए एक आकर्षक प्रस्ताव है। मजबूत चीनी रणनीतिक वित्तीय सहायता ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

इस महीने की शुरुआत में बीजिंग में आयोजित नवीनतम बीआरआई फोरम में, पिछली बैठकों की तुल ना में राष्ट्राध्यक्षों की कम संख्या देखी गई।

बीआरआई परियोजनाओं में सभी प्रतिभागियों ने पिछले दस वर्षों में सीखा है। भू-राजनीतिक तनाव के कारण, संयुक्त राज्य अमेरिका ने बीआरआई की अपनी आलोचना तेज कर दी है। शुरुआत में यूरोपीय नीति निर्माताओं ने बीआरआई को सकारात्मक दृष्टि से देखा। यूरोपीय संघ स्वयं दशकों से दुनिया भर में क्षेत्रीय एकीकरण पहल को बढ़ावा दे रहा है। दरअसल, ईयू और चीन ने २०१५ में एक कनेक्टिविटी प्लेटफॉर्म की स्थापना की थी। पहले दो BRI फोरम में बड़ी संख्या में यूरोपीय नेताओं ने भाग लिया था। हालाँकि, हाल ही में बीजिंग के इरादों और कई परियोजनाओं को लागू करने के तरीके के बारे में संदेह और आशंकाएँ बढ़ रही हैं। ये उभरती धारणाएँ यूरोपीय संघ द्वारा चीन के साथ अपने संबंधों के पुनर्मूल्यांकन को भी दर्शाती हैं। परियोजना के बारे में इटली की हालिया आशंकाएं और बीआरआई से उसका संभावित प्रस्थान एक प्रतीकात्मक झटका होगा क्योंकि यह एकमात्र जी७ देश था जो औपचारिक रूप से इस पहल में शामिल हुआ था।

राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने २०१३ में कजाकिस्तान की अपनी यात्रा के दौरान सिल्क रोड इकोनॉमिक 'बेल्ट' की घोषणा की थी। 'बेल्ट' योजना एशिया और यूरोप के बीच व्यापार और बुनियादी ढांचे मार्गों की एक श्रृंखला को पुनर्जीवित करने के लिए थी। मध्य एशिया के माध्यम से कनेक्टिविटी इस पहल का फोकस प्लाइंट था। इसके बाद, राष्ट्रपति शी ने रोड नामक समुद्री व्यापार बुनियादी ढांचे की घोषणा की। यह समुद्री सड़क चीन को दक्षिण पूर्व एशिया, यूरोप और अफ्रीका से जोड़ेगी। मुख्य फोकस पूरे दक्षिण पूर्व एशिया और हिंद महासागर में बंदरगाहों, पुलों, उद्योग गलियारों और अन्य बुनियादी ढांचे के निर्माण पर रहा है। कुछ समय के लिए, इन पहलों को एक साथ वन बेल्ट वन रोड इनिशिएटिव (ओबीओआर) कहा गया। २०१५ के बाद से, इसे ज्यादातर बीआरआई के रूप में संदर्भित किया गया है।

बीआरआई के ५ प्रिंसिपल

(१) पॉलिसी कॉर्डिनेशन

(२) इंफ्रास्ट्रक्चर कनेक्टिविटी

(३) ट्रेड

(४) वित्तीय एकीकरण

(५) लोगों से लोगों का कनेक्शन

बाद में इसमें 'औद्योगिक सहयोग' का छठा सिद्धांत भी जोड़ा गया। मूल रूप से बीआरआई के माध्यम से, चीन दो प्रमुख चिंताओं, अर्थात् पूंजी अधिशेष और औद्योगिक अतिक्षमता को हल करना चाहता था। यह व्यापक क्षेत्रों में चीनी राजनीतिक प्रभाव बढ़ाने के बारे में भी था। २०१३ और २०१८ के बीच विश्व बैंक ने अनुमान लगाया कि ऊर्जा परियोजनाओं सहित बीआरआई परियोजनाओं में निवेश लगभग ५७५ बिलि यन डॉलर था। इससे पहले, आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी) ने भी अनुमान लगाया था कि बीआरआई निवेश परियोजनाओं से २०१७ और २०२७ के बीच १ ट्रिलियन डॉलर की फंडिंग जुड़ने की संभावना है। चीन ने वर्ष २०१७, २०१९ और २०२३ में तीन बीआरआई मंचों की मेजबानी की है। इन समारोहों में विश्व नेताओं की महत्वपूर्ण भागीदारी हुई, जिसके परिणामस्वरूप इनमें से प्रत्येक मंच के दौरान कई समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए।

पहल की दसवीं वर्षगांठ पर चीनी सरकार ने घोषणा की कि १५० से अधिक देशों और ३० अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने बीआरआई को अपनाया है। यह भी बताया गया कि १ ट्रिलियन डॉलर मूल्य की ३,००० बीआरआई परियोजनाएं वर्तमान में दुनिया भर में चल रही हैं। मूल रूप से इस पहल में छह अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक गलियारे (ईसी) प्रस्तावित थे।

पांच दिवसीय दिवाली का पर्व

ज्ञान का प्रकाश व हर्षोंल्लस का प्रतीक है दीपावली

दिवाली, जिसे संपूर्ण विश्व में प्रकाश के त्यौहार के रूप में जाना जाता है, बुराई पर अच्छाई की, अंधकार पर प्रकाश की तथा अज्ञान पर ज्ञान की विजय का त्यौहार है। आज के दिन घरों में रोशनी न केवल सजावट के लिए होती है,किंतु यह जीवन कथा सत्य को भी अभिव्यक्त करती है। प्रकाश अंधकार को मिटा देता है, और जब ज्ञान के प्रकाश से आपके अंदर का अंधकार मिट जाता है, आप में अच्छाई बुराई पर विजय प्राप्त कर लेती हैं।

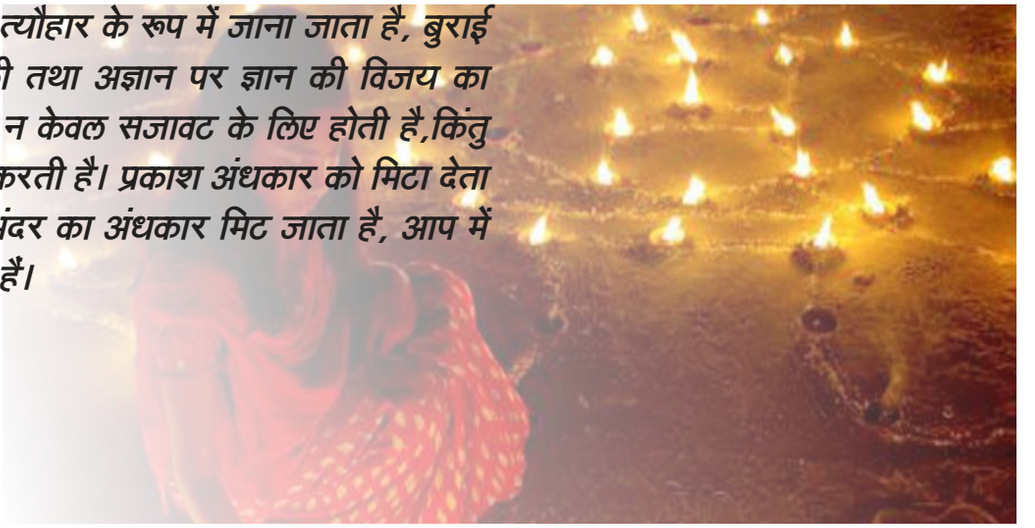

त्योहार हमारे सुख और हर्षोंल्लास के प्रतीक है जो परिस्थिति के अनुसार अपने रंग-रूप और आकार में भिन्न होते हैं। त्योहार मनाने के विधि-विधान भी भिन्न हो सकते है किंतु इनका अभिप्राय आनंद प्राप्ति या किसी विशिष्ट आस्था का संरक्षण होता है। दिवाली का पर्व गोवर्धन पूजा से शुरू होकर भाईदूज के दिन संपन्न होता है। यह पांच दिवसीय त्योहार है। जिसमेंधनतेरस, छोटी दिवाली, दिवाली, गोवर्धन पूजा और भाई दूज जैसे त्योहार मनाए जातेहैं। हिंदू पंचांग के अनुसार, हर साल का दिवाली या दीपावली कार्तिक महीने के १५वें दिन अमावस्या तिथि को मनाई जाती है। इस दिन भगवान गणेश और माता लक्ष्मी की विधिवत पूजा की जाती है। इस साल देशभर में दिवाली १२ नवंबर २०२३, रविवार को मनाई जाएगी। इस साल गणेश-लक्ष्मी पूजा मुहूर्तशाम ०६:११ बजेसेरात ०८:१५ बजे तक रहेगा। इस साल अमावस्या तिथि १२ नवंबर को दोपहर ०२ बजकर ४४ मिनट से प्रारंभ होगी और १३ नवंबर २०२३ को दोपहर ०२ बजकर ५६ मिनट पर समापन होगा।

धनतेरस, छोटी दिवाली, दिवाली, गोवर्धन पूजा व भाई दूज २०२३ की डेट इस साल धनतेरस का त्योहार १० नवंबर २०२३ को मनाया जाएगा। छोटी दिवाली ११ नवंबर २०२३ को मनाई जाएगी। इसके ठीक अगले दिन दिवाली का पर्व १२ नवंबर २०२३ को मनाया जाएगा। १३ नवंबर २०२३ को गोवर्धन पूजा मनाई जाएगी। १४ नवंबर २०२३ को भाई दूज का त्योहार मनाया जाएगा।

धनतेरस के दूसरे दिन नरक चतुर्दशी या छोटी दिवाली का पर्व मनाया जाता है। हर पर्व अश्विन या कार्तिक के अंधेरे पखवाड़े के चौदहवें दिन आती है। छोटी का अर्थ है छोटा, नरक का अर्थ है नरक और चतुर्दशी का अर्थ है चौदहवां। पौराणिक कथाओं के अनुसार, यह खुशी का दिन कृष्ण द्वारा राक्षस नरकासुर की हार से जुड़ा है, जिसने १६ हजार राजकुमारियों का अपहरण कर लिया था।

दिवाली के अगलेदिन कार्तिक शुक्ल पक्ष का पहला दिन होता है। दुनिया के कुछ हिस्सों में इसे अन्नकूट (अनाज का ढेर), पड़वा, गोवर्धन पूजा, बाली प्रतिपदा, बाली पद्यामी और कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा के रूप में भी मनाया जाता है। एक पौराणिक कथा के अनुसार, भगवान कृष्ण ने इंद्र के प्रकोप से होनेवाली लगातार बारिश और बाढ़ से खेती और गाय चराने वाले गांवों को बचाने के लिए गोवर्धन पर्वत उठाया था। इसके बाद से ही गोवर्धन पूजा की जाने लगी।

सभी त्योहारों से कोई न कोई पौराणिक कथा अवश्य जुड़ी हुई है और इन कथाओं का संबंध तर्क से न होकर अधिकतर आस्था से होता है। कार्तिक मास की अमावस्या के दिन दिवाली का त्योहार मनाया जाता है। दिवाली एक त्योहार भर न होकर, त्योहारों की एक श्रृंखला है। इस पर्व के साथ पांच पर्वों जुड़े हुए हैं। सभी पर्वों के साथ दंत-कथाएं जुड़ी हुई हैं। धनतेरस, नरक चतुर्दशी (नरक-चौदस), लक्ष्मी-पूजन, अन्नकूट-गोवर्धन पूजा और भाईदूज।

दिवाली भरत में बसे कई समुदायों में भिन्न कारणों से प्रचलित है। दीपक जलाने की प्रथा के पीछे अलग-अलग कारण या कहानियाँ हैं।

राम भक्तों के अनुसार दिवाली वाले दिन अयोध्या के राजा राम लंका के अत्याचारी राजा रावण का वध कर के अयोध्या लौटे थे। उनके लौटने कि खुशी यह पर्व मनाया जाने लगा।

एक पौराणिक कथा के अनुसार विंष्णु ने नरसिंह रुप धारणकर हिरण्यकश्यप का वध किया था तथा इसी दिन समुद्रमंथन के पश्चात देवी लक्ष्मी व भगवान धन्वंतरि प्रकट हुए।

जैन मतावलंबियों के अनुसार चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी का निर्वाण दिवस भी दीपावली को ही हुआ था। बौद्ध धर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध के अनुयायियों ने २५०० वर्ष पूर्व गौतम बुद्ध के स्वागत में लाखों दीप जला कर दीपावली मनाई थी। दीपावली मनाने के कारण कुछ भी रहे हों परंतु यह निश्चित है कि यह वस्तुतः दीपोत्सव है। सिक्खों के लिए भी दिवाली महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी दिन अमृतसर में स्वर्ण मन्दिर का शिलान्यास हुआ था और दिवाली

धनतेरस का त्योहार हर साल कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष के त्रयोदशी तिथि को मनाया जाता है। यह पर्व दिवाली के आने की पूर्वसूचना देता है। शास्त्रों के अनुसार, समुद्र मंथन के दौरान कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी के दिन भगवान धन्वंतरि अपने हाथों में अमृत कलश लेकर प्रकट हुए। माना जाता है कि संसार में चिकित्सा विज्ञान के विस्तार और प्रसार के लिए भगवान विष्णु ने ही धन्वंतरि का अवतार लिया था। भगवान धन्वंतरि के प्रकट होने के उपलक्ष्य में धनतेरस का पर्व मनाया जाता है। *धन तेरस को घर के लिए कोई वस्तु, और सोने, चांदी आदि खरीदने के लिए एक शुभ दिन माना जाता है।*

लोग इस दिन को नए व्यापार शुरू करने के लिए शुभ मानते हैं। दिवाली का शुभारंभ कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष त्रयोदशी के दिन से होता है। इसे धनतेरस कहा जाता है। इस दिन आरोग्य के देवता धन्वंतरि की आराधना की जाती है। इस दिन नए-नए बर्तन, आभूषण इत्यादि खरीदने का रिवाज है। इस दिन घी के दिये जलाकर देवी लक्ष्मी का आहवान किया जाता है।

नरक चतुर्दशी कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को कहा जाता है। नरक चतुर्दशी को 'छोटी दीपावली' भी कहते हैं। इसके अतिरिक्त इस चतुर्दशी को 'नरक चौदस', 'रूप चौदस', 'रूप चतुर्दशी', 'नर्क चतुर्दशी' या 'नरका पूजा' के नाम से भी जाना जाता है। हिन्दू मान्यताओं के अनुसार यह माना जाता है कि कार्तिक कृष्णपक्ष चतुर्दशी के दिन मृत्यु के देवता यमराज की पूजा का विधान है। दीपावली से एक दिन पहले मनाई जाने वाली नरक चतुर्दशी के दिन संध्या के पश्चात दीपक प्रज्जवलित किए जाते हैं। इस चतुर्दशी का पूजन कर अकाल मृत्यु से मुक्ति तथा स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए यमराज जी की पूजा व उपासना की जाती है। इस दिन एक पुराने दीपक में सरसों का तेल व पाँच अन्न के दाने डाल कर इसे घर की नाली ओर जलाकर रखा जाता है। यह दीपक यम दीपक कहलाता है। भगवान श्रीकृष्ण ने कार्तिक माह में कृष्ण चतुर्दशी के दिन नरकासुर का वध करके देवताओं व ऋषियों को उसके आतंक से मुक्ति दिलवाई थी। इसके साथ ही कृष्ण भगवान ने सोलह हज़ार कन्याओं को नरकासुर के बंदीगृह से मुक्त करवाया। इसी उपलक्ष्य में नगरवासियों ने नगर को दीपों से प्रकाशित किया और उत्सव मनाया। तभी से नरक चतुर्दशी का त्यौहार मनाया जाने लगा।

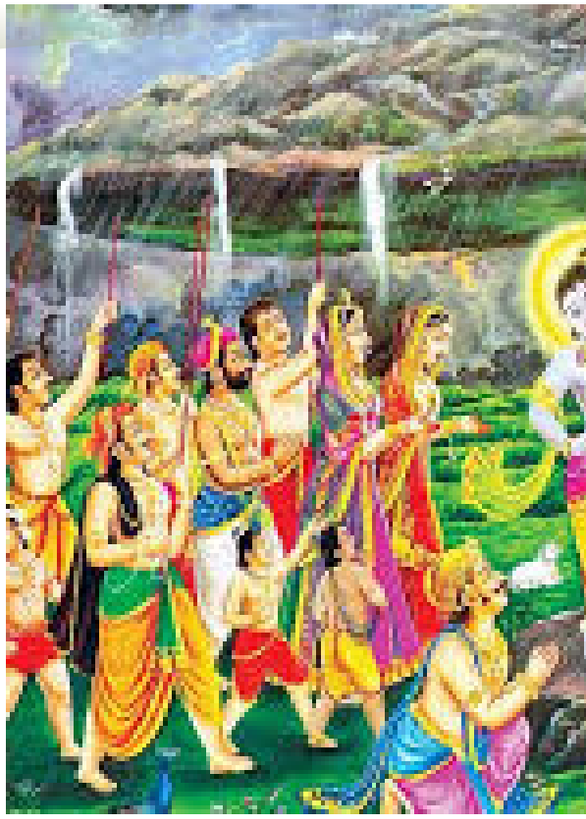

लक्ष्मी पूजा यह दिन दिवाली का महत्वपूर्ण दिन माना जाता हैं इस दिन रंगोली और दियें की रोशनी के साथ घर और मंदिर को सजाकर लोग अपने घरों और दुकानों और व्यावसायिक स्थानों पर देवी लक्ष्मी और भगवान गणेश की पूजा शाम को करते हैं। लक्ष्मी धन की देवी है और गणेश को शुभ शुरुआत के देवता के रूप में माना जाता है। लोग सड़कों, बाजारों, घरों और परिवेश में समृद्धि और कल्याण की इच्छा के लिए तेल से भरे प्रकाश की मिट्टी के साथ दिवाल ी का स्वागत करते हैं। दिवाली की रात को लोग अपने घरों के दरवाजे खुल गए क्योंकि वे देवी लक्ष्मी की यात्रा की उम्मीद करते हैं। अमावस्या को दिवाली का त्योहार पूरे भारतवर्ष के अतिरिक्त विश्वभर में बसे भारतीय हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। इस दिन देवी लक्ष्मी व गणेश की पूजा की जाती है। यह भिन्न-भिन्न स्थानों पर विभिन्न तरीकों से मनाया जाता है।

शुक्ल द्वितीया को भाई-दूज या भैयादूज का त्योहार मनाया जाता है। मान्यता है कि यदि इस दिन भाई और बहन यमुना में स्नान करें तो यमराज निकट नहीं फटकता। भाईदूज त्योहार भाई और बहन के स्नेह का प्रतीक है। बहन अपने भाई को तिलक और नारियल और मिठाई की पेशकश करती है जहां भाई अपनी बहन को उपहार देता है। दीवाली के अवसर पर हर समुदाय और उम्र के लोगों में उत्साह से भरा होता है। विभिन्न संस्कृतियों द्वारा उसी त्यौहार के उत्सव के विभिन्न तरीकों से और अधिक सुंदर बना दिया जाता है।

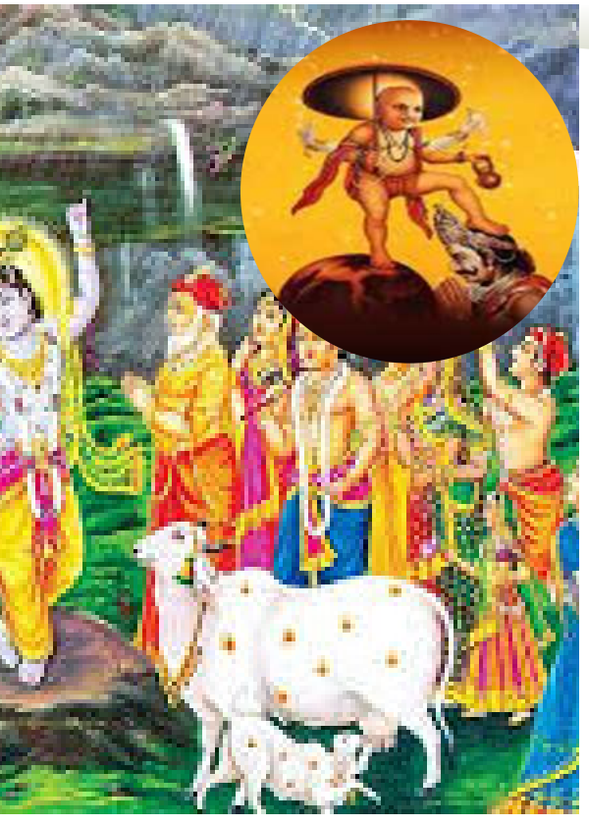

गोवर्धन पूजा और बलिप्रतिपदा - दिवाली के पश्चात अन्नकूट मनाया जाता है। यह दिवाली की श्रृंखला में चौथा उत्सव होता है। लोग इस दिन विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाकर गोवर्धन की पूजा करते हैं। इस दिन भगवान श्रीकृष्ण ने इंद्र को पराजित किया और इंद्र द्वारा आयोजित भारी बारिश से अपने ग्रामीणों और मवेशियों को बचाने के लिए भगवान श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को उठाया।

उत्तर भारत में गोबर, गन्ने, किताबें, हथियार और उपकरण आदि इस अवसर पर शाम को पूजा करते थे। महाराष्ट्र, तमिल नाडु और कर्नाटक में लोग इस दिन बलिप्रतिपदा के रूप में मनाते हैं जो दानव राजा बाली के ऊपर विष्णु के बौना वामन अवतार की विजय का स्मरण करता है।

दिवाली पर प्रकाश करने का अर्थ है ज्ञान के प्रकाश को चारों ओर फैलाना। दिवाली पर जब पटाखे फूटते हैं तो बाहर कोई धमाका होता है, तो अन्दर का धमाका तितर-बितर हो जाता है। पटाखों का यही महत्व है। उपहार का आदान-प्रदान और मिठाई बांटना किसी भी प्रकार की कड़वाहट को मिटा देती है और फिर से दोस्ती का हाथ बढ़ाने का प्रतीक है। इस दिन हमें जीवन में जो भी कुछ मिला है, उसके लिए हम कृतज्ञ होते हैं। जब जीवन में ज्ञान का उदय होता है, तब उत्सव होता है। प्राचीन ऋषि इस बात को जानते थे, इसलिए उन्होंने हर उत्सव में कुछ पवित्रता और धार्मिक पूजा भी जोड़ दिए जिससे हम उत्सव के उल्लास में अपना होश न खो बैठें। तो आइये, इस दिवाली हम ज्ञान का उत्सव मनाएं। जीवन में कृतज्ञ महसूस करें।

गुलाब जामुन

सामग्री :
६ ब्रेड स्लाइस
१ चम्मच मैदा
१ चम्मच बारीक सूजी
३ चम्मच दूध
१/२ चम्मच इलायची पाउडर
१/२ चम्मच पिसी चीनी
१ चम्मच हल्का भुना हुआ खोया
१ चम्मच चिरौंजी
१ चम्मच बारीक कटा पिस्ता
तलने के लिए रिफाइंड ऑयल

विधि :

पिसी हुई चीनी में खोया, चिरौंजी और पिसी इलायची मिला दें। ब्रेड को एक प्लेट में फैलाकर दूध में भिगो दें। पांच मिनट बाद ब्रेड को निचोड़ दें ताकि दूध निकल जाएं। इसमें मैदा व सूजी मिलाएं। मिश्रण ज्यादा सख्त नही होना चाहिए। मिश्रण की छोटी-छोटी गोलियां बनाएं। प्रत्येक गोली में बीच में खोये वाला मसाला भर कर बंद कर दें। चीनी और पानी की एक तार की चाशनी बनाकर अलग रख लें। अब गर्म तेल में मध्यम आंच पर सुनहरे भूरे होने तक गोलियां तले और इन्हें गर्म चाशनी में डाल दें। २-३ घंटे चाशनी में गोलियां भीगने दें। लीजिये तैयार हो गए आपके स्वादिष्ट मीठे गरमा गरम ब्रेड के गुलाब जामुन, इन पर पिस्ते की कतरन छिड़क कर सर्व करें।

रस मलाई

सामग्रीः
दूध, ५०० ग्राम सादा दूध,
२-३ चम्मच मैदा,
शक्कर स्वादानुसार,
चुटकी भर केवड़ा एसेंस।

विधिः

सबसे पहले आप दूध में नीबू डालकर फाड़ लीजिये। इस फटे दूध में दो-तीन चम्मच मैदा मिलाकर खूब फेंट लें इतना फेंट की दूध एकदम गाढ़ा हो जाये, पानी का एक बूंद भी ना रहे। अब इस दूध उसकी छोटी-छोटी टिकिया बनाकर आधे दूध और आधे पानी में डालकर ५ मिनट तक उबालें। इसमें आधा लीटर गाढ़ा दूध मिलाएँ और स्वादानुसार चीनी डालें। ठंडा होने पर केवड़ा एसेंस की दो-तीन बूँदें मिला दें। स्वादिष्ट रसमलाई तैयार हो जाएगी।

मालपुआ

सामग्रीः
२०० ग्राम मैदा
१ चम्मच सौंफ
१ चम्मच पिसी हरी इलायची
१ कप घी
५० ग्राम खोया
१०० ग्राम सूजी
१/२ चम्ममच बेकिंग पाउडर
५०० मिली दूध
२५० ग्राम चीनी
१ चुटकी केसर
२ टेबलस्पून बारीक कटा पिस्ता

विधिः

चाशनी बनाने के लिए मध्यम आंच पर पानी उबालें। इसमें चीनी डालें और घुलने तक चलाएं। अब २-३ चम्मच दूध डालें फिर चलाएं, कुछ देर बाद जो मैल ऊपर आ जाए उसे हटा दें। जैसे ही चाशनी गाढ़ी हो पैन को आंच से हटाकर रख दें। मैदा, रवा (सूजी), खोया, बेकिंग पाउडर, सौंफ, इलायची पाउडर और दूध को मिलाएं। ध्यान रखें कि मिश्रण ज्यादा गाढ़ा न हो। जैसे ही घोल तैयार हो जाए तो इसे कुछ देर के लिए ऐसे ही छोड़ दें ताकि मसालों का स्वाद मैरीनेट हो जाए।

अब धीमी आंच पर एक पैन में घी गरम करें। चमचा भरकर मिश्रण लें और उसे फैला लें। आंच धीमी रखें और दोनों तरफ पकाएं। पका हुआ माल पुआ हटा लें और बचा हुआ घी निकाल दें।

मालपुआ को चाशनी में डालें और १० मिनट तक डूबा रहने दें। बाकी मिश्रण से भी ऐसे ही मालपुआ तैयार करें। चाशनी से निकालकर पिस्ते से सजाएं और गर्मागरम सर्व करें।

मैसूर पाक

सामग्री :
एक कप बेसन
एक कप चीनी
ढाई कप घी
एक कप पानी
आधा चम्मच इलायची पाउडर
विधिः
बेसन को धीमी आंच पर भून लें। अब आधे घी को एक पैन में डाल कर, उसमें चीनी और एक कप पानी डाल कर तब तक पकाएं, जब तक इसका गाढ़ा घोल न बन जाए। अब इसमें भूना हुआ बेसन मिल ा कर थोड़ी देर तक पकाएं, फिर इसमें बचा हुआ घी डाल कर धीमी आंच पर तब तक पकाएं, जब तक यह हल्का भूरा न हो जाए। अब इसमें इलायची पाउडर डाल कर इस मिश्रण को एक थाली में सेट कर लें। चाकू से छोटे-छोटे टुकड़े काटें और स्वाद लेकर खाएं।

करांजी

सामग्रीः
डो बनाने के लिएः२ कप मैदा, एक चुटकी नमक, तेल, पानी फीलिंग बनाने के लिएः, २ कप नारियल, २ कप गुड़, १ टेबल स्पून खसखस, १/२ टी स्पून इलाइची पाउडर, १/२ कप किशमिश, १/२ कप पिस्ते, २ टेबल स्पून घी
विधिः घी गर्म करें। इसमें गुड़ और नारियल डालें। इसे मध्यम आंच पर तब तक पकाएं जब तक गुड़ पिघल कर नारियल के साथ अच्छे से न मिल जाएं। इसमें खसखस के बीज, इलाइची पाउडर और किशमिश डालें। इन्हें अच्छे से मिलाएं और आंच बंद कर दें। मैदे में नमक, तेल और पानी डालकर आटा गूंथ लें। छोटी लोई बना लें और इसे बेल लें, इसके बीच में भरावन सामग्री रखें। इसे आधा फोल्ड कर लें। इसके किनारों पर पानी लगाकर अच्छी तरह बंद कर दें। तेल में गोल्डन ब्राउन होने तक डीप फ्राई करें। उसके बाद सर्व करें।

बेसन बर्फी

सामग्रीः
बेसन - ३ कप
सूजी - २ टेबलस्पून
देसी घी - १ कप
केसरिया फूड कलर - १ चुटकी
इलायची पाउडर - १/२ टी स्पून
पिस्ता कतरन - १ टेबलस्पून (वैकल्पिक)
चीनी - डेढ़ कप (स्वादानुसार)
विधिः
स्वादिष्ट बेसन की बर्फी बनाने के लिए सबसे पहले एक कड़ाही में १ कप घी डालकर उसे मीडियम आंच पर गर्म करें. जब घी पिघल जाए तो उसमें ३ कप बेसन डाल दें और करछी की मदद से चलाते हुए बेसन और घी को एकसार करें. बेसन को कम से कम २ मिनट तक चलाते रहें. इसके बाद कड़ाही में २ टेबलस्पून सूजी डाल दें और अच्छी तरह से मिक्स कर दें. अब गैस की फ्लेम को धीमा कर दें और इस मिश्रण को चलाते हुए तब तक भूनें जब तक कि इसका रंग हल्का गुलाबी न हो जाए.
बेसन को अच्छी तरह से भुनने में २५ से ३० मिनट तक का वक्त लग सकता है. इसके बाद बेसन घी छोड़ने लग जाएगा. इसके बाद गैस बंद कर दें और बेसन को एक बर्तन में निकाल दें. अब एक बड़ी कड़ाही में डेढ़ कप चीनी और आधा कप पानी डालकर गर्म करें. चीनी को पानी में अच्छी तरह से घोलें और एक तार की चाशनी बनने तक उबालें. इसके बाद चाशनी में एक चुटकी केसरिया फूड कलर मिक्स कर दें.चाशनी में भुना हुआ बेसन डाल कर अच्छी तरह से मिक्स कर दें और थोड़ी देर तक और पकाने के बाद गैस बंद कर दें. बेसन को चाशनी के साथ तब तक मिक्स करते रहें जब तक कि मिश्रण एकसार न हो जाए. इसके बाद थाली/ ट्रे लेकर उस पर थोड़ा सा घी लगाकर चिकना कर लें. तैयार मिश्रण को ट्रे में डालकर चारों ओर समान अनुपात में फैलाएं. ऊपर से पिस्ता कतरन को छिड़क दें. बर्फी को सेट होने के लिए आधा घंटे अलग रख दें. इसके बाद चाकू की मदद से मनपसंद आकार में काट लें. टेस्टी बेसन बर्फी बनकर तैयार हो चुकी है.

Wholesale Furniture Market
Ulhasnagar,Mumbai

सस्ते फर्नीचर के 5 थोक बाजार
फर्नीचर खरीदिए आधे दामों पर
एक से बढ़कर एक एंटीक आइटम

MS Dhoni बने SBI के ब्रैंड एंबेसडर, अब निभाते दिखेंगे ये खास जिम्मेदारी

महेंद्र सिंह धोनी को एंबेसडर बनाने के बाद एसबीआई के अध्यक्ष दिनेश खर ने जानकारी दी कि हमें एस धोनी को एसबीआई का ब्रांड एंबेसडर बनाएं जाने पर बेहद खुशी हो रही है। उन्होंने कहा कि महेंद्र सिंह धोनी का स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया के साथ जुड़ना हमारे ब्रांड को नया रूप देगा। यह फैसला साझेदारी, हमारे लक्ष्य विश्वास, अखंडता और अटूट समर्पण के साथ राष्ट्र और अपनी ग्राहकों की सेवा करने की प्रतिबद्धता को मजबूती देगा।

गौरतलब है कि भारतीय स्टेट बैंक प्रॉपर्टी डिपॉजिट ब्रांचेस कस्टमर और कर्मचारियों के मामले में सबसे बड़ा देश का कमर्शियल बैंक माना जाता है। सिर्फ यही नहीं एसबीआई देश का सबसे बड़ा कर्ज डाटा बैंक भी है जिसे अब तक ३० लाख से अधिक भारतीय परिवारों को घर खरीदने के लिए होम लोन मुहैया कराया है जिससे जनता के घर खरीदने का सपना साकार हुआ है। जानकारी के मुताबिक बैंक का होम लोन का पोर्टफोलियो ६.५३ लाख करोड रुपए से अधिक तक पहुंच चुका है।

बैंक ने एक बयान में कहा कि एसबीआई के ब्रांड एम्बैसडर के तौर पर धोनी विभिन्न विपणन और प्रचार अभियानों में प्रमुख भूमिका निभाएंगे। बयान के अनुसार, तनावपूर्ण स्थितियों में संयम बनाए रखने की उनकी उल्लेखनीय क्षमता और स्पष्ट सोच और दबाव में त्वरित निर्णय लेने की उनकी प्रसिद्ध क्षमता उन्हें देशभर में अपने ग्राहकों और हितधारकों के साथ जुड़ने के लिए एसबीआई के साथ आदर्श विकल्प बनाती है। एसबीआई ने कहा कि यह सहयोग विश्वसनीयता और नेतृत्व के मूल्यों को दर्शाते हुए अपने ग्राहकों के साथ गहरे संबंध बनाने की बैंक की प्रतिबद्धता का प्रतीक है। एसबीआई के चेयरमैन दिनेश खारा ने कहा, 'इस साझेदारी के साथ हमारा लक्ष्य विश्वास, अखंडता और अटूट समर्पण के साथ राष्ट्र और अपने ग्राहकों की सेवा करने की अपनी प्रतिबद्धता को मजबूत करना है।

Kerala: एर्नाकुलम में प्रार्थना सभा के दौरान एक के बाद एक धमाके, दो की मौत; जांच के लिए २० सदस्यीय टीम गठित

केरल के एर्नाकुलम में रविवार सुबह एक कन्वेंशन सेंटर में भीषण ब्लास्ट हुआ। इसमें कम से दो लोगों की मौत की खबर है। वहीं, कई लोग घायल हैं। कल ामसेरी पुलिस के मुताबिक, यह धमाका उस वक्त हुआ, जब कई लोग कन्वेंशन सेंटर में प्रार्थना सभा के लिए जुटे थे। पुलिस के मुताबिक, पहला धमाका सुबह ९ बजे के करीब हुआ। अगले कुछ मिनटों में एक के बाद एक ब्लास्ट हुए। बताया गया है कि घटना की जांच के लिए एनआईए और एनएसजी की टीमें केरल रवाना हो गई हैं।

इस बीच केरल CM पिनाराई विजयन ने कहा कि कलामासेरी में हुआ विस्फोट बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। फिल हाल ४१ लोग अस्पताल में भर्ती हैं, जिनमें से २७ लोग एर्नाकुलम मेडिकल कॉलेज में भर्ती हैं। चार लोगों को छुट्टी मिल गई है। दो लोगों की मौत हो गई है और ५

की हालत गंभीर है। एडीजीपी लॉ एंड ऑर्डर के नेतृत्व में एक विशेष टीम घटना की जांच करेगी। जांच टीम में २० सदस्य होंगे। कल सर्वदलीय बैठक बुलाई गई है। कन्वेंशन सेंटर में यहोवा के साक्षियों का क्षेत्रीय सम्मेलन हो रहा था हमने देखा कि एक क्षेत्रीय सम्मेलन हो रहा था। हमारे सभी वरिष्ठ अधिकारी मौके पर हैं। हमारे एडिशनल डीजीपी भी रास्ते में हैं। मैं भी शीघ्र ही मौके पर पहुंचूंगा। हम पूरी जांच कर रहे हैं, पता लगाएंगे कि इसके पीछे कौन है और सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने बताया कि प्रारंभिक जांच से पता चलता है कि यह एक IED उपकरण है और हम इसकी जांच कर रहे हैं।'

एर्नाकुलम के कलेक्टर के मुताबिक, घटना में ५२ लोग घायल हुए हैं। उन्होंने कहा कि १० लोगों को गंभीर रूप से जलने के बाद कलामसेरी मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया है। इनमें से दो लोग ५० फीसदी से ज्यादा जल गए हैं। इसके अलावा आठ लोगों को अस्पताल के जनरल वॉर्ड में भेजा गया है। वहीं, १८ को अलग-अलग अस्पतालों में निरीक्षण में रखा गया है। जानकारी के मुताबिक, रविवार को इस तीन दिवसीय प्रार्थना सभा का आखिरी दिन था। इस बीच केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने केरल के मुख्यमंत्री पिनरई विजयन से बात की और बम विस्फोट के बाद राज्य के हालात पर चर्चा की।

घूमने की बेहतरीन जगहें...

नीलगिरी की पहाड़ियों में बसा कुन्नूर

कूनूर एक प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर छोटा शहर है जो तमिल नाडु राज्य, भारत में स्थित है। यह शहर नीलगिरी पहाड़ियों के हृदय में स्थित है और एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। कूनूर, ऊटी के पास स्थित है और इसकी शांति, हरा-भरा वातावरण और मालया पहाड़ियों के लिए प्रसिद्ध है। वर्तमान समय में ये दक्षिण का एक जाना माना पिकनिक स्पॉट बन चुका है। यहां आपको कई फॉल्स भी देखने को मिल जाएंगे, जो असल में आप देखना पसंद करते हैं। घने जंगलों में घिरा हुआ यह स्थान किसी स्वर्ग से कम नहीं है, जहां शांति और सुकून के साथ समय बिताने का मौका मिलेगा।

तमिलनाडु में स्थित कुन्नूर ऊटी के पास में तो है ही, इसके साथ ही ये कोयम्बटूर से भी मात्र ७० किमी. की दूरी पर स्थित है, जो अपनी हरी-भरी वादियों से लोगों को आकर्षित करती है। वर्तमान समय में ये दक्षिण का एक जाना माना पिकनिक स्पॉट बन चुका है। यहां आपको कई फॉल्स भी देखने को मिल जाएंगे, जो असल में आप देखना पसंद करते हैं। घने जंगलों में घिरा हुआ यह स्थान किसी स्वर्ग से कम नहीं है, जहां शांति और सुकून के साथ समय बिताने का मौका मिलेगा। यहां आसपास में भी कई ऐसे घूमने वाले स्थान है, जहां घूमने के लिए जाया जा सकता है।

यदि आप पूरे कुन्नूर का मनोरम दृश्य प्राप्त करना चाहते हैं और सूर्योदय और सूर्यास्त का आनंद लेना चाहते हैं, तो लैंब रॉक पर जाना यकीनन काफी अच्छा रहेगा। सर्दियों के मौसम में यात्रा करते समय यह धुंध से भर जाता है। इसलिए, यह जरूरी है कि आपको लैंब रॉक पर जाने से पहले तापमान के स्तर पर ध्यान देना चाहिए। हिडल वैली कुन्नूर में घूमने की बेहतरीन जगहों में से एक है। कुन्नूर के बाहरी इलाके में हरियाली पर बसे, यह जगह एडवेंचर्स पसंद लोगों के लिए एक बेहतरीन जगह है। पर्वतारोहण, रॉक क्लाइम्बिंग और ट्रेकिंग, हिडन वैली के अन्य आकर्षण हैं। वेलिंगटन गोल्फ कोर्स के बाहर और सिम के फॉल्स के पास, घाटी परिवारों के लिए एक आदर्श पिकनिक स्थल और जोड़ों के लिए एक रोमांटिक स्थान है। फूलों की बहुत सारी विदेशी प्रजातियां हैं, जो पूरे देश के पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। वैसे तो इस पार्क की खूबसूरती देखते ही बनती है, लेकिन मई के माह में यहां जाना सर्वाधिक उपयुक्त माना जाता है, क्योंकि कुन्नूर सिम के पार्क में मई में फ्लावर शो आयोजित किया जाता है। यह कुन्नूर में सबसे अधिक देखे जाने वाले पर्यटन स्थलों में से एक है। आज के समय में यह एक प्रसिद्ध वनस्पति उद्यान है। कैथरीन फॉ

ल्स सबसे अच्छे कुन्नूर आकर्षणों में से एक है, जिसे हर पर्यटक को देखना चाहिए। यह ट्रेकिंग के लिए

कूनूर के पर्यटन स्थलों और गतिविधियों के बारे में कुछ महत्वपूर्ण जानकारी ...

सिम्स पार्कः यह एक प्रसिद्ध पार्क है जहाँ विभिन्न प्रकार के पौधे और फूलों को देखा जा सकता है। पार्क के बीच में एक खूबसूरत झील है जहाँ लोग घूम सकते हैं।

लैम्ब्स रॉकः लैम्ब्स रॉक एक उदान खुला स्थल है जहाँ से आप कूनूर के सुंदर दृश्यों को देख सकते हैं। यहाँ से ऊटी शहर की ओर भी सुंदर दृश्य होते हैं।

डॉल्फिन'स नोज़ः इस स्थल से आप नीलगिरी पहाड़ियों के हरित वातावरण को देख सकते हैं। यहाँ से आप डॉल्फिन'स नोज़ के एक सुंदर पत्थर की ओर भी जा सकते हैं।

नीलगिरी माउंटन रेलवेः यदि आप किसी अद्भुत रेल यात्रा का आनंद लेना चाहते हैं, तो नीलगिरी माउंटन रेलवे आपके लिए महत्वपूर्ण है। यह यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया है।

हाईफील्ड चाय फैक्टरीः कूनूर के आस-पास चाय की खेती प्राचीन तरीके से होती है। हाईफील्ड चाय फैक्टरी आपको चाय उत्पादन की प्रक्रिया और इतिहास के बारे में जानकारी प्रदान करता है।

ट्रेकिंगः कूनूर में पर्यटक ट्रेकिंग का आनंद ले सकते हैं, जहाँ उन्हें प्राकृतिक सौन्दर्य से ज्यादा गहरा संपर्क बनाने का अवसर मिलता है।

नीलगिरी बायोस्फियर रिजर्व : कूनूर नीलगिरी

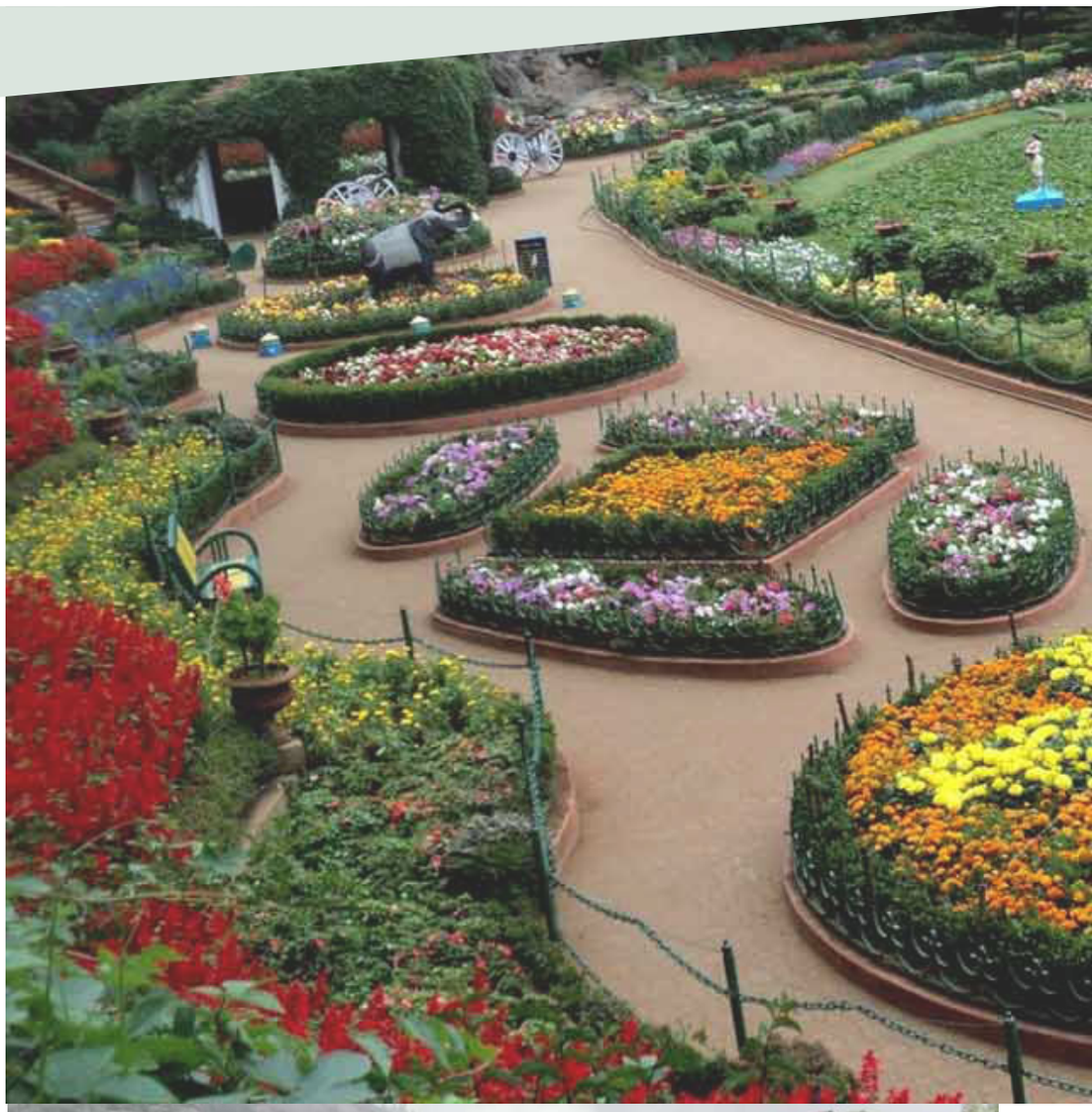

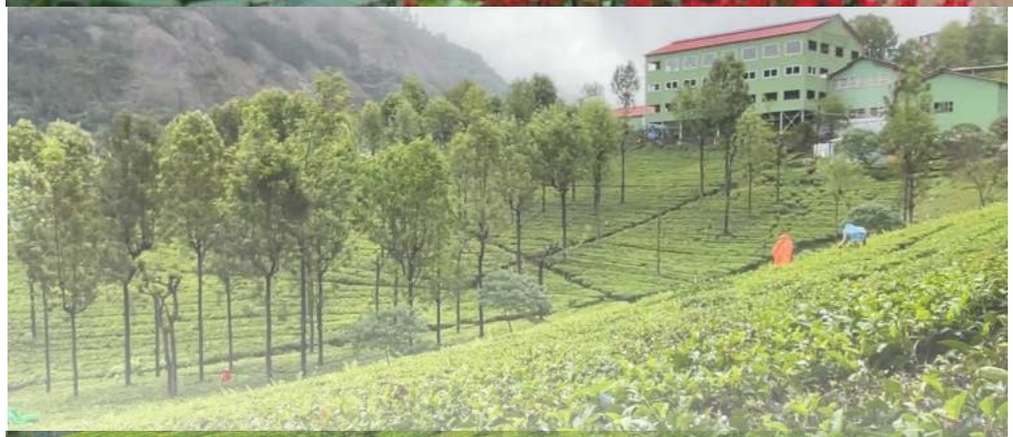

बायोस्फियर रिजर्व का हिस्सा है, जिसे यूनेस्को ने बायोस्फियर रिजर्व के रूप में मान्यता प्रदान की है। यहाँ के वन और प्राकृतिक सौन्दर्य को देखने का अद्भुत सीन है।

कूनूर के बारे में और रोचक जानकारीः

जलवायुः कूनूर नीलगिरी पहाड़ियों में स्थित है, और यहाँ का जलवायु शांत और मिलनसर होता है। साल के अलग-अलग मौसमों का आनंद लेने के लिए यहाँ पर्यटक आते हैं।

भूगोलिक स्थितिः कूनूर स्थानिक रूप से ऊटी और कोयम्बटूर से संबंधित है, और यह दोनों शहरों से सड़क और रेल मार्गों से जुड़ा हुआ है।

उन्नत शिक्षाः कूनूर के पास कई शिक्षा संस्थान हैं, जिनमें विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में विकसित करने का अवसर मिलता है।

स्थानीय खाद्यः कूनूर के पास स्थानीय खाद्य विकल्प मौजूद हैं, और यहाँ आप स्वादिष्ट दक्षिण भारतीय खाने का आनंद ले सकते हैं, जैसे कि दोसा, इडली, और उपमा।

शांति और विश्रामः कूनूर एक ऐसा स्थल है जहाँ आप शांति और विश्राम का आनंद ले सकते हैं। यहाँ के हरियाली से घिरे पश्चिमी घाट और प्राकृतिक सौंदर्य के साथ अपने आत्मा को शांति मिलती है।

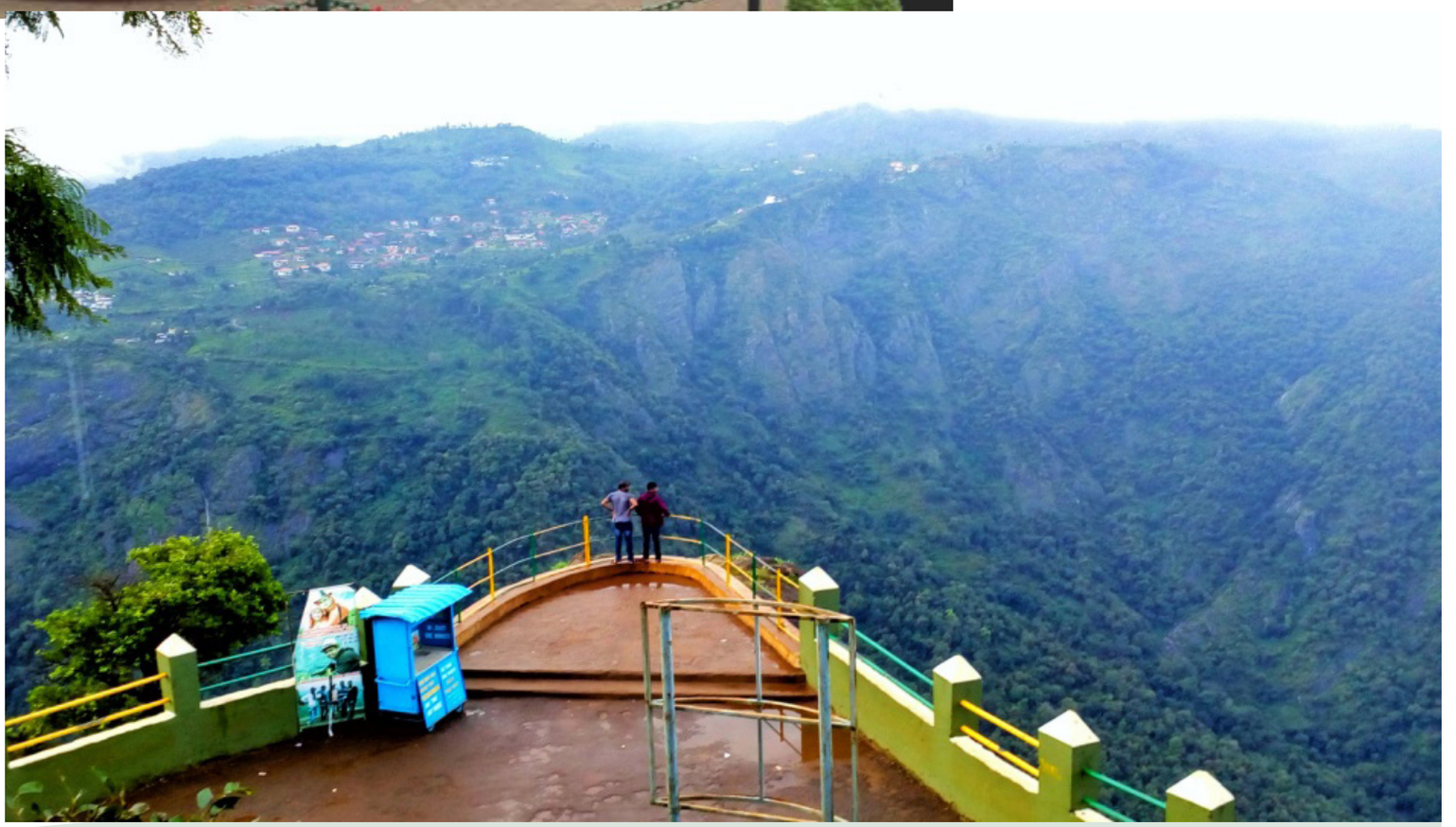

अडानी ग्रुप ने २० हजार करोड़ नहीं बल्कि ३२ हजार करोड़ रुपये की गड़बड़ी की है: राहुल गांधी

कांग्रेस पार्टी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने एक बार फिर अडानी ग्रुप पर बड़ा आरोप लगाया है। उन्होंने कांग्रेस मुख्यालय में आयोजित एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि अडानी ग्रुप ने २० हजार करोड़ नहीं बल्कि ३२ हजार करोड़ रुपये की गड़बड़ी की है। राहुल गांधी ने अडानी और कोयले की रहस्यमयी कीमतों को लेकर रिपोर्ट का उल्लेख करते यह बात कही। राहुल ने बताया कि यह रिपोर्ट लंदन के फाइनेंशियल टाइम्स में छपी है।

प्रेस कॉन्फ्रेंस में फाइनेंशियल टाइम्स की प्रति लहराते हुए राहुल गांधी ने कहा-'पहले हमने २० हजार करोड़ की बात की थी और सवाल पूछा था कि पैसा किसका है और कहां से आया है। अब पता चलता है कि २० हजार करोड़ का आंकड़ा गलत था उसमें १२ हजार करोड़ और जुड़ गए हैं और कुल आंकड़ा ३२ हजार करोड़ हो गया है। अडानी जी इंडोनेशिया में कोयला खरीदते हैं और जबतक वह हिंदुस्तान पहुंचता है उसका रेट बदल जाता है, कोयले का रेट डबल हो जाता है। इस तरह से उन्होंने और १२ हजार करोड़ की चपत लगाई है।' राहुल गांधी ने कहा कि अडानी ग्रुप ने १२ हजार करोड़ हिंदुस्तान की जनता की पॉकेट से निकाला है। कोल प्राइस को गलत दिखाकर यहां पर बिजली के दाम बढ़ा दिया गया और जनता के पॉकेट से पैसे निकाल लिए गए।'

राहुल गांधी ने कहा,'कर्नाटक में बिजली की सब्सिडी दी गई, मध्य प्रदेश में सब्सिडी की तैयारी है। बिजली का बिल बढ़ता जा रहा है। इसमें से आपकी जेब से १२ हजार करोड़ अडानी जी ने लिए। ये मैं नहीं फाइनेंशियल टाइम्स लंदन की रिपोर्ट कह रही है।'राहुल गांधी ने कहा-' ये स्टोरी आती है लेकिन हिंदुस्तान का मीडिया एक सवाल नहीं पूछ रहा है। किसी भी मीडिया चैनल को इसमें रुचि नहीं है।' राहुल गांधी ने केंद्र सरकार पर निशाना साधा और इस पूरे मामले में सांठगांठ का आरोप लगाया।

वहीं अडानी के मुद्दे पर विपक्षी गठबंधन इंडिया के एकजुट होने के बावजूद शरद पवार की अडानी से मुलाकात पर सवाल नहीं उठाए जाने पर कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने कहा, 'मैंने शरद पवार से यह सवाल नहीं पूछा क्योंकि वे प्रधानमंत्री नहीं हैं। शरद पवार अडानी को नहीं बचा रहे हैं, इश मोदी बचा रहे हैं इसीलिए मैंने उनसे यह सवाल पूछा। अगर शरद पवार प्रधानमंत्री होते और अडानी को बचाते, तो मैं शरद पवार से यह सवाल पूछ रहा होता।'

मुंबई: ईडी ने कोविड-१९ खिचड़ी घोटाले के संबंध में तलाशी ली

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने बुधवार को कोविड-१९ महामारी के दौरान हुए कथित खिचड़ी घोटाले के सिलसिले में मुंबई में सात स्थानों पर तलाशी ली। यह तलाशी कोविड काल के दौरान खिचड़ी के आपूर्तिकर्ताओं से संबंधित स्थानों पर की गई। कथित घोटाले के संबंध में वर्तमान में उप नगर आयुक्त संगीता हसनाले, शिवसेना यूबीटी पार्टी के कार्यकर्ता सूरज चव्हाण और पांच निजी ठेकेदारों के परिसरों पर ईडी की तलाशी चल रही है। गौरतलब है कि इससे पहले ईडी ने मामले के सिलसिले में शिवसेना (यूबीटी) नेता संजय राउत के करीबी सुजीत पाटकर को गिरफ्तार किया था।

इस संबंध में दर्ज प्राथमिकी के अनुसार, शहर पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा (ईओडब्ल्यू) ने पहले पाया कि बम्बई नगर निगम ने कोविड-१९ महामारी के दौरान प्रवासियों को 'खिचड़ी' के वितरण का ठेका देने में वित्तीय अनियमितताएं कीं। ईओडब्ल्यू ने पाया कि जिन ठेकेदारों को खिचड़ी बनाने का काम दिया गया था, उन्होंने दूसरों को काम सौंप दिया और बीएमसी अधिकारियों को पसंदीदा पार्टियों को ठेका देने के लिए रिश्वत मिली। प्राथमिकी में कहा गया है कि बीएमसी की बैठक में यह निर्णय लिया गया कि ठेका किसी धर्मार्थ संगठन या सामुदायिक रसोई वाले एनजीओ को दिया जाना चाहिए जो ५,००० से अधिक भोजन बना सके और उसके पास नगर पालिका के स्वास्थ्य विभाग से प्रमाण पत्र हो।

लोग मुझे अच्छी इंसान के रूप में याद रखें: वहीदा रहमान

दिग्गज अभिनेत्री वहीदा रहमान को ६९वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार में भारतीय सिनेमा में उनके अमूल्य योगदान के लिए दादा साहब फाल्के ल इफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 'गाइड', 'प्यासा', 'साहब बीबी और गुलाम', 'दिल्ली-६', 'कागज के फूल' और कई अन्य फिल्मों के लिए जानी जाने वाली एक्ट्रेस ने सेल्युलाइड पर अनगिनत यादगार किरदार निभाए हैं और उनका करियर लगभग सात दशकों तक फैला है। राष्ट्रीय राजधानी में आयोजित ६९वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार समारोह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर भी मौजूद रहे। वहीदा को वीडियो में यह कहते हुए देखा जा सकता है : 'मेरे पिता एक आईएएस अधिकारी थे, और व्यापक विचारों वाले थे। बचपन में मैंने डॉक्टर बनने की ख्वाब देखा था, लेकिन फिर मुझे डांस का शौक पैदा हुआ। मेरे माता-पिता ने मुझे नहीं रोका। डांस सीखने के बाद मैं फिल्मों में आ गई।'

'सबसे पहले मैंने १९५५ में तेलुगू फिल्म 'रोजुलू मारायी' की, जिसमें मेरा डांस सीक्वेंस था और यह सफल रही। फिर मुझे मेरी पहली हिंदी फिल्म 'सीआईडी' (१९५६) मिली। 'गाइड' मेरी पसंदीदा है, क्योंकि यह यह एक अलग किरदार है। मैं हमेशा अच्छे काम में विश्वास करती हूं और मैंने हमेशा अपने दिल की सुनी है। मैं चाहती हूं कि लोग मुझे अच्छी इंसान के रूप में याद रखें।''

अवॉर्ड मिलते ही ८५ वर्षीय एक्ट्रेस इमोशनल हो गईं। पुरस्कार प्राप्त करने के बाद वहीदा ने कहा, ''मुझे बहुत सम्मानित महसूस हो रहा है। आज जिस मुकाम पर मैं खड़ी हूं, यह मेरी प्यारी फिल्म इंडस्ट्री की वजह से है। सौभाग्य से, मुझे टॉप डायरेक्टर्स, प्रोड्यूसर्स, राइटर्स, टेक्नीशियंस और म्यूजिक डायरेक्टर्स के साथ काम करने का मौका मिला। बहुत इज्जत दी, बहुत प्यार मिला।'' उन्होंने आगे कहा, 'मैं अपने मेकअप आर्टिस्ट, हेयर और कॉस्ट्यूम डिजाइनर को भी धन्यवाद देती हूं, जिन्होंने मेरे करियर में अहम भूमिका निभाई है। इसीलिए यह अवॉर्ड मैं अपने फिल्म इंडस्ट्री के सारे डिपार्टमेंट के साथ शेयर करना चाहती हूं। कोई भी इंसान अकेले पूरी पिक्चर नहीं बना सकता, निर्माता को हम सबकी जरूरत होती है। सबके योगदान से फिल्म पूरी होती है। आप सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद।''

विलक्षण व्यक्तित्व के धनीः
प्रो.अच्युत सामंत

उनकी बहुजन हिताय, बहुजन सुखायवाली सोच भी उनके दिव्य व्यक्तित्व को महान बना देती है जिसके बदौलत वे पिछले लगभग ३० वर्षों से अपने उन बाल सहपाठियों को अपनी ओर से अच्युत सामंत पेंशन देते हैं जो आज भी अभावग्रस्त हैं। वे आत्मविश्वासी हैं। वे बडे गर्व से सामनेवाले से आंख से आंख मिलाकर बात करते हैं और उसका दिल जीत लेते हैं। उनकी सूझबूझ तथा प्रत्युत्पन्नमता तो कमाल की है। उनके उठने-बैठने, बातचीत करने, उनके व्यवहार तथा आचरण से उनके विलक्षण व्यक्तित्व का पता चलता है।

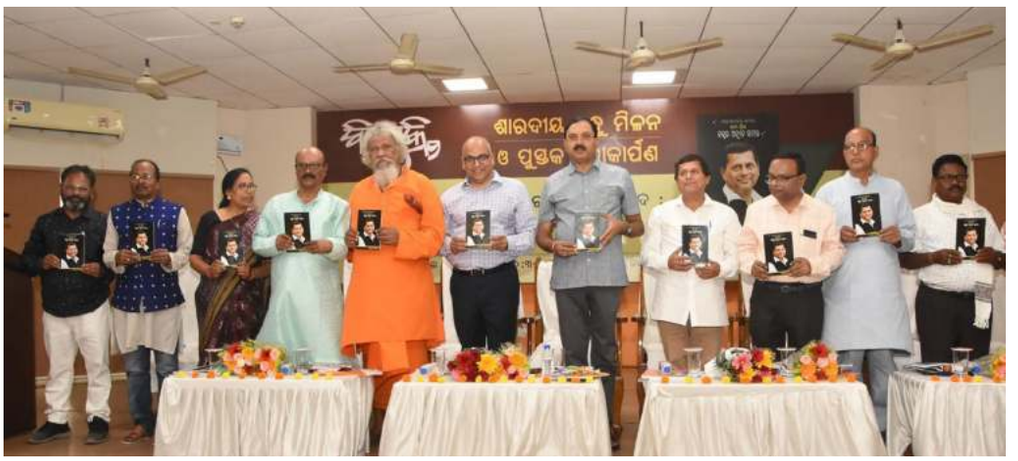

१९९२-९३ से समाचारपत्रों की सुर्खियों में प्रतिदिन छाये रहनेवाले प्रो.अच्युत सामंत निश्चित रुप से एक विलक्षण व्यक्तित्व हैं। उनका सरल, सहज तथा आत्मीय स्वभाव ही उनकी विलक्षणता की पहली पहचान है। उनका पारदर्शी चरित्र तो उनको विलक्षण व्यक्तित्व के शीर्ष पर प्रतिष्ठत कर देता है। उनकी बहुजन हिताय, बहुजन सुखायवाली सोच भी उनके दिव्य व्यक्तित्व को महान बना देती है जिसके बदौलत वे पिछले लगभग ३० वर्षों से अपने उन बाल सहपाठियों को अपनी ओर से अच्युत सामंत पेंशन देते हैं जो आज भी अभावग्रस्त हैं। वे आत्मविश्वासी हैं। वे बडे गर्व से सामनेवाले से आंख से आंख मिलाकर बात करते हैं और उसका दिल जीत लेते हैं। उनकी सूझबूझ तथा प्रत्युत्पन्नमता तो कमाल की है। उनके उठने-बैठने, बातचीत करने, उनके व्यवहार तथा आचरण से उनके विलक्षण व्यक्तित्व का पता चल ता है। वे अपने चाहनेवालों के दिलों पर शासन करते हैं इसलिए नहीं कि वे विश्व के सबसे बडे और प्रथम आदिवासी आवासीय डीम्ड विश्वविद्यालय तथा कीट डीम्ड विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर, ओडिशा के प्राणप्रतिष्ठाता हैं अपितु इसलिए कि वे दूसरों की सिर्फ अच्छाइयों को हंस की तरह चुन लेते हैं।

उनके बोलचाल की भाषा अत्यंत सरल, मृदुल तथा प्रभावकारी है। उनके पास विचार-विनयमय की अनोखी संस्कृति है। वे वक्ता कम , श्रोता अधिक हैं। उनकी सोच सकारात्मक है। वे जरुरतमंदों की बात बडे धीरज के साथ सुनते हैं तथा उसकी मदद तत्काल करते हैं। वे अपने व्यक्तगत, पारिवारिक, सामाजिक तथा राजनैतिक जीवन की अनुकूल तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में सदैव धीरज से काम लेते हैं। संसार सुख देगा नहीं, धरती पसीजी है कहीं, जिससे हृदय को बल मिले है ध्येय उनका तो यही। यही नहीं , उनकी विनम्रता को अनोखी है जिसका आभास उनके चेहरे की हंसी से सदैव देखने को मिलती है। वे बडे ही शांत-चित्तवाले व्यक्ति हैं। वे अहंकारी तो बिल कुल ही नहीं हैं। उनके दिल को अगर कोई जीत सकता है तो वह उनके प्रति अपनी वफादारी तथा ईमानदारी से। यही कारण है कि उस विलक्षण व्यक्तित्व के बदौलत कीट-कीस-कीम्स शैक्षणिक समूह के लगभग एक लाख बच्चे, शिक्षक, अभिभावक तथा कर्मचारी उनको अपना आदर्श मानते हैं।

गत २८ अक्टूबर को भुवनेश्वर के गीत गोविंदसदन में कुमार पूर्णिमा ओडिया मासिक पत्रिका विश्वमुक्ति की ओर से पहली बार शारदीय बंधुमिलन एवं पुस्तक लोकार्पण समारोह के रुप में मनाई गई। उसमें कीट-कीस के प्राणप्रतिष्ठाता तथा कंधमाल लोकसभा सांसद महान शिक्षाविद् प्रो.अच्युत सामंत के अति सरल, सामान्य जीवन तथा उनकी असाधारण उपलब्धियों पर आधारित ओडिया पुस्तकःपत्र गोटालि रू एमपीः आम प्रिय अच्युत सामंत' लोकार्पित हुई। उसकी लेखिका हैं-मिनती बाला सामंतराय जिन्होंने प्रो अच्युत सामंत को कभी देखा नहीं था अपितु उनके विलक्षण व्यक्तित्व के विषय में सुना मात्र था। मंचासीन थे प्रो अच्युत सामंत, डॉ शशांक चूडामणि, विश्वमुक्ति के सम्पादक, संरक्षकः पूर्व सांसद डॉ प्रसन्न कुमार पाटशाणी, भुवनेश्वर-कटक के पुलिस आयुक्त सौमेंद्र प्रियदर्शी, उड़िया साहित्य और संस्कृति विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव सत्यब्रत साहू, पूर्व मंत्री देवेन्द्र मानसिंह, उड़िया भाषा अनुसंधान संस्थान के निदेशक प्रो. बसंत पंडा और आदिवासी कवि मकरध्वज नायक आदि।

अवसर पर अखिल ओडिशा पाइक महासंघ द्वारा विलक्षण व्यक्तित्व प्रो अच्युत सामंत को कलिंग वीर सम्मान से सम्मानित भी किया गया। सच कहा जाय तो प्रो अच्युत सामंत के विलक्षण व्यक्तित्व को सफल बनाता है उनका आध्यात्मिक और सरल जीवन। इसलिए वे अपने जीवन के बाल्यकाल से लेकर २५ वर्षों तक घोर आर्थिक संकटों से बढ़कर स्वावलंबी बने तथा उसके उपरांत पिछले लगभग २८ वर्षों से अपना जीवन कंधमाल लोकसभा सांसद के रुप में एक सफल जननायक के रुप में तथा कीट-कीस-कीम्स के प्राणप्रतिष्ठाता के रुप में व्यतीत कर रहे हैं और उनसे मिलने तथा उनकी अद्भुत कीर्ति कीट-कीस-कीम्स को देखने के लिए प्रतिदिन हजारों की संख्या में शिक्षाविद्, कारपोरेट जगत के भामाशाह, राजनेता, अनेक देशों के शासनाध्यक्ष, खिलाडी, वैज्ञानिक तथा समाजसेवी ओडिशा आते हैं और प्रो अच्युत सामंत के विलक्षण व्यक्तित्व के दर्शन कर अपने मानव-जीवन को धन्य करते हैं।

अनुभूति : - अशोक पाण्डेय, राष्ट्रपति पुरस्कारप्राप्त.

कीट में जलवायु सम्मेलन आयोजित

अब से सभी को ऊर्जा संरक्षण के प्रति जागरूक होना होगा : चेतन सोलंकी

भुवनेश्वर, १३/१०: कीट मैकेनिकल इंजीनियरिंग स्कूल और एनर्जी स्वराज फाउंडेशन के सहयोग आयोजित सबसे बड़ी जलवायु ब्लॉक असेंबली में भाग लेते हुए आईआईटी बॉम्बे के प्रोफेसर और एनर्जी स्वराज के संस्थापक, प्रसिद्ध पर्यावरणविद् प्रोफेसर चेतन सिंह सोलंकी ने कहा कि अगर दुनिया के लोग ऊर्जा संरक्षण और उपयोग के बारे में शिक्षित नहीं हैं, तो भविष्य की स्थिति असंभव होगी। प्रोफेसर सोलंकी ने पारंपरिक ऊर्जा और कार्बन आधारित ऊर्जा के उपयोग से बचने के लिए सौर ऊर्जा के तीन विकल्पों पर जोर दिया। वह है, पारंपरिक ऊर्जा और कार्बन आधारित ऊर्जा से दूर रहना, कम ऊर्जा का उपयोग करना, ऊर्जा संरक्षण और उचित उपयोग के लिए ऊर्जा उत्पादन। उन्होंने कहा कि अब देश को सौर ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर होना चाहिए। उन्होंने पारंपरिक ऊर्जा से बचने के लिए ऊर्जा संरक्षण जैसे एलईडी प्रकाश व्यवस्था और न्यूनतम बिजली का प्रयोग करने का सुझाव दिया।

आयोजित इस कार्यक्रम में कीट और कीस के संस्थापक डॉ अच्युत सामंत ने जलवायु परिवर्तन और ऊर्जा संरक्षण के क्षेत्र में प्रोफेसर सोलंकी के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि हमें जलवायु परिवर्तन के गंभीर प्रभावों से बचने के लिए अभी से कार्य करना चाहिए। उन्होंने कहा 'जब दुनिया घातक कोरोना महामारी पर काबू पाने में कामयाब रही है, अगर हम प्रयास करें तो हम अभी भी जलवायु परिवर्तन की भयावहता पर काबू पा सकते है।' अगर हमने अभी इस दिशा में काम करना शुरू नहीं किया तो यह भविष्य में हमारे लिए बड़ी समस्याएं खड़ी कर देगा । इस मौके पर डॉ सामंत के द्वारा हरित प्रयास शुरू हुआ । कार्यक्रम मै कीट विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर शरणजीत सिंह और कुलसचिव प्रोफेसर ज्ञानरंजन मोहंती ने भाग लिया। इस अवसर पर स्थायी ऊर्जा पहल के रूप में, कीट और कीस में कैसे ५० मिलियन वाट सौर ऊर्जा उत्पन्न की गई है और सालाना लाखों पेड़ लगाए गए है उसपर जानकारी दी गई।

KIIT-TBI को वैश्विक मान्यता

KIIT-टेक्नोलॉजी बिजनेस इनक्यूबेटर (KIIT-TBI), KIIT के इनोवेशन हब को थाईलैंड में एशियन एसोसिएशन ऑफ बिजनेस इनक्यूबेशन (AABI) द्वारा 'इनक्यूबेटर ऑफ द ईयर २०२३' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार KIIT-TBI के सीईओ और KIIT के महानिदेशक (R&D और इनोवेशन) डॉ. मृत्युंजय सुआर ने प्राप्त किया। यह मान्यता प्रौद्योगिकी ऊष्मायन के क्षेत्र में KIIT-TBI की उत्कृष्ट उपलब्धियों का परिणाम है। आज तक, KIIT-TBI ने जीवन विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी, मेडटेक, डिजिटल स्वास्थ्य, नवीकरणीय ऊर्जा, एग्रीटेक, ग्रीन टेक, सामाजिक ऊष्मायन और विनिर्माण-केंद्रित ऊष्मायन सहित विभिन्न क्षेत्रों में ४०० से अधिक स्टार्टअप का समर्थन किया है।

KIIT-TBI को भारत सरकार की DST-NIDHI योजना, DBT-BIRAC, MeiTy-MSH, एमएसएमई, गर्ऊं (रक्षा मंत्रालय) जैसे विभिन्न फंडिंग एजेंसियों द्वारा समर्थित किया जाता है। भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग ने KIIT-TBI को उत्कृष्टता केंद्र के रूप में स्वीकार किया है। इसके अतिरिक्त, भारत सरकार के DBT-BIRAC ने भारत के पूर्व और पूर्वोत्तर क्षेत्रों में जैव-उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए KIIT-TBI में BIRAC क्षेत्रीय प्रौद्योगिकी संवर्धन केंद्र (BRTC) की स्थापना की है। KIIT-TBI को न केवल भारत में शीर्ष इनक्यूबेटरों में से एक के रूप में मान्यता दी गई है, बल्कि अब इसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी मान्यता प्राप्त है। केआईआईटी और केआईएसएस के संस्थापक डॉ. अच्युता सामंत ने कहा, 'इनक्यूबेटर नई ऊंचाइयों पर पहुंच रहा है और प्रौद्योगिकी व्यवसाय इनक्यूबेशन के लिए सबसे अनुकूल मॉडल में से एक बना रहा है। यह अंतरराष्ट्रीय मान्यता हमें प्रौद्योगिकी इन्क्यूबेशन में और भी बड़ी चीजें हासिल करने के लि ए प्रेरित करेगी।' डॉ. सामंत ने इस मान्यता के लिए डॉ. मृत्युंजय सुआर और केआईआईटी-टीबीआई टीम को बधाई दी।

१२वें इन्टरव्यू टाइम्स वार्षिकोत्सव समारोह में हिन्दी विद्वान अशोक पाण्डेय सम्मानित

गांधी जयंती के अवसर पर स्थानीय स्वस्ति प्रीमियम होटल में ओडिशा की एकमात्र लोकप्रिय अंग्रेजी इन्टरव्यू मासिक पत्रिका ने अपना१२वां सल ाना जलसा मनाया जिसमें समारोह के मुख्यअतिथि महान शिक्षाविद्,संस्थापक कीट-कीस तथा कंधमाल लोकगसभा सांसद द्वारा हिन्दी विद्वान अशोक पाण्डेय सम्मानितहुए। गौरतलब है कि अवसर पर कुल २० असाधारण प्रतिभाओं को इन्टरव्यू टाइम्स सम्मानः२०२३ से सम्मानित किया गया। नई स्मारिका का लोकार्पण हुआ। श्री पाण्डेय ने बताया कि वे केविसं से अवकाशप्राप्ति के उपरांत इस एवार्ड को पाकर प्रसन्न हैं।

तीन दिवसीय कीट इण्टरनेशनल मून ११वां संस्करण सम्पन्नः भाग लिए देश के ५०० विश्व विद्यालय एवं महाविद्यालय के लगभग १३०० से अधिक प्रतिनिधि

१. जी-२० में भारत के नेतृत्व की प्रशंसा, संयुक्त राष्ट्र के ढांचे में बदलाव का आह्वान

२. मून के माध्यम से छात्र-छात्राएं दुनिया की प्रमुख समस्याओं से होंगे अवगत निकालेंगे समाधान का मार्गः प्रो. अच्युत सामन्त

भुवनेश्वरः कीट डीम्ड विश्व विद्यालय में तीन दिन तक चलने वाला एशिया के सबसे बड़े कीट इंटरनेशनल माडल यूनाइटेड नेसन्स (मून) का ११वां संस्करण रविवार को सम्पन्न हो गया। इसमें देश के लगभग ५०० विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय के लगभग १,३०० से अधिक प्रतिनिधियों के हिस्सा लिया साथ में नाइजेरिया, सोमालिया, बांग्लादेश, सिरिया, इथोपिया, कांगो एवं इंडोनेशिया आदि देश के छात्र प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया और आज दुनिया के सामने रहने वाली विभिन्न समस्याओं पर मंथन किया। उद्घाटन उत्सव में टोगो के उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान मंत्रालय के स्कालरशिप एवं इंटरशिप विभाग के निदेशक कोमला ए.जेरिस जोगवेमा मुख्य अतिथि के तौर पर भाग लिए जबकि सम्मानित अतिथि के तौर पर नई दिल्ली स्थित टोगो दूतावास के कार्यकारी अधिकारी यावा एडेम आकपेमाडो उपस्थित रहकर अपने विचार रखे। अतिथियों ने बताया कि एंगेज टू एमपावर विषय पर आयोजित कीट मून का ११वां संस्करण युवाओं के बीच सशक्तिकरण और विकास की सुविधा प्रदान करेगा। यह भविष्य की एक सुंदर दुनिया के निर्माण में सहायक सिद्ध होगा।

जी-२० के नेतृत्व में भारत की शानदार भूमिका की सराहना करते हुए जोगवेमा ने संयुक्तराष्ट्र के ढांचे में बदलाव का आह्वान किया। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, कई नये मुद्दे अब उभरे हैं जिनमें आक्रमण, युद्ध, आतंकवाद, खाद्यान्न की कमी, स्वास्थ्य देखभाल और शरणार्थी संकट आदि शामिल हैं। उन्होंने कहा कि मानव विकास के क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए टोगो, भारत के साथ घनिष्ठ संबंध रखना चाहता है। कार्यक्रम में कीट-कीस के संस्थापक प्रो अच्युत सामंत ने कहा कि कीट इंटरनेशनल मून एशियाई महाद्वीप की सबसे बड़ा मून कार्यक्रम एक सुंदर परिसर में आयोजित किया जा रहा है, जिसने कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज (केआईएसएस)कीस की तरह एंगेज टू एम्पावर विषय का अनुवाद किया है। उन्होंने यह भी उम्मीद जताई कि मून के माध्यम से छात्र-छात्राएं दुनिया की प्रमुख समस्याओं से अवगत होंगे और इसके समाधान के लिए चर्चा के माध्यम से रास्ता निकालेंगे। कीट मून में ३५ कार्यकारी बोर्ड के सदस्य हैं और इसमें इंडोनेशिया और बांग्लादेश के छात्र प्रतिनिधि थे। कीट मून के महासचिव सीतेश सिंह ने शैडो यूएन की अध्यक्षता की।

गौरतलब है कि २०१३ में अपनी स्थापना के बाद से कीट-मून तेजी से बढ़ा है। यह भविष्य के नेताओं और राजनयिकों के लिए एक आदर्श मंच बन गया है जो दुनिया भर में गरीबी, भूखमरी, जलवायु परिवर्तन, खाद्य सुरक्षा और शरणार्थी संकट पर चर्चा के माध्यम से परिवर्तन चाहते हैं। इस अवसर पर कीट विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर शरणजीत सिंह, रजिस्ट्रार प्रोफेसर ज्ञान रंजन महंती, कीट विश्वविद्यालय के अंतर्राष्ट्रीय संपर्क महानिदेशक देवराज प्रधान, अतिरिक्त कुल पति डा श्याम सुंदर बेहुरा प्रमुख अतिथि के तौर पर उपस्थित थे।

एशियन गेम्स और विश्वविद्यालयीन स्पोर्ट्स में पदक जीतने वाले कीट खिलाड़ियों को किया गया सम्मानित

स्वर्ण पदक विजेता को कीट की ओर से ५ लाख रुपये,
रजत पदक विजेता को ३ लाख रुपये और कांस्य विजेता को २ लाख रुपये दिए गए

भुवनेश्वर, २२/१०: चीन के हांगझू में हाल ही में संपन्न हुए १९वें एशियाई खेलों और चेंग्दू में आयोजित ३१वें अन्तर्विश्व विश्वविद्यालयीन खेलों में पदक जीतने वाले कीट खिलाड़ियों को रविवार को कीट और कीस की ओर से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर ओलंपियन अनुराधा विश्वाल, ओडिशा महिला फुटबॉल टीम की कोच श्रद्धांजलि सामंतराय, ओलंपियन दुती चंद, भारत की सबसे तेज धावक अमिय मल्लिक, ओडिशा रग्बी एसोसिएशन के सचिव उपेंद मोहंती, कीट और कीस के संस्थापक प्रो अच्युत सामंत, कीट विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर शरणजीत सिंह, खेल महानिदेशक डॉ. गगनेंदु दाश प्रमुख ने पदक विजेताओं को सम्मानित किया।

एशियाई खेलों के स्वर्ण विजेता निशानेबाज तजिंदरपाल सिंह और भारतीय हॉकी टीम के रोहिदास को इस मौके पर सम्मानित करने के साथ साथ प्रत्येक को ५-५ लाख रूपये नकद राशि प्रदान किया गया। इसी तरह एशियाई खेलों में भाला फेंक रजत पदक विजेता किशोर कुमार जेना और डिकैथलॉन रजत पदक विजेता तेजस्विन शंकर को ३-३ लाख रुपये की प्रोत्साहन राशि प्रदान किया गया। वहीं अन्तर्विश्व विश्वविद्यालयीन खेलों में २० किलोमीटर पैदल चाल में कांस्य पदक विजेता प्रियंका और अम्लान बोगीहेन को २ लाख रुपये की प्रोत्साहन राशि प्रदान की गई।

इस मौके पर सम्मानित खिलाड़ियों ने ऐसे प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि कीट- कीस के संस्थापक प्रो अच्युत सामंत का खेल और खिलाड़ियों के प्रति असीम प्रेम कहीं और देखने को नहीं मिलता है। उन्होंने कहा कि वे स्वयं कीट विश्वविद्यालय के छात्र होने पर खुद पर गर्व महसूस करते हैं। उन्होंने कहा कि यह सम्मान उन्हें आने वाले दिनों में ओलंपिक में पदक जीतने के लिए प्रेरित करेगा। इस मौके पर खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करते हुए प्रो अच्युत सामंता ने कहा कि ओडिशा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक के नेतृत्व में राज्य सरकार हमेशा खेल और खिलाड़ियों को बढ़ावा देती रही है। प्रो अच्युत सामंत ने कहा कि राज्य सरकार का अनुसरण करते हुए कीट और कीस शिक्षा के साथ-साथ खेल और खिलाड़ियों को सभी प्रकार के प्रोत्साहन और सहायता प्रदान कर

रहे हैं। उन्होंने कहा कि अब तक कीट और कीस १५ ओलंपियन और ५ हजार से अधिक राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी तैयार किये हैं। इस मौके पर कीट विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सिंह ने कहा कि कीट और कीस जैसा खेल और खिलाड़ियों को प्रोत्साहन देने के मामले में ऐसा किसी अन्य विश्वविद्यालय देखने को नहीं मिलता। डॉ गगनेंदु दाश ने खिलाड़ियों की उपलब्धियों के बारे में जानकारी प्रदान करते हुए कहा कि १९वें एशियाई खेलों में कीट विश्वविद्यालय के १४ खिलाड़ी शामिल हैं और ३१ वें विश्व विश्वविद्यालयीन खेल में १४ खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया है। डॉ दाश ने जानकारी दी कि यह पहली बार है कि एक ही विश्वविद्यालय के इतने सारे खिलाड़ियों ने अंतर्राष्ट्रीय खेलों में भाग लिया है।

सोलर वर्ल्ड कांग्रेस में डॉ. अच्युत सामंत सम्मानित

सोलर एनर्जी सोसाइटी ऑफ इंडिया (एसईएसआई) ने शुक्रवार को नई दिल्ली में सोलर वर्ल्ड कांग्रेस २०२३ में KIIT और KISS के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत को सम्मानित किया। डॉ. सामंत को KIIT और KISS के माध्यम से हरित ऊर्जा के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए यह सम्मान प्रदान किया गया है। KIIT और KISS को पूरी तरह हरित परिसर बनाने और सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए उन्हें यह सम्मान दिया गया। भारतीय मौसम विभाग के महानिदेशक डॉ मृत्युंजय महापात्र की उपस्थिति में सोलर एनर्जी सोसाइटी ऑफ इंडिया के अध्यक्ष प्रफुल्ल पाठक डॉ. सामंत को यह सम्मान प्रदान किया।

इस अवसर पर, शिक्षा और सामाज सेवा के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में सौर ऊर्जा और हरित ऊर्जा को व्यापक रूप से बढ़ावा देने के लिए उन्होंने डॉ. सामंत की सराहना की। विश्व सौर कांग्रेस में सोलर एनर्जी सोसाइटी ऑफ इंडिया ने कहा, 'स्वच्छ, हरित और टिकाऊ भविष्य के लिए डॉ. सामंत के अटूट प्रयास

प्रेरणादायक हैं।' इससे पहले KISS के हरित प्रयासों के लिए २०१८ में तेहरान में एनर्जी ग्लोब फाउंडेशन द्वारा प्रतिष्ठित एनर्जी ग्लोब अवार्ड से KISS को सम्मानित किया गया था। इंटरनेशनल सोलर एनर्जी सोसाइटी (आईएसईएस) अक्टूबर ३० से ६ दिवसीय आईएसईएस सोलर वर्ल्ड कांग्रेस आयोजित कर रही है। इस कांग्रेस में ५० से अधिक देशों के कई वैज्ञानिक, शोधकर्ता, इंजीनियर, आर्किटेक्ट, औद्योगिक कंपनियों के प्रतिनिधि शामिल हुए हैं।

महादानी : मधुकुंजवाले सज्जन कुमार अग्रवाल

ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर के महादानी, मधुकुंज प्रोड्कट्स वाले सज्जन कुमार अग्रवाल का जन्म १४ नवंबर, बालदिवस के दिन हुआ था। सौम्यता तथा सादगी के यथार्थ आदर्श ७७वर्षीय श्री सज्जन कुमार अग्रवाल मधुकुंज उद्योग समूह के प्राणप्रतिष्ठाता तथा मधुकुंज-संयुक्त अग्रवाल-परिवार के प्रणेता हैं। श्री सज्जन कुमार अग्रवाल के पिताजी स्व.रामविलास अग्रवाल तथा माताजी स्व.नारायणी देवी अग्रवाल हरियाणा के शिवानी से१९५० में जटनी आये। १९५१ से जटनी से ही उन्होंने अपने व्यापार की शुरुआत की। जटनी में उन दिनों उनका खूब आदर-सम्मान था। उनकी आत्मीयता तथा सहृदयता से जुडी यादें जटनीवासियों के दिलों पर आज भी कायम है। उनका सदाचारी, परोपकारी, विशुद्ध शाकाहारी, जनहितकारी आध्यात्मिक जीवन सचमुच देखने लायक है।

वे समाज के बडे-बुजुर्ग से लेकर सभी कारोबारी, युवाउद्योगतियों के आदर्श हैं। कंपनी के निदेशक रामअवतार अग्रवाल के अनुसार उनके बडे भाई परम आदरणीय श्रीमान् सज्जन कुमार अग्रवाल अपने पूरे संयुक्त परिवार के दानवीर प्रणेता हैं। उनके अनुसार १०सितंबर,२०२१ को जब मधुकुंज-समूह का जटनी में प्रथम जेवेलरी तथा डायमण्ड शोरुम सीताराम चौक

पर खोला गया तो उसके प्राणप्रतिष्ठाता सज्जन कुमार अग्रवाल ने बताया कि जिस जटनी की मिट्टी, हवा और पानी में वे जन्म लिये हैं। जहां से वे पले-बढे और शिक्षित हुए हैं, इस लायक बनें हैं कि अब वे जटनी के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं। यह शोरुम उसी आत्मीयता को जीवित रखने का उनकी ओर से सफल प्रयास है। सज्जन कुमार अग्रवाल का

मानना है कि अगर वे किसी को एक हाथ से कुछ देते हैं तो उनके दूसरे हाथ को भी पता नहीं चल ता है। जटनी गोपीनाथ मंदिर में उन्होंने अपने माता-पिता की मधुर स्मृति में अति भव्य तथा अति सुंदर तोरणद्वार बनवाया है।१९६५ से लेकर आजतक का उनके निजी उद्योग-समूह की कामयाबी का सफर बिलकुल आसान नहीं था। वह सफर, कठोर संघर्षों तथा उनके धीरज की पल-पल की परीक्षा का सफर था। हर वक्त उन्हें अपने आत्मविश्वास की कठिनतम परिस्थिति से उन्हें गुजरना पडा था।

श्री बालाजी इसेंस इण्डस्ट्रीज के तहत मधुकुंज अगरबत्ती,पवन कंज्यूमर केअर के तहत बालाजी नारियल तेल, नेहा इण्टरप्राइजेज के तहत एवरग्रीन चाय तथा उषा इंस्ट्रीज के तहत स्वच्छ डिटरजेंट आदि का प्रोड्क्शन होता है। उन्होंने अपने निजी उद्योग-समूहों में सत्यनिष्ठा और आत्मविश्वास की नींव डाली है। उनका प्रत्येक स्टाफ उनका अपना परिवार है। अपने घर के सदस्य जैसा है। प्रतिदिन सभी कर्मचारियों को दिन का भोजन वे अपनी ओर से ससम्मान निःशुल्क उपलब्ध कराते हैं। भुवनेश्वर मारवाडी सोसायटी, भुवनेश्वर जटनी आपणो परिवार, जटनी गोपीनाथ मंदिर सेवासमिति जैसे अनेक संगठनों से जुडे श्री सज्जन कुमार अग्रवाल मधुकुंज उद्योग-समूह की असाधारण कामयाबी का श्रेय अपने सभी भाइयों, भतीजों, बेटों, बहुओं आदि को देते हैं। अपने जन्मदिन संदेश में वे कहते हैं कि सभी गोभक्त बनें, ईश्वरभक्त बनें और निःस्वार्थ मानवसेवी,समाजसेवी तथा लोकसेवी बनें। हाल ही में भारत की महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से उनकी शिष्टाचार मुलाकात ने यह सिद्ध कर दिया कि वे सचमुच दानवीर हैं जो प्रजापिता ब्रह्मकुमारी परिवार से लेकर सभी संस्थाओं को यथाशक्ति सहयोग देते हैं। उनके जन्मदिन पर उनको बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं।

अनन्य जगन्नाथ भक्त तथा हिन्दी विद्वान अशोक पाण्डेय को मिला ओडिशा राज्य स्तरीय प्राणनाथ मेमोरियल अवार्ड:२०२३

स्थानीय जयदेवभवन में सायंकाल राज्य प्राणनाथ मेमोरियल की ओर से प्राणनाथ मेमोरियल अवार्ड:२०२३ का आयोजन हुआ। समारोह के मुख्यअतिथि के रुप में छत्तीसगढ राज्य के मान्यवर राज्यपाल श्री विश्वभूषण हरिश्चन्दन,सम्मानित अतिथि के रुप में कीट-कीस-कीम्स के संस्थापक तथा कंधमाल लोकसभा सांसद प्रो.अच्युत सामंत,सम्मानित अतिथि श्री आतनु सब्यसाची नायक, ओडिशा सरकार के मंत्री उच्च शिक्षा, फुडसप्लाई एण्ड कंज्यूमर्स वेलफेयर तथा सहकारिता तथा सम्मानित अतिथि के रूप में दीपक मालवीय,नेशनल उपाध्यक्ष, लोकसेवक मण्डल, नई दिल्ली आदि ने योगदान दिया। कार्यक्रम का आरंभ स्वर्गीय प्राणनाथ पटनायक की तस्वीर पर माल्यार्पण कर तथा परम्परागत दीपप्रज्ज्वलन कर किया गया।

अवसर पर अनन्य जगन्नाथ भक्त तथा हिन्दी विद्वान अशोक पाण्डेय समेत ओडिशा की अन्य चार विभूतियों-

असित महंती, प्रख्यात ओडिया लेखक, प्रह्लाद कुमार सिंह, मशहूर गांधीवादी, प्रणव दास, सुविख्यात ओडिया फिल्म निदेशक तथा समाजसेविका रोजलीन पाटशाणी मिश्रा को उनके उल्लेखनीय असाधरण सहयोग हेतु प्राणनाथ मेमोरियल अवार्ड:२०२३ प्रदान किया गया। अपनी प्रतिक्रिया में अशोक पाण्डेय ने बताया कि यह एवार्ड उनके लिए खास इसलिए है कि स्वर्गीय प्राणनाथ पटनायक ओडिशा शिक्षाजगत को नई दिशा प्रदान करनेवाले महापुरुष थे, स्वतंत्रता सेनानी थे। समारोह की अध्यक्षता दीपक मालवीय ने की जबकि मेमोरियल की वार्षिक रिपोर्ट दिलीप हाली, मेमोरियल के सचिव ने पढी। स्वागतभाषण दिया मेजर खिरोद प्रसाद महंती तथा मंचसंचालन किया डॉ मृत्युंजय रथ ने।

सम्पन्नता, प्रसन्नता और प्रपन्नता...

प्रसन्नता से हमारे अन्दर सकारात्मक ऊर्जा पैदा होती है जिससे हमारे कार्य करने की क्षमता और अधिक बढ होती है और हम मानसिक रूप से समृद्धि हो जाते हैं। एक बात अवश्य है कि प्रसन्नता का संपन्नता से कोई संबंध नहीं है। मोह-माया के बंधन बड़े विचित्र होते हैं लेकिन यब अज्ञान जनित भ्रम होता है और कुछ भी नहीं होता है। इसीलिए माया को महाठगिनी कहा गया है। अगर यह कहा जाय कि यह मोह माया वृक्ष की छाया की तरह होती है। छाया का जिसप्रकार अपना कोई निजी अस्तित्व नहीं होता ठीक उसीप्रकार माया का भी नहीं होता है। अज्ञानता का वृक्ष स्वयं अंकुरित होता है। इसे दूर करने के लिए हमें सांसारिक सुखों का त्याग करना होता। इसलिए हमें सकारात्मक सोच के साथ आपसी प्रेम, सद्भाव, मैत्री, परोपकार और अहिंसा आदि को अपनाना होगा और उसके लिए भी प्रपन्नता की नितांत आवश्यकता है।

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में सभी प्रकार से संपन्न तथा प्रसन्न रहना चाहता है। सृष्टि के आरंभ से देवता, मानव और दानव अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष की कामना करते रहे है और उपर्युक्त चारों ऐश्वर्यों की प्राप्ति ही उनके जीवन का लक्ष्य रहा। हमारे वेद, पुराण, उपनिषद, रामायण, महाभारत और गीता में भी मनुष्य को शारीरिक और मानसिक रुप से प्रसन्न रहने के लिए भगवान विष्णु ने, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने तथा रसिकशिरोमणि श्रीकृष्ण ने संपन्नता और प्रसन्नता की प्राप्ति के लिए प्रपन्नता को अपनाने का पावन संदेश दिया है। सप्त ऋषियों ने भी यही संदेश दिया है। प्रपन्नता का अभिप्राय ईश्वर की शरणागति, एकमात्र ईश्वर का सहारा और पूर्णरुप से उनमें अटूट विश्वास है। प्रपन्नता में किसी प्रकार के अहंकार की जगह बिल कुल ही नहीं होती है। ईश्वर के सामने आत्मसमर्पण होता है। ये तीनों आशीर्वाद सत्युग, त्रेता, द्वापर तथा कलियुग में ऋषि-मुनियों ने भगवान विष्णु, श्रीराम, श्रीकृष्ण तथा जगन्नाथ को दी। कलियुग में तो पुरी धाम के एकमात्र पूर्ण दारुब्रह्म भगवान जगन्नाथ अपने चतुर्धा देवविग्रहः जगन्नाथ, सुभद्रा, बलभद्र तथा सुदर्शन के रुप में क्रमशः चारों वेदों ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्वेद के रुप में अपने रत्नसिंहासन पर जीवित वेद रुप में विराजमान हैं।

रामराज बैठे त्रैलोका।
हरषित भये गये सब सोका।।
बयस न कर काहू सन कोई।
रामप्रताप विषमता खोई।।
यही नहीं, दैहिक, दैविक, भौतिक तापा।
रामराज काहु नहीं व्यापा।।
सब नर करहिं परस्पर प्रीती।
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती।।

-कारण राजा रामचन्द्र सभी प्रकार के प्रकोपों पर विजय पा लिये थे और उनकी प्रजा वेदों द्वारा बताई गई नीति (मर्यादा) में रहकर अपने-अपने धर्म का पालन करती थी। प्रजा के पास सम्पन्नता, प्रसन्नता और प्रपन्नता थी। आज भी ऐसा देखा जाता है कि सकारात्मक सोचवाले व्यक्ति का आध्यात्मिक जीवन पूरी तरह से सम्पन्नता, प्रसन्नता और प्रपन्नता पर ही आधारित होता है। प्रसन्नता से कई बीमारियों का इल ाज सम्भव है। डॉक्टरों के अनुसार मन और मस्तिष्क के विकारी तत्वों को दूर करने में प्रसन्नता सहायक सिद्ध होती है। एक छोटी-सी मुस्कान आपसी रिश्तों को प्रगाढ़ बना देती है। राम, कृष्ण और जगन्नाथ सदा प्रसन्न रहते हैं और प्रसन्नता का पावन संदेश भी देते हैं। महाभारत की लडाई की कथा पर अगर विचार करें तो यह बात पूरी तरह से स्पष्ट हो जाती है।

प्रसन्नता से हमारे अन्दर सकारात्मक ऊर्जा पैदा होती है जिससे हमारे कार्य करने की क्षमता और अधिक बढ होती है और हम मानसिक रूप से समृद्धि हो जाते हैं। एक बात अवश्य है कि प्रसन्नता का संपन्नता से कोई संबंध नहीं है। मोह-माया के बंधन बड़े विचित्र होते हैं लेकिन यब अज्ञान जनित भ्रम होता है और कुछ भी नहीं होता है। इसीलिए माया को महाठगिनी कहा गया है। अगर यह कहा जाय कि यह मोह माया वृक्ष की छाया की तरह होती है। छाया का जिसप्रकार अपना कोई निजी अस्तित्व नहीं होता ठीक उसीप्रकार माया का भी नहीं होता है। अज्ञानता का वृक्ष स्वयं अंकुरित होता है। इसे दूर करने के लिए हमें सांसारिक सुखों का त्याग करना होता। इसलिए हमें सकारात्मक सोच के साथ आपसी प्रेम, सद्भाव, मैत्री, परोपकार और अहिंसा आदि को अपनाना होगा और उसके लिए भी प्रपन्नता की नितांत आवश्यकता है।

यह भी सच है कि मनुष्य जीवन की सार्थकता चार ऐश्वर्यों-अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष की प्राप्ति में है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम प्रारब्धानुसार १४ वर्षों की वनवास की सजा का पूर्ण आनंद और प्रसन्नता के साथ भोगकर जब अयोध्या वापस लौटे तो उनका राज्याभिषेक साथ-साथ हुआ। कुलगुरु वसिष्ठ ने यह सुझाव दिया कि राजा राम के राज्याभिषेक के लिए शुभ घडी अभी ही है और मर्यादा पुरुषोत्तम अयोध्यापति श्रीराम राजाधिराज बने तो अयोध्यावासियों ने खुशी में घर-घर में घी के दीये जलाये। दीपावली मनाई। कुलगुरु वशिष्ट ने सभी को संपन्नता, प्रसन्नता तथा प्रपन्नता का दिव्य आशीष दिया।

प्राचीन यूनानी विचारक प्लेटो ने तो प्रसन्नता को मानवीय गुण बताया है। उसका यह मानना था कि मानव संपूर्ण रूप से प्रसन्न उसी समय होता है, जब उसकी आत्मा भविष्य जीवन की ओर लौट जाती है। अरस्तू ने भी प्रसन्नता को ईश्वर का मानव के लिए अनुपम उपहार बताया है। वेदों, पुराणों, महाभारत, रामायण और गीता के अनुसार प्रसन्नता पांच प्रकार ही होती हैः शारीरिक, भौतिक, मानसिक, बौद्धिक तथा स्वेच्छिक होती है जैसाकि कालजयी रचना रामचरितमानस के रचनाकार गोस्वामी तुलसीदास स्वयं कहते है -स्वांतः सुखाय रघुनाथ गाथा। कलियुग में भगवान जगन्नाथ भी पुरी धाम में अपने रत्नसिंहासन से अपनी दिनचर्या जैसे ५६प्रकार के भोग, प्रतिदिन अनेकानेक श्रृंगार करके, वर्ष में १३ यात्राएं करते तथा प्रतिवर्ष देवस्नानपूर्णिमा के दिन महास्नानकर, आषाढ शुक्ल द्वितीया को अपनी विश्वप्रसिद्ध रथयात्रा कर, अपनी बाहुडायात्रा कर, अपने सोनावेष धारणकर तथा अपनी नीलाद्रिविजय के माध्यम से स्वांतः सुखाय के माध्यम से भक्त-मानव को संपन्नता, प्रसन्नता तथा प्रपन्नता (दोनों हाथ ऊपर कर उनका वंदन और अभिनंदन करने का पावन संदेश देते हैं।

-अशोक पाण्डेय

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

प्रतियोगिता नंबर-७७

सभी के लिए सुनहरा अवसर!

दीजिए आसान से सवालों का जवाब और

जीतिये 1,000/- का नकद इनाम!

प्रश्न १: तापीय वैधुत केन्द्र का प्रमुख गैसीय प्रदूषक क्या है ?

किसी जीवित शरीर मै कोशिका या उतक की म्रत्यु को क्या कहते है ?

प्रश्न २: भारत का पहला नगर निगम कहा स्थापित हुआ ?

प्रश्न ३: सोडियम बाई काबीनेटका व्यपारिक नम क्या है ?

प्रश्न ४: दिल्ली चलो का नारा किसने दिया ?

प्रश्न ५: दांडी यात्रा कब प्रारंभ हुई ?

प्रश्न ६ : माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली पहली भारतीय महिला कोन थी ?

प्रश्न ७ : भूकंप की तीब्रता मापने के लिए किस पैमाने एवं उपकरण का प्रयोग किया जाता है ?

प्रश्न ८ : किस भारतीय राज्य की तट रेखा (कोस्टल लाइन)सबसे लम्बी है ?

प्रश्न ९ : भरतीय संविधान में राज्य नीति के निर्देसक सिद्धांत किस राष्ट्र के संविधान से लिए गए है ?

प्रश्न १०: भारत का फ्लुयिंग सिक्ख किसे कहते है ?

प्रश्न ११: वायु मंडल की सबसे निचली परत कोनसी है ?

प्रश्न १२: जल पोत निर्माण में विश्व में प्रथम स्थान किस राष्ट्र का है ?

प्रश्न १३: ताप विपयन्य आप क्या समझते है ?

प्रश्न १४: नर्मदा और ताप्ती नदियो के बीच कोनसी पहाडिया स्थित है ?

प्रश्न १५ : किम्बरले किसके उत्तपादन के लिए प्रसिद्ध है ?

आपके द्वारा सही जवाब की पहेली इस माह की २५ तारीख तक डाक द्वारा हमारे कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए। भरी गयी पहेली का रिजल्ट लॉटरी सिस्टम द्वारा निकाला जाएगा। विजेता के नाम और सही हल अगले माह के अंक में प्रकाशित किये जाएंगे। परिजन विजेता बच्चे का फोटो व उसका पहचान पत्र लेकर हमारे कार्यालय में आएं और मुंबई के बाहर रहने वाले विजेता अपने पहचान पत्र की सत्यापित प्रति डाक या मेल से निम्न पते पर भेजें।

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. ,
Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
mangsom@rediffmail.com
Website: swarnimumbai.com

नामः.....

पूरा पताः .....

.....

.....

.....

फोन नं.: .....

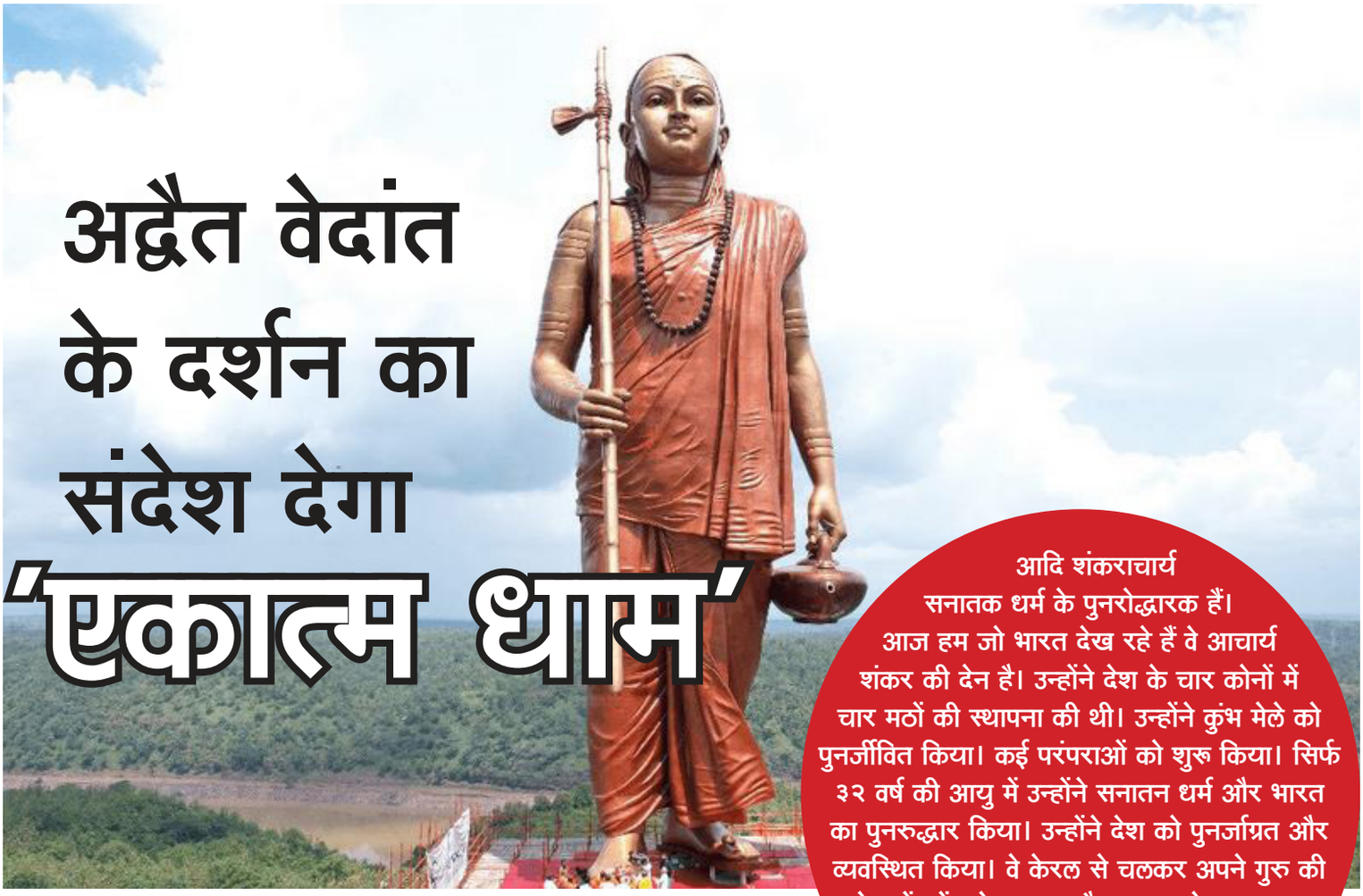

अद्वैत वेदांत के दर्शन का संदेश देगा 'एकात्म धाम'

आदि शंकराचार्य सनातक धर्म के पुनरोद्धारक हैं। आज हम जो भारत देख रहे हैं वे आचार्य शंकर की देन है। उन्होंने देश के चार कोनों में चार मठों की स्थापना की थी। उन्होंने कुंभ मेले को पुनर्जीवित किया। कई परंपराओं को शुरू किया। सिर्फ ३२ वर्ष की आयु में उन्होंने सनातन धर्म और भारत का पुनरुद्धार किया। उन्होंने देश को पुनर्जाग्रत और व्यवस्थित किया। वे केरल से चलकर अपने गुरु की खोज में ओंकारेश्वर तक पैदल आए थे। इस घटना का हमारे लिए बड़ा महत्व है। इसी कारण से इस बड़े प्रोजेक्ट के लिए ओंकारेश्वर को चुना गया है।

आदि शंकराचार्य ने सनातन धर्म की ऐसी व्याख्या कि जिससे पूरी दुनिया अभी तक अभीभूत है। वर्तमान में सनातन धर्म के स्वरूप की परिकल्पना आदि शंकराचाङ्मर्य ने की थी। उसी का अभी तक हमारे समाज में अनुपालन किया जा रहा है। इस प्रोजेक्ट के असिस्टेंड प्रोग्राम ऑफिसर आशुतोष सिंह ठाकुर ने कहा कि यह प्रोजेक्ट ओंकारेश्वर के एकात्म धाम में बन रहा है। ये भूमि आदि शंकराचाङ्मर्य की ज्ञान भूमि है। इस जगह को अद्वैत वेदांत का एकात्मता का वैश्विक केंद्र बनाया जा रहा है। सीएम शिवराज के संकल्प से इसे जमीन पर उतारा जा रहा है। इसमें आदि शंकराचाङ्मर्य की १०८ फीट ऊंची प्रतिमा, अद्वैत लोक, संग्रालहय और आचार्य शंकर अंतरराष्ट्रीय अद्वैत वेदांत संस्थान का निर्माण कराया जाएगा। इसके माध्यम से अद्वैत वेदांत और भारतीय दर्शन का विश्व में प्रचार प्रसार किया जा सकेगा। इसी कारण से इसको यहां पर बनाया जा रहा है।

इस प्रतिमा की मजबूती पर खास ख्याल रखा गया है। इस प्रतिमा का अगले ५०० सालों तक कुछ नहीं बिगड़ेगा। इस प्रतिमा के दर्शन काफी दूर से किए जा सकेंगे। सरकार ने देखा कि उज्जैन में महाकाल लोक बनने के बाद से उस इलाके में आर्थिक गतिविधियां काफी तेज हुईं। इसी कारण से ऐसे और प्रोजेक्ट बनाए जा रहे हैं। जो कि आध्यात्मिकता के साथ ही लोगों को रोजगार देने का भी काम करें। जब यह पूरी तरह से बनकर तैयार हो जाएगा तो निश्चित रूप से ओंकारेश्वर में भी आर्थिक गतिविधियां तेज होंगी। सबसे खास बात है कि इससे यहां के लोगों के कमाई के नए साधन बनते हैं। इससे आसपास के इलाकों को भी फायदा होगा।

आदि शंकराचार्य ने भारत को अपने परम वैभव पर पुनः स्थापित किया था। वे सनातक धर्म के पुनरोद्धारक हैं। आज हम जो भारत देख रहे हैं वे आचार्य शंकर की देन है। उन्होंने देश के चार कोनों में चार मठों की स्थापना की थी। उन्होंने कुंभ मेले को पुनर्जीवित किया। कई परंपराओं को शुरू किया। सिर्फ ३२ वर्ष की आयु में उन्होंने सनातन धर्म और भारत का पुनरुद्धार किया। उन्होंने देश को पुनर्जाग्रत और व्यवस्थित किया। वे केरल से चलकर अपने गुरु की खोज में ओंकारेश्वर तक पैदल आए थे। इस घटना का हमारे लिए बड़ा महत्व है। इसी कारण से इस बड़े प्रोजेक्ट के लिए ओंकारेश्वर को चुना गया है।

इस प्रोजेक्ट के बारे में बताते हुए मध्य प्रदेश के पर्यटन और संस्कृति मंत्रालय के प्रमुख सचिव शिव शेखर शुक्ला ने कहा कि इस प्रोजेक्ट से न केवल पर्यटन बल्कि सरकार के द्वारा किया जा रहा सांस्कृतिक पुनरुद्धार का काम भी होगा। अद्वैत वेदांत के प्रति आस्था रखने वाले लोगों के लिए यह ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक केंद्र के रूप में उभरेगा। यह स्थान आने वाले समय में देश-विदेश के लोगों को आकर्षित करेगा। जब काफी समय संख्या में बाहर से लोग यहां पर आएंगे तो निश्चित रूप से स्थानीय लोगों को आर्थिक रूप से फायदा होगा। शंकराचार्य की अखंड भारत की यात्रा ओंकारेश्वर से शुरू हुई थी। ओंकारेश्वर ऐसा धाम हैं जहां उनको गुरु पद प्राप्त हुआ। मध्य प्रदेश को यह गौरव प्राप्त हैं कि इसने ही एक ब्रह्मचारी को आदि शंकर के रूप में स्थापित किया। शंकराचार्य की अखंड भारत की यात्रा के स्थानों को चिन्हित किया जा रहा है और उनको जोड़ा जा रहा है। उन जगहों को चिन्हित करके सार्वभौमिक एकात्मता के संदेश को देकर अखंड भारत को जोड़ा रहा है। इसमें अखंड भारत के साथ ही साथ अखंड विश्व की संकल्पना भी शामिल है।

एमपी के सांस्कृतिक विभाग के ऑफिस इंचार्ज डा शैलेंद्र मिश्रा ने कहा कि यह प्रोजेक्ट करीब १२६ हेक्टेयर लैंड में फैला है। इसमें १२ हेक्टेयर में संग्राल हय बनेगा। ३५ हेक्टेयर में आचार्य शंकर अंतरराष्ट्रीय अद्वैत वेदांत संस्थान है। पहले चरण में आचार्य शंकर की मूर्ति जिसे हमने 'स्टैच्यू और वननेस' कहा है।

Ram Creations
Jewelry & Gifts
28974 Orchard Lake Rd, Farmington Hills | ramcreations.com | (248) 851-1400

WORLD PLAYER
WORLD PLAYER MENSWEAR
MEGABUY ₹149-499
SAVE ₹ 100
MENS 100% CORDUROY 16 WALE WASHED SHIRTS MRP ₹ 599
MEGABUY ₹ 499
SAVE ₹ 100
MENS 100% COTTON SEMI FORMAL SHIRTS MRP ₹ 599
MEGABUY ₹ 499
SAVE ₹ 100
MENS FORMAL TROUSERS MRP ₹ 699
MEGABUY ₹ 599

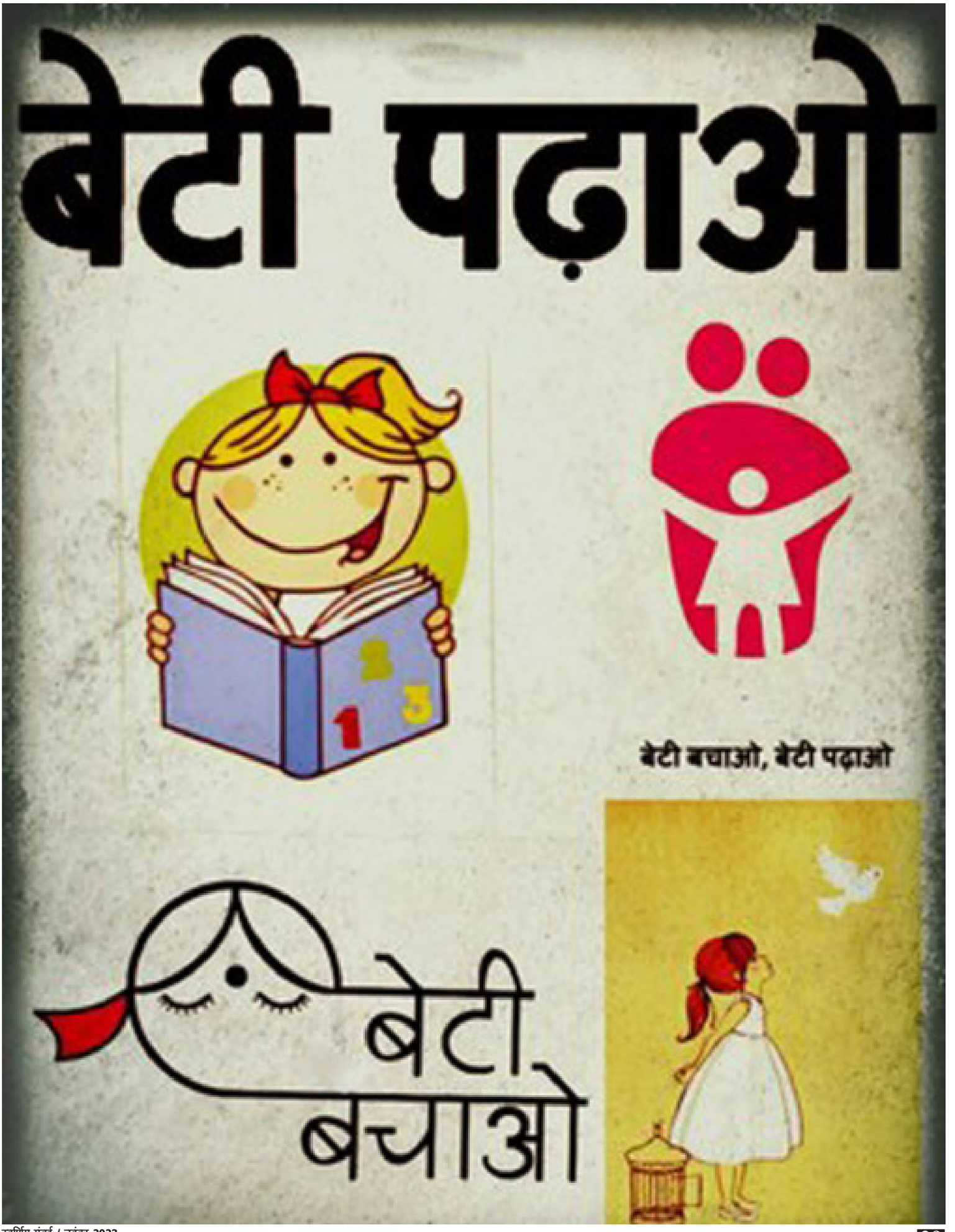

बेटी पढ़ाओ
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
बेटी बचाओ

मंगलसूत्र

मैनेजर ने धीरे से पेन खोलकर दीपक की तरफ बढ़ाते हुए मानो अपनी सारी दिरयादिली उंडेल दी - 'यस, यस मिस्टर दीपक डोन्ट बी होपलेस... भई अभी तो बहुत कुछ करना है.... जॉब परमानेन्ट हो जाए, फिर लाइफ सेटल्ड हो जाएगी. देखो इस जॉब के लिए मैंने ही तुम्हारे लिए कोशिश की है. यह समझ लो सेक्रेटरी साहब के रिश्तेदार को मैंने ही टाल दिया. और इसी वजह से वो मेरे से नाराज भी हो गए... पर क्या करें? सहयोग तो तुम्हें ही करना था मुझे... फिर जॉब परमानेंट करने के लिए भी ग्राउन्ड बना रहा हूँ... बस डोनेशन का प्रबन्ध तुम... यस, यस राइट, फिल द फुल अमाउन्ट हियर एण्ड साइन हियर... परमानेन्ट होते ही फुल पे तो लेना ही है आपको.' दीपक ने बुझे मन से मैनेजर के निर्देश का पालन किया. उधर मैनेजर ने दराज में रखे बाकी नोटों को अपनी जेब के हवाले किया और कहा- 'देखो, अब तुम परमानेंट होने के लिए प्रबन्ध कर ही लो. ऊपर पैसा देना पड़ेगा तभी स्थाई हो सकेंगे आप...

चिलचिलाती गर्मी के सन्नाटे ने एक रहस्यमयी उदासी की मानिन्द पूरे वातावरण को घेर रखा था. विचित्र सी उखड़ी-उखड़ी तनहाई... आसमान में बादलों के छोटे-छोटे टुकड़े... हवा न चलने के तारण कहीं-कहीं स्थिर से चुपचाप पड़े थे. सूरज अत्यंत तेजी से चमक रहा था, ऐसा लग रहा था मानों आकाश मार्ग का यह जलता अग्रियात्री अत्यंत उग्र हो उठा हो. इस भयानक दहकते मौसम की गर्मी से दीपक के शरीर का प्रत्येक अंग झुलस-सा रहा था. उसे यह अहसास हो रहा था...

इस झुलसती गर्मी से न सही, पर विषम परिस्थितियों से उत्पन्न खिन्नता से उसकी पत्नी व दो बच्चे अवश्य ही ग्रसित थे. ... दो साल से वह एक अर्ध-सरकारी प्रतिष्ठान में सुपरवाइजर के पद पर अस्थाई रूप से नौकरी कर रहा था. यह नौकरी उसे एक सिफारिसी-पत्र के आधार पर मिली थी. जिस समय वह इंजीनियरिंग का डिप्लोमा कोर्स कर रहा था तभी उसके पिता ने उसका विवाह करवा दिया था, क्योंकि दीपक की मां की मृत्यु के पश्चात् कोई स्त्री घर में नहीं थी जो घर को संभाल लेती. परन्तु ट्रेनिंग पूरी होते-होते ही उसके पिता भी चल बसे थे.

दो बच्चे और पत्नी, उसका परिवार. समस्याओं की दरिया में बहता डूबता दीपक लगातार प्रयासरत रहने पर भी उसकी नौकरी स्थाई नहीं हो पा रही थी. उसे लग रहा था कि संस्था के

प्रबंधक की कार्यवाहियाँ कतई उसके विरोध में है. उसकी शर्तें न मारती है, न जिलाने के प्रति ही आश्वस्त करती है. बहुत चुपके से व्यवस्था उसका गला धीरे-धीरे लेत रही है और वह निरीह मुँह बाये पशु की मानिन्द चुपचाप अपनी हत्या होते देख रहा है. लगातार दो साल से वह मात्र आधे वेतन पर गुजर-बसर कर रहा था. जब एक सिफारिशी चिट्ठी लेकर प्रतिष्ठान के मैनेजर के पास पहुँचा था, तो मैनेजर साहब एक चालबाज बुद्धिजीवी की भांति सिर से पैर तक उसे देखते हुए बोले थे- 'देखिए, आज राज या मिस्री भले ही न मिल पाएँ, उन्हें ढूंढना पड़ सकता है, परन्तु, ये डिग्री, सार्टिफिकेट वाले मारे मारे फिर रहे हैं. इनको नौकरियां नहीं मिल पा रही हैं. बहुत बड़ी तादाद में आज हमारे देश में ये डिग्रीधारी बगल में

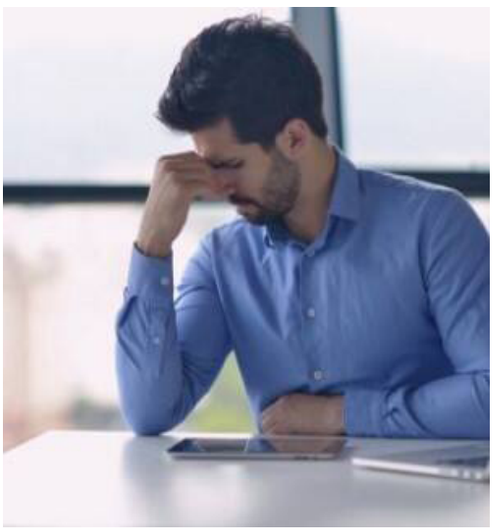

डिग्रियाँ व सर्टिफिकेट दबाए नौकरी की तलाश में फिर रहे हैं, पर उन्हें नहीं मिल पाती नौकरी...'

बेकारी, बेरोजगारी ने उसे अच्छी तरह समझा दिया था कि डिग्रियाँ, सर्टिफिकेट्स, बिना नौकरी रे दो कौड़ी के बराबर भी नहीं होते... वह हारा-सा चुप खड़ा रहा था. मैनेजर साहब उसके चेहरे की दीनता से द्रवित होकर बोले थे - 'आप फिक्र मत कीजिए. मैं व्यवस्था कर लूंगा. स्थाई होने का इन्टरव्यू तो केवल दिखावा है... बस डोनेशन के तौर पर दस हजार रुपए तो देने ही होंगे... आपको...'

उसके पैर तले की जमीन खिसकती मालूम हुई थी. दस हजार? दस हजार की व्यवस्था नहीं हो पा रही थी और दो साल से लगातार मैनेजर की जेब में उसका आधा वेतन बड़ी आसानी से चला जाता रहा था. हर माह की तरह मैनेजर

ने इस माह भी दीपक को अपने केबिन में बुला भेजा... होठों पर मुस्कुराहट बिखेरते हुए बड़े ही शांत लहजे में उन्होंने दीपक को सामने की कुर्सी पर बैठाते हुए अपनी मेज की दराज से एक रजिस्टर निकाल लिया और कुछ नोट उसे सौंपते हुए सहजता से बोलने लगे 'यह लो भई अपना वेतन - और इस पर अपने हस्ताक्षर कर दो...'

दीपक ने इस बार फिर देखा - रजिस्टर पर दर्ज रकम उसके हाथ की रकम से दुगुनी है. उसे लगा वह किसी सामन्ती युग में जी रहा है.... उसने अब तक सोचा था कि चलो आधे वेतन में सही, स्थाई होने के लिए ग्राउन्ड तो बन रहा है. वैसे मैनेजर साहब अभी तक यही कोशिश करते रहे हैं कि कोई अस्थाई कर्मचारी स्थाई न होने पाए. वे आलाअधिकारियों को समझाते रहे हैं 'काम तो चल ही रहा है - बेमतलब 'फुल-पे-स्केल' देने से क्या फायदा...? प्रतिष्ठान की आर्थिक स्थिति वैसे ही खराब है...' आलाअधिकारियों को इतनी फुर्सत नहीं थी कि वे स्थाई-अस्थाई के झमेले में पड़ते. परंतु वह मैनेजर द्वारा निर्धारित 'डोनेशन' की राशि वह कहाँ से जुटाता?

दीपक को सोच-विचार में मग्न देख मैनेजर साहब बोले, 'मुझे जो तजुर्बा है, तुम्हें नहीं है... समझो बात को... जो मिल रहा है उसे प्रभु का प्रसाद समझ कर ग्रहण करो. बोलो नहीं. नहीं तो यह अस्थाई नौकरी भी जाती रहेगी. यह समझ लो बस... समझदार को क्या कहते हैं... - इशारा ही बहुत है...' इतना कह कर मैनेजर शान्त हो गया, पर चश्मे के अन्दर से चमकती उसकी मोटी-मोटी आँखें दीपक के चेहरे को घूरती रहीं...

दीपक के चेहरे की उभरती नसों से बन्धी डोरियों से परेशानी की कितनी ही प्रतिक्रियाएँ बन्धी सी लगने लगी... उसके चेहरे का उड़ा हुआ रंग, बदहवासी, क्रोध तथा याचना की मिली-जुली भावनाएँ... और अन्त में परिस्थिति से लाचार समर्पण. कहीं ये टेम्परेरी जॉब भी हाथ से चला गया तो क्या होगा. बच्चे? पत्नी?... उसी समय मैनेजर ने धीरे से पेन खोलकर दीपक की तरफ बढ़ाते हुए मानो अपनी सारी दिरयादिली उंडेल दी - 'यस, यस मिस्टर दीपक डोन्ट बी होपलेस... भई अभी तो बहुत कुछ करना है.... जॉब परमानेन्ट हो जाए, फिर लाइफ सेटल्ड हो जाएगी. देखो इस जॉब के लिए मैंने ही तुम्हारे लिए कोशिश की है. यह समझ लो सेक्रेटरी साहब के रिश्तेदार को मैने ही टाल दिया. और इसी वजह से वो मेरे से नाराज भी हो गए... पर क्या करें? सहयोग तो तुम्हें ही करना था मुझे... फिर जॉब परमानेंट करने के लिए भी ग्राउन्ड बना रहा हूँ... बस डोनेशन का प्रबन्ध तुम... यस, यस राइट, फिल द फुल अमाउन्ट हियर एण्ड साइन हियर... परमानेन्ट होते ही फुल पे तो लेना ही है आपको.'

दीपक ने बुझे मन से मैनेजर के निर्देश का पालन किया. उधर मैनेजर ने दराज में रखे बाकी नोटों को अपनी जेब के हवाले किया और कहा- 'देखो, अब तुम परमानेंट होने के लिए प्रबन्ध कर ही लो. ऊपर पैसा देना पड़ेगा तभी स्थाई हो सकेंगे आप... मेरा सहयोग तो पूरा है ही आपको ... इसलिए चिन्ता की कोई बात नहीं. ऊपर वाले सब अपनी सुनते हैं, पर पैसे पर बात अटक जाती है आकर... हा... हा... हा... ' मैनेजर के फूले हुए जेब में अपने परिश्रम की कमाई को निरीह भाव से देखता हुआ दीपक बाहर आ गया. वह इस प्रकार बेजान-सा हो रहा था मानों कोई जबरदस्त लुटेरा किसी बेबस इन्सान का पिस्तौल की नोक पर सब कुछ लूट कर उसे आतंकित करके छोड़ देता है... उसे अब फिक्र सताने लगी परमानेन्ट होने की. वह इतनी बड़ी रकम कहां से लाएगा? उसे अपनी आँखों में जलन और सिर में चक्कर का अहसास हुआ और वह वहीं मैदान पर बिछी बेन्च पर सिर पकड़ कर बैठ गया.

उसने अपना घर पहले ही पढ़ाई पूरी करने में तथा नौकरी की तलाश में गिरवी रख छोड़ा था. अब इतना पैसा फिर कहाँ से लाएगा? अरसे से पत्नी बीमार चल रही थी. वह नगर पालिका के अस्पताल में खैराती दवा से तो कभी वैद्य जी का चूर्ण गटक कर संतोष कर रही थी. दीपक यह सब देखता था, समझता था कि इस प्रकार इलाज कराना केवल मन को सांत्वना देना मात्र है. इससे क्या होता है? पत्नी, पति तथा मासूम बच्चों के चलते अपनी असह्य पीड़ा को मानों पी जाती थी और कृत्रिम मुस्कुराहट के साथ पति की हिम्मत को बढ़ाने की कोशिश करती, ताकि उसका जॉब

(शेष पृष्ठः ५१ पर)

हर माह की तरह मैनेजर ने इस माह भी दीपक को अपने केबिन में बुला भेजा... होठों पर मुस्कुराहट बिखेरते हुए बड़े ही शांत लहजे में उन्होंने दीपक को सामने की कुर्सी पर बैठाते हुए अपनी मेज की दराज से एक रजिस्टर निकाल लिया और कुछ नोट उसे सौंपते हुए सहजता से बोलने लगे 'यह लो भई अपना वेतन - और इस पर अपने हस्ताक्षर कर दो...' दीपक ने इस बार फिर देखा - रजिस्टर पर दर्ज रकम उसके हाथ की रकम से दुगुनी है. उसे लगा वह किसी सामन्ती युग में जी रहा है.... उसने अब तक सोचा था कि चलो आधे वेतन में सही, स्थाई होने के लि ए ग्राउन्ड तो बन रहा है. वैसे मैनेजर साहब अभी तक यही कोशिश करते रहे हैं कि कोई अस्थाई कर्मचारी स्थाई न होने पाए. वे आलाअधिकारियों को समझाते रहे हैं 'काम तो चल ही रहा है - बेमतलब 'फुल-पे-स्केल' देने से क्या फायदा...? प्रतिष्ठान की आर्थिक स्थिति वैसे ही खराब है...' आलाअधिकारियों को इतनी फुर्सत नहीं थी कि वे स्थाई-अस्थाई के झमेले में पड़ते. परंतु वह मैनेजर द्वारा निर्धारित 'डोनेशन' की राशि वह कहाँ से जुटाता?

COMPLETE SOLUTION FOR KNEE PAIN BY
Dr. Ortho
M.R.P. ₹731
OFFER PRICE
₹449

FW16 PACK OF 3
MEN'S SANDAL
MRP ₹999/-
SHOP NOW
₹499/-
•COMFORTABLE •STYLISH •DURABLE •ANTI SKID & SLIP RESISTANT •LIGHT WEIGHT •COMFORTABLE

Kitchen Queen
36 PCS
DESIGNER DINNER SET
MRP ₹2,500/-
SHOP NOW ₹999/-
6 FULL PLATES
6 QUARTER PLATES
12 CURRY BOWLS
4 PCS SERVING BOWLS WITH LID
2 SERVING SPOONS
6 SPOONS
•ELEGANT FLORAL DESIGN •EYECATCHY COLOURS •IMPORTED FOIL PRINTING - DOES NOT COME OFF EASILY
•BPA FREE FOOD GRADE MATERIAL •BREAK RESISTANT •EASY TO CLEAN

NELCON
10 PCS STEEL
PUSH & LOCK BOWL SET
- Transparent Lid
SHOP NOW
MRP ₹1,500/- ₹499/-
•Air Tight Containers •Keeps Your Food Fresh
•Multipurpose food storage option
•100 % Food Grade Stainless Steel
•See through transparent Lid •Easy Grip
•Leak Proof •Carry As lunch Box •Fridge Friendly

पेड़ लगाओ, जीवन बचाओ

पेड़-पौधे मत करो नष्ट,
साँस लेने में होगा कष्ट

ठूंठ में कोंपल

रीना मलिक को पच्चीस वर्ष की वय तक किसी से प्यार नहीं हुआ था और इस बात का उसे बहुत अभिमान था. उसका मानना था कि शादी के पहल ` का प्यार-प्यार नहीं होता, बल्कि वासना होती है, महज शारीरिक आकर्षण होता है. युवक और युवती एक अनैतिक और अमर्यादित संबन्ध को प्यार का नाम देकर केवल अपनी शारीरिक भूख शान्त करते हैं...बस!

बड़ी अजीब बात थी कि एक सुन्दर और जवान ल इकी का परिपक्व उमर तक किसी लड़के को देखकर दिल नहीं धड़का था, किसी की तरफ उसने लाल सा भरी नजरों से नहीं देखा था. क्या उसमें कोई शारीरिक या ऐनद्रिक कमी थी, या उसके संस्कार और पारिवारिक मूल्य इतने तगड़े थे कि उसने जान-बूझकर अपनी आंखों में गाढ़ा-मोटा पर्दा डाल लिया था; ताकि उसे कुछ दिखाई न पड़े और अपने दिल को उसने भारी भरकम बोझ के नीचे दबा रखा था. अपने नाजुक दिल को उसने मर्यादा के मजबूत तारों से जकड़ रखा था कि वह किसी लड़के के प्रति धड़क न उठे किसी को प्यार करना या न करना, यह रीना का व्यक्तिगत मामला था और इसमें कोई उसकी

उस रात रीना बहुत बेचैन रही. उसकी आंखों की नींद उड़ चुकी थी, शरीर कसमसा रहा था. विचार उसके मस्तिष्क को शान्त नहीं रहने दे रहे थे और शरीर का कसाव उसके सारे अंगों को तोड़-मरोड़ रहा था. उसके दिमाग में विचार गड्ड-मडड् हो रहे थे और वह स्थिर होकर किसी भी एक बात पर विचार नहीं कर पा रही थी. अगली सुबह रीना ने जब आईने में अपनी सूरत देखी, तो उसे लगा कि उदासी की एक और पर्त उसके मुख पर चढ़ गयी थी. पर्त-दर-पर्त उसका चेहरा उदासी के जंगल में गुम होता जा रहा था और जंगल धीरे-धीरे घना होता जा रहा था. यह सचमुच चिन्ताजनक बात थी. पच्चीस की उम्र में लड़कियों के चेहरे पर वसन्त के फूल खिलते हैं, न कि पतझड़ के सूखे पत्ते वहां उड़ते हैं. यह क्या होता जा रहा है उसे? नेहा ने उसे एक दिन फिर टोंका था, ''क्या तुम्हें नहीं लगता कि तुम चिड़-चिड़ी होती जा रही हो. बात-बेबात पर तुम्हें गुस्सा आने लगा है?''

मदद नहीं कर सकता था, परन्तु उसकी इस हठधर्मी का परिणाम बहुत गलत तरीके से उसके ही ऊपर पड़ रहा था. वह सबसे अलग-थलग पड़ती जा रही थी. सहेलियां अपने-अपने प्रेमियों के साथ जीवन के मजे लूट रही थीं या जब आपस में मिलतीं तो एक दूसरे के प्रेम के किस्से चटखारे लेकर सुनती-सुनाती कालेज के लड़के-लड़कियां अपनी मस्तियों में डूबे हुए रहते थे. ऐसे में खूबसूरत बगीचे में रीना एक ठूंठ के समान खड़ी हुई लगती थी. वह किसी की बातों में शामिल नहीं होती थी और न इस तरह की बातों में कोई उसे शामिल करता था.

वह जब कालेज की लड़कियों के आसपास होती तो वे ऐसे जाहिर करतीं जैसे वह कोई अनजान और बाहरी लड़की हो जो भूलवश उनके बीच में आकर खड़ी हो गयी थी. वह खूबसूरत थी, बहुत खूबसूरत...परन्तु उसकी खूबसूरती में उदासी का ग्रहण लगा हुआ था. उसका चेहरा हरदम सूखी हुई लौकी की तरह लटका ही रहता था. अनजाने भी उसके चेहरे पर मुस्कराहट की परछाईं नजर नहीं आती थी. अपनी सहेलियों के बीच वह मर्दाना औरत के नाम से जानी जाती थी. सब उसका मजाक उड़ाते, पर रीना देखा-अनदेखा कर देती और सुनी-अनसुनी. कुछ नजदीकी सहेलियां जब अपने प्यार के किस्से चटखारे लेकर सुनातीं तो वह कान पर हाथ धर कर बंद कर देती, मुंह दूसरी तरफ घुमा लेती या उठकर चल देती. सहेलियां उसकी इन हरकतों पर खिलखिला कर हंस पड़तीं और कहती, "ठूंठ कहीं की, पता नहीं भगवान ने इसे लड़की कैसे बना दिया. लगता है, लड़की के शरीर में लड़के की जान डाल दी है, परन्तु यह तो किसी लड़की की तरफ भी आकर्षित नहीं होती. इसके लिए लड़के लड़कियां सब एक समान हैं. पता नहीं किसको प्यार करेगी, करेगी भी या नहीं. लगता है, ताउम्र कुंआरी ही रह जाएगी. कौन इस फटे मुंह के साथ अपना रिश्ता जोड़ेगा?" रीना ने अपने इर्द-गिर्द जो न टूटने वाला घेरा डाल रखा था, उसे पार करने की जुर्रत कोई लड़का भी नहीं करता था. जब उस पर नई-नई जवानी चढ़ रही थी, कई भंवरों ने उसके ऊपर मंड़राकर गुनगुनाने का प्रयास किया था, परन्तु रीना एक ऐसा फूल थी, जिसमें खुशबू नाम का तत्व नहीं डाला गया था...उसमें पराग नहीं था. वह ऐसी गीली लकड़ी की तरह थी, जिस पर न तो आग लग सकती थी और न उस पर पानी कुछ असर करता था. वह न भीगती थी, न जलती...जलना तो दूर सुलगती भी नहीं थी. उसकी सबसे प्रिय सहेली नेहा ने एक दिन कहा, "क्यों अपने जीवन को बंजर बना रही हो. जीवन में प्यार के फूल न खिलें, और खुशियों के रंग न बिखरें; तो ऐसे ठूंठ जीवन को जीने का क्या फायदा?" नेहा एक अच्छे स्वभाव की लड़की थी. वह सदैव रीना के भले के बारे में सोचती थी. उसका मत था कि रीना अपनी उदासी को दूर करने के लिए या तो शादी कर ले या किसी से प्यार...जो आज के जमाने में एक जरूरियात बन गई थी.

"प्यार करूंगी, परन्तु अपने पति से...किसी और से नहीं." रीना ने अपनी लटों को झटकते हुए कहा.

"प्यार का अर्थ ये तो नहीं होता कि तुम अपना शरीर ही उस लड़के को समर्पित कर दो." नेहा जैसे समझाने का प्रयास कर रही थी.

"इसके अलावा लड़के और कुछ नहीं चाहते एक लड़की से." रीना ने दृढ़ता से कहा.

"चाहते होंगे, परन्तु यह तो हमारे ऊपर निर्भर करता है कि किस सीमा तक हम उनको अपने नजदीक आने देते हैं."

"मैं नहीं समझती कि सीमा-रेखा बनाकर कोई किसी से प्यार करता है. जब लड़का-लड़की एकान्त में मिलते हैं तो सारी सीमाएं टूट जाती हैं." रीना इतने आत्मविश्वास से यह बात कह रही थी जैसे उसने अपने जीवन में इसे अच्छी तरह से भोग लिया था.

"लेकिन मैं समझती हूं कि तुम नियम-कानून बनाकर प्यार कर सकती हो, क्योंकि तुम्हारा स्वभाव अलग है. तुम अपने चारों तरफ एक रेखा खींच सकती हो. कोई भी लड़का उसे पार करने की हिम्मत नहीं करेगा. लड़की के विचार शुद्ध और निर्मल हों, मन में दृढ़ आत्मविश्वास हो तो कोई भी लड़का तुमसे किसी प्रकार की ज्यादती नहीं कर सकता."

"मुझे आवश्यकता ही क्या है कि मैं किसी से प्यार करूं?" वह थोड़ा झुंझलाकर बोली.

"आवश्यकता तो नहीं है, परन्तु तुम किसी को अपने मन में बसाकर देखो, तब पता चलेगा कि प्यार विहीन जीवन से प्यारसिक्त जीवन कितना अलग होता है. ठूंठ पर तो भटका हुआ पक्षी भी नहीं बैठता. कहीं ऐसा न हो कि तुम उजाड़ रेगिस्तान का एक सूखा हुआ ठूंठ बनकर रह जाओ और उस पर कभी कोई कोंपल तक न उगे. अपने जीवन को नीरस मत बनाओ. अपने आचरण से तुम हम सबसे भी दूर होती जा रही हो. कोई भी लड़की तुम्हें अपने साथ नहीं रखना चाहती. तुम बिलकुल अलग-थलग पड़ती जा रही हो. एक दिन मैं भी तुम्हें अकेला छोड़ दूंगी, तो बताओ तुम कालेज में किसके साथ हंसोगी, बोलोगी और किसके साथ उठोगी-बैठोगी. लड़के तो पहले से ही तुमसे इतना दूर हो चुके हैं कि अब कोई तुम्हारी तरफ देखना भी पसंद नहीं करता. ऐसी सुन्दरता किस काम की, जिसका कोई प्रशंसक न हो, कोई गुण-ग्राहक न हो." नेहा ने जैसे उसे फटकार लगाते हुए कहा.

रीना के मस्तिष्क को एक तगड़ा झटका लगा. क्या प्यार जीवन के लिए इतना जरूरी है? क्या यही एक ऐसा धागा है, जो मानव को मानव से जोड़ता है, उन्हें खुश रखता है. उसके विचारों में एक बवण्डर सा उठा और वह उसके वेग से एक तरफ कटी पतंग की तरह उड़ चली.

ऐसी बात नहीं थी कि नेहा ने उसे पहले कभी नहीं समझाया था. उन दोनों के बीच में इस तरह की बातें हमेशा होती रहती थीं, परन्तु रीना एक कान से सुनती और दूसरे से निकाल देती. प्यार की बातों को उसने कभी गंभीरता से नहीं लिया। परन्तु धीरे-धीरे वह स्वयं महसूस करने लगी थी कि जैसे वह भीड़ के बीच भी अकेली थी. सभी उसके परिचित थे, परन्तु न तो कोई उसकी तरफ देख रहा था, न कोई उसकी बात सुन रहा था. वह उपेक्षित सी एक किनारे खड़ी थी और लोग हंसते-खिलखिलाते उसके पास से गुजरते हुए चले जा रहे थेवह सोचने पर मजबूर हो गयी थी कि क्या इस दुनिया में उसका कोई अस्तित्व भी है? अगर है, तो फिर लोग उसकी तरफ आकर्षित क्यों नहीं होते? क्यों उसे अलग-थलग करने पर आमादा थे? इस बात का उत्तर तो उसी के पास था और वह इससे भलीभांति परिचित थी. उस रात रीना बहुत बेचैन रही. उसकी आंखों की नींद उड़ चुकी थी, शरीर कसमसा रहा था. विचार उसके मस्तिष्क को शान्त नहीं रहने दे रहे थे और शरीर का कसाव उसके सारे अंगों को तोड़-मरोड़ रहा था. उसके दिमाग में विचार गड्ड-मड्ड हो रहे थे और वह स्थिर होकर किसी भी एक बात पर विचार नहीं कर पा रही थी. अगली सुबह रीना ने जब आईने में अपनी सूरत देखी, तो उसे लगा कि उदासी की एक और पर्त उसके मुख पर चढ़ गयी थी. पर्त-दर-पर्त उसका चेहरा उदासी के जंगल में गुम होता जा रहा था और जंगल धीरे-धीरे घना होता जा रहा था. यह सचमुच चिन्ताजनक बात थी. पच्चीस की उम्र में लड़कियों के चेहरे पर वसन्त के फूल खिलते हैं, न कि पतझड़ के सूखे पत्ते वहां उड़ते हैं. यह क्या होता जा रहा है उसे? नेहा ने उसे एक दिन फिर टोंका था, "क्या तुम्हें नहीं लगता कि तुम चिड़-चिड़ी होती जा रही हो. बात-बेबात पर तुम्हें

गुस्सा आने लगा है?''

''तो...मैं क्या कर सकती हूं?'' वह मुंह ल टकाकर बोली.

''बहुत कुछ... इतना शिक्षित होने के बाद भी क्या तुम नहीं समझती कि ऐसा तुम्हारे साथ क्यों हो रहा है? अगर तुमने अपने आपको नहीं सुधारा तो समझ लो, तुम पागलपन की ओर अपने कदम बढ़ा रही हो. जल्द ही तुम्हें हिस्टीरिया के दौरे पड़ने ल गेंगे.''

''क्या ऐसा होता है? मैं तो पूरी तरह स्वस्थ हूं!''

''शरीर से स्वस्थ हो, परन्तु दिमाग से नहीं. जिन जवान औरतों की शारीरिक भूख शांत नहीं होती, वह हिस्टीरिया के दौरों से ग्रस्त हो जाती हैं. देहाती औरतें भूत-प्रेत के चक्कर चलाती हैं और इस तरह बाबाओं के पास जाकर इलाज के बहाने अपनी भूख मिटाती हैं. मुझे डर है कि कहीं तुम्हें भी इसी दौर से न गुजरना पड़े कहीं तुम सोच-सोचकर पागल न हो जाओ.'' ''क्या तुम मुझे डरा रही हो?'' रीना सचमुच डर गई थी. नेहा ने उसे उदास नजरों से देखा, ''नहीं मैं सच बयान कर रही हूं। तुम जल्दी से शादी कर लो. यही तुम्हारे लिए उचित रहेगा, प्यार तुम किसी से कर नहीं सकती.'' नेहा का जोर केवल कहने भर तक था. मानना न मानना रीना के ऊपर था. बचपन से लेकर जवानी तक रीना एक भ्रम में जीती रही थी. उसके पारिवारिक संस्कारों ने बहुत गहरे तक उसके मन में यह बात बिठा रखी थी कि प्यार-मोहब्बत, लड़के-लड़कियों का आपस में मेल-जोल और उनसे एकान्त में मिलना, न केवल बुरी बात होती है, बल्कि इससे सामाजिक प्रतिष्ठा और पारिवारिक मान-सम्मान को भी आंच आती है. इसी धारणा को अपने मन में पालते हुए रीना प्रकाश के विरुद्ध शरीर में आए बदलावों, अपनी भावनाओं और शारीरिक इच्छाओं से लड़ती हुई जी रही थी...शायद जी भी नहीं रही थी, तिल-तिलकर मरने के लिए मजबूर हो रही थी. उसने अपने मुख पर एक झूठा आवरण डाल रखा था और सच्चाई का सामना करते हुए डरती थी. सच्चाई तो कुछ और ही थी.

ऊपर से वह कुछ भी दिखावा करती रही हो, परन्तु अन्दर से वह एक भरपूर जवान लड़की थी. सामान्य लड़कियों की तरह उसके मन में भी इच्छाएं और कामनाएं जन्म लेती थीं. उसके मन में भी वासनात्मक विचार आते थे, किसी से प्यार करने का मन होता था. लड़कों को देखकर उसका दिल भी धड़कता था, परन्तु झूठा आवरण तोड़ने की उसकी हिम्मत नहीं होती थी. मन ही मन वह घुट रही थी. बी.ए. और एम.ए. करने के बाद उसने इसी कालेज से पीएचडी की थी. अब उसी कालेज में पढ़ा भी रही थी. इसी कालेज में कितने लड़के उसके दीवाने थे, कितने प्राध्यापक उसे अपने आगोश में समेटने के लि ए आतुर थे, परन्तु वह सबसे बचती-बचाती रही थी. इतने दिनों तक उसने अपने आपको किस तरह धोखे में रखा था, वही जानती थी. अपने दिल के सारे अरमानों को उसने चकनाचूर कर दिया था.

शारीरिक बदलाव, मानसिक चिन्ताओं और सहेलियों के ताने-उलाहनों से वह अब कुछ ज्यादा ही विचलित होने लगी थी. मन बगावत करने के लि ए कहता, परन्तु निरर्थक मान्यता और मर्यादा उसे हमेशा रोक लेती. घुटन बढ़ती जा रही थी और वह कुछ निर्णय नहीं ले पा रही थी. अन्ततः उसने अपनी सहेली नेहा को अपनी मनोस्थिति से अवगत कराया. सुनकर नेहा भेद भरे ढंग से मुस्कराई और उसे अपने अंक में भरकर बोली, ''तो

शीशा पिघल रहा है. ठूंठ में भी अंकुर पनपने ल गा है, बधाई हो!''

''तुम मुझे कोई रास्ता बताओ.'' उसने बेचारगी के भाव से कहा.

''प्यार तुम करोगी नहीं, शादी कर लो.'' नेहा ने सहज भाव से जवाब दिया.

''मजाक मत करो, तुम्हें पता है, मैं अभी शादी नहीं कर सकती. घर में कोई इस बारे में बात तक नहीं करता.'' उसके स्वर में निराशा का पुट था.

''हां, दुधारू गाय को कौन दूसरे के खूंटे से बांधना चाहेगा.'' नेहा ने दुःख-भरे स्वर में कहा. नेहा की बात से रीना का मन दुखित हो उठा. घर में उसका बड़ा भाई था. उसकी शादी हो चुकी थी, परन्तु एक नम्बर का निकम्मा और आवारा था. बाप और बहन की कमाई पर खुद का और पत्नी का पेट पाल रहा था. उसको लेकर घर में लगभग रोज लड़ाइयां होती थीं, परन्तु उसकी सेहत पर कोई असर न पड़ता था. सब उसे घर से अलग करना चाहते थे, परन्तु वह घर से अलग होने का नाम नहीं लेता था. मुफ्त की रोटियां जो तोड़ने को मिल रही थीं. उसके निकम्मेपन की वजह से मां-बाप रीना की शादी में भी देरी कर रहे थे; ताकि जब तक उसकी शादी न हो, कम से कम उसकी तनख्वाह तो घर में आती रहे.

''मैं बहुत परेशान हूं.'' रीना ने जैसे सब कुछ नेहा के भरोसे छोड़ दिया था,

''अब मैं अकेलापन बर्दाश्त नहीं कर सकती.''

''तो किसी से दोस्ती कर लो.'' नेहा ने सुझाव दिया.

''परन्तु किससे?'' उसने जैसे अपनी मान्यताओं को ठुकराकर हार मान ली हो.

''जिस पर तुम्हारा दिल आ जाए.''

''अगर वह भी मेरे शरीर का भूखा हुआ तो...?'' उसने आशंका जाहिर की.

''तो तुम किसी से प्यार नहीं कर सकती.'' नेहा ने जोर से कहा, ''बेवकूफ, पहले दोस्ती तो कर किसी से...उसके बाद अगर लगे कि उसके साथ प्यार किया जा सकता है तो आगे बढो, वरना छोड़ दो. फिर शादी होने तक इन्तजार करो.'' रीना को नेहा की बात उचित लगी. किसी से दोस्ती करने में क्या हर्ज है? अपनी सीमा में रहेगी, तो क्या मजाल कि उसके पवित्र शरीर को कोई अपने नापाक हाथों से गन्दा कर सके. उसके मन का सूनापन दूर हो जाएगा. उसका मन मचल उठा. मन की आंखों से उसने सारे लड़कों को आजमा डाला. बहुत सारे युवक थे, पर यथार्थ में उससे बहुत दूर. अब उसे ही अपने प्रयत्नों से उनमें से किसी एक को अपने करीब लाना होगा, या उसके करीब जाना होगा. यह काम बहुत मुश्किल था, क्योंकि उसके स्वभाव से सभी परिचित थे. परन्तु उसने नामुमकिन को मुमकिन करने की ठान ली थी. नेहा की सलाह, सुझाव और प्रोत्साहन उसे प्यार की डगर पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रहे थे. प्रशान्त कालेज में उससे दो साल सीनियर था. मनोविज्ञान पढ़ाता था और शान्त प्रकाश्ति का युवक था. रीना पहले भी उसके बारे में सोचा करती थी, अब तो पूरा मन ही उसके ऊपर फिदा हो गया था. उनके बीच अक्सर बातें नहीं हो पाती थी. प्रशान्त शान्त प्रकशति का था, तो रीना नकचढ़ी और अपने अभिमान में डूबी रहने वाली. दोनों के स्वभाव में चुप रहने के अलावा और कोई समानता नहीं थी. दोनों अपनी-अपनी दुनिया में खोए रहने वाले प्राणी थे, और उनके बीच में दोस्ती या बोल-चाल जैसी कोई बात नहीं थी, जबकि वह दोनों एक ही कालेज में पढ़ाते थे और स्टाफ रूम में अक्सर उन दोनों का आमना-सामना होता रहता था. नेहा उनके बीच माध्यम बनी. कामनरूम में जब नेहा प्रशान्त के सामने बैठी उसके साथ इधर-उधर की बातें करके उसको उलझाए हुई थी, तो रीना उसकी बगल में बैठकर नई नवेली दुल्हन की तरह शरमाती-सकुचाती, अपनी आंखों में दुनिया के सबसे सुन्दर ख्वाब सजाए कभी तिरछी नजर से, कभी सीधे देखती हुई मुस्कराये जा रही थी. प्रशान्त

को रीना की इन बेतुकी हरकतों पर बड़ा आश्चर्य हो रहा था. वह बातें तो नेहा से कर रहा था, परन्तु नजरें रीना के रंग बदलते चेहरे पर जाकर बार-बार अटक जाती थी. उसने रीना को पहले भी देखा था, परन्तु इतना चंचल कभी नहीं...वह किसी स्नेह भाव से नहीं, बल्कि आश्चर्य मिश्रित सन्देह से रीना को घूरे जा रहा था. नेहा ने भांप लिया और बोली, "क्यों सर! रीना पर दिल आ रहा है क्या?

बातें आप मुझसे कर रहे हैं और देख उसको रहे हैं." वह झेंप गया, "नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है." उसने सिर नीचा कर लिया और बेवजह मेज पर रखी पुस्तक को उलटने पुलटने लगा. नेहा ने अर्थपूर्ण निगाहों से रीना की आंखों में झांका. रीना भी मुस्कराई, जैसे उसको प्यार का खजाना प्राप्त हो गया हो.

"लंच का समय हो रहा है, कैंटीन में चलकर कुछ खा-पी लेते हैं." नेहा ने सुझाव दिया.

"हां, बिलकुल ठीक...मुझे बहुत जोरों की भूख लगी है." रीना ने चहककर कहा. इस प्रस्ताव पर भी प्रशान्त को आश्चर्य हुआ. ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था. नेहा भी आज उससे घुल-मिलकर बातें कर रही थी. रीना भी उसको देखकर बन्दरों की तरह खिसियाए जा रही थी. आखिर चक्कर क्या था? वह कुछ समझ नहीं पा रहा था. नेहा ने कैंटीन चलने का सुझाव दिया तो उसे और ज्यादा आश्चर्य हुआ। यह आज दिन में चांद-सितारे कहां से चमकने लगे. दोनों को उसके ऊपर क्यों इतना प्यार आ रहा है कि उसे साथ चलकर लंच करने के लिए कह रही हैं. कोई न कोई बात तो अवश्य है, वरना नेहा जैसी समझदार और सुलझी हुई लड़की उसके साथ इस तरह घुल कर बातें नहीं करती. मन में शंकाओं के बादल घुमड़ रहे थे, परन्तु यह बादल तभी छंट सकते थे, जब वह ज्यादा से ज्यादा उनके साथ रहे, उनकी बातें सुने और उनके अन्तर्मन को समझे. अतः उसने कहा, "अगर आप लोगों की इच्छा है, तो....चलिए." वह उठ खड़ा हुआ.

"परन्तु कालेज की कैन्टीन में नहीं. वहां बहुत सारे कालेज के छात्र-छात्रायें आती हैं. कुछ हमारी परिचित भी होंगी. बेवजह चर्चा होगी और लोग बातें बनायेंगे. चलिए, बाहर कहीं चलते हैं." नेहा ने यथार्थ से अवगत कराते हुए कहा.

"परन्तु दो बजे मेरी क्लास है!" प्रशान्त ने अटकते हुए कहा.

"हम जल्दी ही लौट आएंगे. कालेज के सामने ही किसी रेस्त्रां में बैठकर कुछ हल्का-फुल्का खा लेंगे."

यह रीना की प्रशान्त के साथ पहली मुलाकात थी, परन्तु दोनों के बीच कोई बात नहीं हुई. नेहा ही उसके साथ बातों में व्यस्त रही. रेस्त्रां में खाने के दौरान वह बिना किसी झिझक के प्रशान्त को ही खुलकर देखती रही थी. प्रशान्त उसकी निगाहों का ताव नहीं ला पा रहा था. उसके मन में तरह-तरह के विचार आ रहे थे, परन्तु वह उनको व्यक्त नहीं कर सकता था. वह ज्यादातर समय गुम-सुम रहा और नेहा की बक-बक तथा रीना की निगाहों का अर्थ समझने का प्रयास करता रहा था. रीना जितना आंखें चुराने वाली लड़की थी, उतना ही आज खुलकर वह प्रशान्त को देख रही थी. परन्तु उस दिन कुछ खास उसकी समझ में नहीं आया. प्रशान्त की दो बजे की क्लास थी, अतः वह तीनों जल्दी ही हल्का-फुल्का खाकर कालेज के अन्दर आ गये. अगली दो-तीन मुलाकातें भी नेहा के माध्यम से हुईं. प्रशान्त को धीरे-धीरे बात समझ में आ रही थी, परन्तु उसके मन में शंकाएं थीं, तो रीना के मन में संस्कारों की बेड़ियां. वह दोनों खुलकर आपस में बात करने का साहस नहीं जुटा पा रहे थे नेहा ही बातों-बातों में रीना के मन की झूठी-सच्ची बातें प्रशान्त को बताकर उसके मन को रीना की तरफ आकर्षित करना चाह रही थी. वह अच्छी तरह जानती थी कि प्रशान्त और रीना स्वयं एक दूसरे की तरफ नहीं बढ़ेंगे, अतः उसे ही कुछ न कुछ करना पड़ा। एक दिन स्टाफ रूम में जब रीना उसके साथ नहीं थी तो नेहा ने प्रशान्त से पूछा, "रीना के बारे में आप क्या सोचते हैं?"

वह मधुर मुस्कान की जलेबी अपने चेहरे पर ल पेटता हुआ बोला, "मैं तो आपके बारे में सोचता हूं." नेहा चौंकी नहीं, उसे कोई आश्चर्य भी नहीं हुआ. निर्विकार भाव से बोली- "मेरे बारे में सोचना छोड़ दो. मैं आपके हाथ आनेवाली नहीं, आप रीना के बारे में सोचो, वह आपकी तरफ आकर्षित है, आपके बारे में बातें करती रहती है. मुझे लगता है, वह अपने दिल में आपको बसा चुकी है."

"हो सकता है, परन्तु वह मुझे नारी नहीं लगती. उसमें कोई स्त्रियोचित गुण नहीं है. वह ठूंठ है ठूंठ..."

"व्यर्थ की धारणा अपने मन से निकाल दो. वह एक बहुत सुन्दर लड़की है, बाहर से भी और अन्दर से भी...आप एक बार प्रयत्न करके तो देखो. ऊपर से ठूंठ को देखकर यह नहीं समझना चाहिए कि उसकी जड़ें हरी नहीं हैं. ठूंठ में भी कोंपलें निकलती हैं, अगर ढंग से उसे सींचा जाय." नेहा गंभीर थी और प्रशान्त के मन में संशय के बादल घुमड़ रहे थे-

"मुझे उसकी आंखों में मेरे लिए प्यार जैसा कोई भाव नहीं दिखाई देता."

"प्यार के मामले में वह अभी बच्ची है. उसे प्यार करना नहीं आता, परन्तु उसके दिल में प्यार का सागर उमड़ रहा है. बस बांध को तोड़ना पड़ेगा, प्यार का सागर बह निकलेगा. देखना, एक दिन जब उसके प्यार का बांध टूटेगा तो तुम डूब जाओगे, निकल नहीं पाओगे उससे."

"परन्तु जब वह हंसती है, तो जोकर लगती है." "आप उसे प्यार से हंसना सिखा दो." नेहा ने उसे उकसाया. हर रोज इसी तरह की बातें होतीं. रोज-रोज नेहा से रीना की बातें सुन-सुनकर प्रशान्त उसके बारे में सोचने पर मजबूर हो गया. वह उसके दिल ो-दिमाग में कब्जा जमाती जा रही थी और वह उसके बारे में सोचने के लिए मजबूर...स्थिति यह हो गयी कि रीना एक पल के लिए भी उसके दिमाग से नहीं निकलती थी. रात-दिन घुटते रहने से क्या लाभ...? बात को आगे बढ़ाना चाहिए? नेहा ने उसे समझाया और फिर उसने हिम्मत करके एक दिन रीना को एकान्त में प्रपोज कर ही दिया, "रीना, बुरा न मानो तो एक बात कहूं."

"कहो!" उसने प्रोत्साहित किया. वह समझ रही थी कि प्रशान्त क्या कहने वाला था. नेहा ने उसे बता दिया था'. 'मेरे साथ घूमने चलोगी?" वह झिझकते हुए बोला"कहां?"

"जहां तुम कहो."

"मैं किसी जगह के बारे में नहीं जानती. आप अपनी मर्जी से चाहे जहां ले चलें, परन्तु मैं एक शर्त पर चलूंगी. मैं आपके साथ किसी एकान्त जगह पर नहीं चलूंगी, और वायदा करिए कि आप मेरे साथ कोई ऐसी-वैसी हरकत नहीं करेंगे." रीना के संस्कारों ने सांप की तरह बिल से मुंह निकालना शुरू कर दिया. यह प्रथम अवसर था, जब दोनों के बीच प्यार की शुरुआत जैसी कोई गंभीर बातचीत हो रही थी और रीना अपनी नासमझी से बात को बिगाड़ने में ल गी हुई थी. प्रशान्त को उसकी बातें सुनकर झटका सा लगा. क्या इस लड़की से प्यार किया जा सकता है? बड़ी कठिन लड़की है. उसे रीना की बात पर गुस्सा तो बहुत आया, परन्तु उसने अपने आपको संभाल लिया. उसकी समझदारी से ही शायद बात बन जाए, और इस नकचढ़ी और घमण्डी लड़की के जीवन में प्यार की दो-चार फुहारें पड़ जाए, जिससे यह हरी-भरी दिखने लगे; वरना तो यह ठूंठ ही है, और ठूंठ ही

बनी रहना चाहती हैवह तो इस लड़की से कभी प्यार न करता. कभी इसका खयाल तक उसके दिमाग में नहीं आता था. नेहा की बातों से उसका मन इसके लि ए मचलने लगा था, वरना सुन्दरता के अलावा इस ल ड़की में क्या है? न कोई तमीज है, न कोई समझ.. बेवकूफ कहीं की. उसने अपने गुस्से को फिलहाल काबू में किया, परन्तु उसने मन ही मन तय कर लि या, इसे सबक सिखाकर रहेगा. अपने आपको बहुत पाक-साफ समझती है और सती-सावित्री की तरह व्यवहार करना चाहती है. ठीक है, तुम भी क्या याद करोगी कि प्रशान्त से पाला पड़ा है. वह कोई मिट्टी का माधो नहीं है कि तुम उसे बेवकूफ बनाकर नचाती फिरोगी. मनमुटाव से ही सही, परन्तु दोनों के बीच घूमने का सिलसिला चल पड़ा. दोनों अक्सर शाम को कालेज के बाद साथ-साथ घूमने जाते. प्रशान्त जान-बूझकर ऐसी जगह बैठता, जहां खूब भीड़ भाड़ हो. बस, मेट्रो या आटो में भी वह रीना से इतनी दूरी बनाकर रखता, कि रीना को स्पष्ट आभास होता रहे कि वह उसके सान्निध्य के लिए लालायित या उत्सुक नहीं है. ऐसी लड़कियों को उपेक्षा से ही सही रास्ते पर लाया जा सकता था. पार्क में या रास्ते में कभी भी आते-जाते प्रशान्त प्यार भरा कोई शब्द नहीं बोलता. रीना के सौन्दर्य या पहनावे पर भी उसने कभी कोई कमेन्ट नहीं किया. ऐसी कोई बात नहीं की जिससे रीना को यह आभास हो कि वह उसे प्यार करने लगा है या उसका प्यार हासिल करने के लिए उत्सुक था. वह उसकी सुन्दरता से भी प्रभावित होता नहीं दिख रहा था. दोनों बेगानों की तरह मिलते, इधर-उधर की फालतू बातें करते और शाम का अंधेरा घिरने के पहल जुदा होकर अपने-अपने घर चले जाते.

कई महीने बीत जाने पर भी प्रशान्त ने अभी तक उसके किसी अंग को भूले से भी नहीं छुआ था. रीना समझ गई थी कि वह जान-बूझ कर ऐसा कर रहा था. प्रशान्त की उपेक्षा से वह जल-भुनकर रह जाती. इसे अपने सौन्दर्य का अपमान समझती, परन्तु अपने मुंह से कुछ कह भी नहीं सकती थी, क्योंकि प्रारंभ में उसने ही यह शर्त रखी थी कि वह उसके साथ कोई छेड़छाड़ नहीं करेगा. गलती उसी थी, अब उसे कैसे सुधार सकती थी. इस प्रकार के मिलन से दोनों वर्षा की रिमझिम फुहारों में भीगने के बजाय रेगिस्तान की तपती धूप में जल रहे थे. रीना कोई पत्थर नहीं थी. प्रशान्त के साथ घूमने-फिरने और बैठने से उसकी भावनाओं में परिवर्तन होता जा रहा था. वह पूरी तरह से प्रशान्त के प्रति आकर्षित हो चुकी थी और मन ही मन उसे प्यार करने लगी थी. हर प्रयास करती कि प्रशान्त उसकी प्रशंसा करे, उसके लिए प्यार के दो शब्द बोले. इसके लिए वह नित अधिक से अधिक सज-संवरकर आती और मन ही मन सोचती कि प्रशान्त उसकी खूबसूरती और कपड़ों की प्रशंसा करेगा, परन्तु वह निर्मूढ़ व्यक्ति की तरह शान्त रहता. घूर-घूरकर अन्य व्यक्तियों की तरफ देखता रहता, परन्तु रीना से आंख न मिलाता. रीना ने एक दिन कहा, ''चलो कहीं एकान्त में बैठते हैं.'' प्रशान्त चौंककर बोला, ''यहां एकान्त कहां मिलेगा?''

''लोधी गार्डेन चलते हैं, वहां एकान्त मिलेगा.'' रीना ने चहकते हुए कहा.

''तुम्हें कैसे पता?'' उसने हैरान होकर पूछा''नेहा ने बताया है.'' उसने चहकते हुए कहा. प्रशान्त मान गया. वह दोनों लोधी गार्डेन गये, एकान्त में भी बैठे, परन्तु ढाक के वही तीन पात! प्रशान्त उससे दूर ही बैठा रहा. रीना मखमली घास पर बैठी थी. उसने जान-बूझकर अपनी जगह पर कुछ गड़ने का बहाना बनाकर उसकी तरफ खिसकने का प्रयास किया तो वह और परे खिसक गया रीना ने कुढ़ते हुए उसकी तरफ खा जाने वाली नजरों से देखा, परन्तु वह निश्छल और निर्विकार बैठा रहा. रीना फिर उसकी तरफ फिर खिसकी, ''कुछ बातें करो न.''

''तुम कुछ बोलो,'' वह घास के तिनके तोड़ता हुआ बोला.

''देखो, वह फूल कितने सुन्दर हैं.''

''सारे फूल सुन्दर होते हैं.'' वह जैसे किसी छात्र को समझा रहा था. रीना के मन में हजारों मन बर्फ जम गई. कैसे मूढ़ व्यक्ति को अपने मन में बसाने की भूल कर बैठी वह? क्या इसी को प्यार कहते हैं. वह जैसा सोचती थी, वैसा तो कुछ नहीं हो रहा है. ल ड़के किस प्रकार लड़कियों से चिपकते हैं, कैसे उनके अंगों से छेड़-छाड़ करते हैं और उनकी भावनाओं का सम्मान करते हुए प्यार करते हैं, वैसा तो प्रशान्त उसके साथ कुछ नहीं कर रहा है. इसका मतलब वह गलत सोचती थी कि सारे लड़के लड़कियों के शरीर के भूखे होते हैं. प्रशान्त तो उसकी तरफ देखता तक नहीं, उसकी खूबसूरती की प्रशंसा तक नहीं करता. आज तक प्यार का एक शब्द छोड़ो, ऐसा भी कोई शब्द नहीं बोला, जिससे यह लगे कि वह रीना को पसन्द करता था. परन्तु उसने खुद भी तो प्रशान्त के लिए ऐसा कुछ नहीं कहा. गलती तो उसकी भी है... फिर...? क्या वह स्वयं प्यार का इजहार नहीं कर सकती? कर सकती है, परन्तु संकोच और शर्म की बेड़ियों से उसके होंठ सिले हुए हैं, क्योंकि वह एक ल इकी है. ऐसी लड़कियों को अच्छा नहीं समझा जाता जो प्यार में बेशर्मी से काम लेती हैं. रीना को अब इस तरह के मेल-मिलापों से घुटन होने लगी थी. उसका मन विद्रोह करने के लिए उतारू था. प्रशान्त से उसे कुछ आशा नहीं थी कि वह उसके साथ कुछ करेगा या प्यार के दो शब्द बोलकर उसके मन में रंग-बिरंगे फूल ों की महक बिखरा देगा. वह तो खुद ठूंठ बनता जा रहा था. रीना ने ही कुछ करने की ठानी. वह उससे सटकर बैठने लगी, जान-बूझकर प्रशान्त के हाथों को या किसी अन्य अंग को छू लेती और उसकी छोटी सी बात पर भी खिल-खिलाकर हंस पड़ती. प्रशान्त उसके छूने से ''सॉरी'' बोल देता और जब वह हंसती तो उसको आंखें फाड़-फाड़कर देखता.

शाम को रीना देर तक बैठने की जिद् करती. अन्धेरा हो जाता तब भी वह दोनों बैठे रहते. अन्धेरे में रीना उसको जी भर के देखती जैसे कोई साधक अपने इष्टदेव को ताकता हुआ धीर और शान्त बैठा रहता है कि कभी तो भगवान प्रसन्न होकर उसको आर्शिवाद देंगे. परन्तु ऐसे मौकों पर प्रशान्त घर जाने के लिए उतावला रहता था. उठकर खड़ा हो जाता और कहता- ''घर चलो, अन्धेरा हो गया है.'' वह मन मारकर कुढ़ते हुए निःशब्द उसके पीछे चल देती. दोनों के बीच में ऐसा कुछ नहीं हो रहा था, जिसे प्यार के नाम से जाना जा सके. रीना हताश और कुण्ठित होती जा रही थी. जब उसने अपनी बेड़ियां तोड़कर मुक्त हवा में सांस लेने का प्रयत्न किया तो सारे पेड़ मुरझा गए, फूलों की खुशबू गायब हो गई, जंगल में आग लग गई. उसके लिए न तो भंवरों ने गीत गाए, न तितलियों ने रंग बिखराए. सारी सृष्टि उसके लिए वीरान हो गई. उसने अपने दिल के हाल ात नेहा से बयान किए. प्रशान्त की निष्ठुरता पर नेहा को भी हैरानी हुई, परन्तु वह समझ गई कि प्रशान्त ऐसा क्यों कर रहा था. दोनों के बीच की दीवार आसानी से टूटने वाली नहीं थी. रीना को ही कुछ करना होगा, नेहा ने उसे सलाह दी. अगले दिन रीना ने अपने जीवन का सबसे सुन्दर श्रृंगार किया. सबसे अच्छी गुलाबी रंग की साड़ी पहनी. ब्लाउज तो केवल नाम के लिए था। ब्लाउज इतना छोटा था कि उसकी गोरी चिकनी बांहें, पीठ, पेट और वक्ष भाग पूर्णतया दर्शनीय था. प्रशान्त के साथ आज प्यार की बाजी का

Jai Santoshi Maa

Construction Electricians

- employed by electrical contractors or construction companies.
- maintenance departments of commercial buildings and other establishments.
- may be self-employed

Industrial Electricians

- heavy industry
- maintenance departments of factories, mines, mills, oil and gas plants, shipyards, and other industrial establishments Power System Electricians
- employed by electric power generation and transmission companiesa

Electrician

Om Shanti Apartment, Shop No. 7 , Ulhasnagar-4
Phone: 8862090310, 9096892562

कई महीने बीत जाने पर भी प्रशान्त ने अभी तक उसके किसी अंग को भूले से भी नहीं छुआ था. रीना समझ गई थी कि वह जान-बूझ कर ऐसा कर रहा था. प्रशान्त की उपेक्षा से वह जल-भुनकर रह जाती. इसे अपने सौन्दर्य का अपमान समझती, परन्तु अपने मुंह से कुछ कह भी नहीं सकती थी, क्योंकि प्रारंभ में उसने ही यह शर्त रखी थी कि वह उसके साथ कोई छेड़छाड़ नहीं करेगा. गलती उसी थी, अब उसे कैसे सुधार सकती थी. इस प्रकार के मिलन से दोनों वर्षा की रिमझिम फुहारों में भीगने के बजाय रेगिस्तान की तपती धूप में जल रहे थे. रीना कोई पत्थर नहीं थी. प्रशान्त के साथ घूमने-फिरने और बैठने से उसकी भावनाओं में परिवर्तन होता जा रहा था. वह पूरी तरह से प्रशान्त के प्रति आकर्षित हो चुकी थी और मन ही मन उसे प्यार करने लगी थी. हर प्रयास करती कि प्रशान्त उसकी प्रशंसा करे, उसके लिए प्यार के दो शब्द बोले. इसके लिए वह नित अधिक से अधिक सज-संवरकर आती और मन ही मन सोचती कि प्रशान्त उसकी खूबसूरती और कपड़ों की प्रशंसा करेगा, परन्तु वह निर्मूढ़ व्यक्ति की तरह शान्त रहता. घूर-घूरकर अन्य व्यक्तियों की तरफ देखता रहता, परन्तु रीना से आंख न मिलाता. रीना ने एक दिन कहा, "चलो कहीं एकान्त में बैठते हैं." प्रशान्त चौंककर बोला, "यहां एकान्त कहां मिलेगा?" सबसे बड़ा मोहरा खेलने जा रही थी वह. अगर यह मोहरा पिट गया, तो वह प्यार की बाजी हार जाएगी. यह उसके जीवन मरण का सवाल था. आज नहीं तो कभी नहीं...

शाम का झुटपुटा घिरने लगा था. बोट क्लब के किनारे गुड़हल के पौधों के बीच वह बैठे थे. यह रीना की ही जिद् थी कि वह दोनों सबकी नजरों से छिपकर बैठें. आज वह अगल-बगल न बैठकर आमने-सामने बैठे थे. यह भी रीना ने कहा था. रीना के दमकते सौन्दर्य, गठीले उठानों और उछलने के लिए बेताब अंगों पर प्रशान्त की नजर नहीं ठहर रही थी. आज से ज्यादा सुन्दर वह पहले कभी नहीं लगी थी. प्रशान्त की सारी इन्द्रियां बेकाबू हो रही थीं. वह बेचैन हो गया था और अपने हृदय को काबू में करने की नाकाम कोशिश कर रहा था, परन्तु रीना जैसे उससे ज्यादा बेताब थी. रीना ने अपने दोनों हाथों से प्रशान्त की कमीज के कालर के नीचे दोनों तरफ पकड़कर उसे अपनी तरफ खींचा. वह लगभग उसके ऊपर झुक आया. वह लगभग गुर्राकर बोली, "मैं बहुत खराब लड़की हूं?"

"आं." प्रशान्त समझ नहीं पाया, क्या कहे?

"आप समझते हैं, मेरे अन्दर धड़कता हुआ दिल नहीं है, मेरी कोई भावनाएं नहीं हैं?" उसकी आवाज में तरलता भरती जा रही थी. प्रशान्त अकाबका गया था और वह कुछ बोलने की स्थिति में नहीं था. उसका मुंह रीना के खुले सीने के ऊपर झुका हुआ था, परन्तु उसने आंखें बन्द कर ली थीं. रीना के यौवन की एक मादक सुगन्ध प्रशान्त के नथुनों में भरती जा रही थी. कितनी मदहोश कर देने वाली सुगन्ध थी. रीना वाकई बहुत खूबसूरत और आकर्षक लड़की थी. कोई भी उस पर मर सकता था.

"आप मुझसे बदला ले रहे हैं?" वह धमकाने के स्वर में बोली.

"नहीं तो...." कुछ न समझकर भी प्रशान्त बोला, "कैसा बदला...?"

"मासूम और भोले बनने का प्रयत्न मत करो. यह मेरी ही गलती थी, जो प्रथम मिलन में मैंने आपको मुझे छूने से मना किया था. वही गुस्सा अभी तक आपके मन में भरा हुआ है, है न!" प्रशान्त कुछ नहीं बोला, परन्तु वह जानता था कि सच यही था. रीना ने उसकी कमीज को अपने दाएं-बाएं खींचा कि उसके बटन तड़तड़ाकर टूट गये. रीना लगभग रुआंसी होकर बोली-

"आप अपना गुस्सा इस तरह भी जाहिर कर सकते थे, जैसे मैंने अभी किया है. मुझे तड़पाने में आप को मजा आ रहा था. आप जान-बूझ कर मुझे उपेक्षित करते रहे, और मैं बिना आग के सुलगती रही. क्या आप नहीं समझते हैं कि जब लड़की के मुंह से लड़के के लिए न निकलता है तो वह अन्दर से हां कहती है. प्यार करने वाले इस बात को अच्छी तरह समझते हैं. आपने समझने का प्रयास क्यों नहीं किया?" अब तक अन्धेरा पूरी तरह घिर आया था. इण्डिया गेट और राजपथ पूरी तरह से बिजली की रोशनी से जगमग हो उठा था, परन्तु उनके इर्द-गिर्द अन्धेरा था. रीना ने लपककर प्रशान्त के दोनों हाथ अपने सीने पर रख दिए और गिड़गिड़ाती हुई बोली, "आज आपने मेरा घमण्ड तोड़ दिया है. मैं हार गई, अब मैं आपकी हूं. आप मेरे साथ जोर-जबरदस्ती करते, मेरे शरीर के साथ खिलवाड़ करते तो मुझे अच्छा लगता." फिर वह हांफने लगी, जैसे बहुत लंबी दौड़ लगाकर आई हो. लेकिन यह शारीरिक थकन की वजह से नहीं हो रहा था. उसके अंदर एक ज्वालामुखी धधक रहा था, जिसकी आंच में वह तप रही थी. उसने प्रशान्त को अपनी तरफ खींचते हुए कहा, "लीजिए मैं आपके सामने सम्पूर्ण रूप से उपस्थित हूं, जैसे चाहे मुझे प्यार करें. अब मैं किसी भ्रम में नहीं जीना चाहती. अब तक मैं एक वीरान रेगिस्तान में भटक रही थी, अब और ज्यादा भटकना नहीं चाहती. मेरी भावनाओं को समझो और मुझे प्यार करो. बहुत तड़प चुकी हूं मैं...झूठे अभिमान को लेकर मैं अब तक जी रही थी. ये भी कोई जीना है. मैं ठूंठ नहीं हूं, प्रशान्त, मैं ठूंठ नहीं हूं. देखो मेरे ऊपर भी प्यार की कोंपलें अंकुरित हो रही हैं." उसकी रुलाई फूट पड़ी थी. उसने जोर से प्रशान्त के हाथों को अपने सीने पर दबा दिया. प्रशान्त के शरीर को एक तगड़ा झटका लगा, जैसे उसने आग के दो बड़े अंगारों पर अपने हाथ रख दिए हों. उसकी बोलती बंद थी, परन्तु शरीर कांप रहा था.

रीना लगभग उसके ऊपर गिर पड़ी. उसके भरे-भरे होंठ प्रशान्त के होंठों पर टिक गये. प्रशान्त जब तक पीछे हटता, रीना ने उसके होंठों को अपने मुंह में भर कर दबा लिया था. इसके साथ ही उसकी आंखों से गरम-गरम आंसू उन दोनों के होंठों के ऊपर गिरकर मीठेपन में खारेपन का एहसास दिला रहे थे, जैसे उन्हें आगाह कर रहे हों कि प्यार में अगर अद्भुत मिठास होती है, तो उसमें यथार्थ का खारापन भी होता है. अब प्रशान्त के हाथ रीना की नंगी पीठ पर फिसल रहे थे. ठूंठ में सचमुच कोंपलें निकल आई थीं.

-राकेश भ्रमर

(पेज ४१ के आगे...)

किसी तरह से स्थाई हो जाए, तो घर गृहस्थी को एक निश्चित दिशा मिल जाए... फिर आगे की तरक्की भी तो है... ये तंगी के दिन हैं, जो गुजर जाएंगे... फिर उनका परिवार निश्चय ही सुख और संतोष के दिन गुजार सकेगा. वह इस तरह से विचार करते-करते आँगन में बिछी चारपाई पर जा पहुँचती और अपनी पीड़ा को दबाने का प्रयास करती.

परमानेंट जॉब के लिए मैनेजर की मांग, घर की टूटती आर्थिक स्थित, पत्नी का गिरता स्वास्थ्य... कम रौशनी में कमरे का माहौल बदलीग्रस्त दिख रहा था और उसकी पत्नी का चेहरा ग्रहण-ग्रस्त चाँद की मानिन्द. दीपक को लगा कि जैसे वह युवा होने से पहले ही बुढ़ा गया है.... टूटने लगा है... बुजुर्गी की तरह सोचने लगा है. उसने महसूस किया कि स्थाई नौकरी उसके लिए अलभ्य वस्तु थी, जो उसके पहुँच के बाहर थी. अचानक दीपक को पत्नी का मंगल सूत्र और उसके हाथों के कंगन अंधेरे में कुछ ज्यादा ही चमकते दिखाई दिए. उसके जेहन में बिजली कौंधी. पर क्या पत्नी उसे मंगल सूत्र दे पाएगी? वह पत्नी से अपनी बात कहने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था. उसे लगा मानों वह वर्षों से थका हुआ है और उसके मुंह से बोल भी नहीं फूट रहे हैं...

चारपाई पर लेटी पत्नी से जाने कब और कैसे वह जेवरों की मांग कर बैठा... उसे अपने ऊपर ही आश्चर्य हुआ था. पत्नी ने अपने हाथों के सोने के कंगन तो उसे दे दिए, परंतु मंगल-सूत्र सौंपते-सौंपते उसकी निस्तेज होती जा रही आँखों को वह सहन नहीं कर पाया. पत्नी की आंखों में असहायता, विवशता की स्पष्ट झलक महसूस करता वह मानों संज्ञा शून्य सा हो उठा था.... आखिर क्यों न इन से प्राप्त पैसों से वह पत्नी का उपयुक्त इलाज करवा दे, जिससे वह पीड़ा मुक्त तो हो सके. मंगलसूत्र सौंपते समय पत्नी इस तरह घबरा उठी थी जैसे उसकी इज्जत उतरी जा रही हो... वह फटी-फटी मुर्दे-की-सी आँखों से पति का मुंह ताकती रह गई थी.

बेचैनी तथा बदहवासी की सी स्थिति में उसने पत्नी से अप्रत्याशित प्रश्न किया था - 'कितने तोले के होंगे' रुन्धे गले से कांपती-क्षीण-सी आवाज में पत्नी बड़ी देर में कह पाई थी- 'छह-सात तोले के होंगे सब मिलाकर...'

इसके बाद दोनों के बीच संवाद खत्म से हो गए थे और दीपक चारपाई पर एक तरफ लुढ़क कर लेट गया था. बगल की खाट पर बीमार पत्नी कराहती पड़ी रही. दीपक जैसे अनिर्णय की स्थिति में फंस गया था कि क्या करना चाहिए, उसे अपने प्रतिष्ठान का चपरासी पन्नालाल अपने से कहीं बेहतर लग रहा था जो वर्षों से एक स्थाई नौकरी कर रहा था...उसने पन्नालाल से पत्नी की दवाई लाने के लिए एक-दो बार कुछ रुपए उधार भी लिए थे. एकाएक वह उठा और अपने सर्टिफिकेट और डिग्रियों के कागज़ात निकाले. उन्हें बार-बार देखते-सहेजते उसे गर्व हुआ - हाईस्कूल फर्स्ट डिवीजन, इन्टर फर्स्ट डिवीजन, बीए ऑनर्स, इंजीनियरिंग डिप्लोमा. उसे कुछ तसल्ली सी हुई कि अब वह मंगलसूत्र और कंगन के रुपयों से परमानेंट तो हो ही जाएगा, फिर तो आर्थिक स्थिति संभल ही जाएगी.

वह उठा और दीवार पर लगे छोटे से आइने में अपना चेहरा निहारने लगा. उसे लगा वह असमय बूढ़ा हो चला है... गालों में उभरी झुर्रियाँ, कनपटी पर सफेद बाल, बढ़ी हुई खिचड़ी दाढ़ी... ये सब गरीबी की सुपरिचित परिभाषा उसके चेहरे पर लिख रहे थे. उसे लगा कि उसका अपना व्यक्तित्व कहीं खो सा गया है और जो आइने में है वह कोई अजनबी है- अपरिचित है. वह घबरा कर वापस अपनी चारपाई पर पसर गया और करवटें बदलता रहा.

कंगन और मंगलसूत्र - रुपयों में रूपांतरित होकर चढ़ावे के रूप में मैनेजर के पास पंहुच चुके थे. नोटों की गड्डियाँ देख मैनेजर साहब मुस्कुरा कर चहक उठे थे. 'दीपक, अब आगे मैं संभाल लूंगा... एक इंटरव्यू होगा... पर बस समझ लीजिए कि औपचारिकताएँ तो पूरी करनी पड़ती हैं... बस इसे डोनेशन ही समझिए... मेरा सहयोग आपके साथ हमेशा रहेगा... कल ही इंटरव्यू करवाए देता हूँ.'

मैनेजर के चेहरे से दीपक को नफरत हो गई और उसने अपना चेहरा दूसरी तरफ कर लिया. उसके मन में आया कि वह चिल्ला कर कह उठे- 'साले बेईमान, घूसखोर, मक्कार, चरित्रहीन...' लेकिन उसने अपने अंदर जन्मी गालियों का गला घोंट दिया. पसीना-पसीना होते हुए वह केबिन से बाहर आ गया. परमानेंट होने का सुख, उसे लगा कि कभी नहीं मिल सकता.

स्थाई नियुक्ति पत्र मिलने पर दीपक को एक अरसे बाद अपने अन्दर पहली बार खुशी की लहर महसूस हुई. उसे इस समय कुछ रूपयों की आवश्यकता महसूस हुई. वह अपनी खुशी को बांटना चाहता था. कई दोस्तों से पहले ही इतने कर्ज वह ले चुका था कि कुछ मांगने का मुँह ही नहीं रह गया था उसका. अन्ततः उसे पन्नालाल याद आया. ऑफिस की छुट्टी होते ही वह पन्नालाल के पास पहुँचा और मिन्नत से उधार मांगा. उसे लगा कि कहीं पन्नालाल इनकार न कर दे. पन्नालाल से वह बोला- 'दादा, कुछ रुपए मुझे अभी चाहिए... देखो अब मेरी नौकरी परमानेंट हो गई है, आपका उधार इसी वेतन पर चुका दूंगा.' पन्नालाल भले ही अनपढ़ था, पर हृदयहीन नहीं था. उसे दीपक की आवाज में सच्चाई और आवश्यकता का प्रतिबिम्ब दिखाई दिया. वह बोला - 'भइया, जब पिरमानेन्ट हो गए हो तो पइसा लौटा ही दोगे. लो अपना काम पूरा करो. समय सबके साथ ऊंच नीच करता है.'

दीपक उधार रुपयों को लेकर बछड़े की भांति कुलांचे मारता हुआ सुनार की दुकान पर पहुँचा और पत्नी के लिए एक छोटा-सा मंगल सूत्र खरीदा. मंगलसूत्र, जिसे देते वक्त उसकी पत्नी कातर-सी हो गई थी. अपने परमानेंट होने की खबर वह इस मंगलसूत्र को पहनाते हुए उसे देगा.

वह देर से घर पहुँचा तो उसने देखा कि उसके घर के बाहर कुछ लोग खड़े थे. सब चुपचाप थे. उसने प्रश्नवाचक नजरों से चारों ओर निगाह डाली. माहौल में सन्नाटा था. वह विद्युत गति से घर के भीतर पहुंचा. देखा कि उसकी पत्नी चारपाई पर स्पंदन हीन पड़ी थी. उसकी दोनों फटी हुई खुली आँखें मानों असह्य पीड़ा को सहते-सहते मुक्ति याचना कर रही थीं... पीड़ा की अन्तिम सीमा को पार करती उसकी आँखें मौन-मूक न जाने क्या तलाश कर रही थीं...

दीपक से यह सब नहीं देखा गया. वह एक हृदयविदारक चीत्कार के साथ मृत पत्नी के ऊपर गिर पड़ा. जिस संबल, आलम्बन के सहारे उसकी जीवन लतिका फैल रही थी, वही आलम्बन आज एकाएक धूल-धूसरित हो उठा था. उसके द्वारा लाया गया मंगलसूत्र उसके हाथ से छूटकर चिरनिद्रा में निमग्न उसकी पत्नी की गोद में जा पड़ा था... ■

- रामनारायण मिश्र

Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

Good Vibes Onion Hairfall Control Oil I Strengthening I Hair Growth I No Parabens, No Sulphates, No Mineral Oil, No Animal Testing (100 ml)

Good Vibes Argan Oil Hairfall Control Vitalizing Serum I Frizz Control, Shine, Stregthening I No Parabens, No Sulphates, No Animal Testing (50 ml)

3 Austrian Diamond
Jewellery Sets
(3AUD2)
M.R.P. : ₹1,999
Only At
₹499

SCOTTISH CLUB
PACK OF 5 V NECK T-SHIRT
M.R.P. ₹2,495/-
OFFER PRICE ₹599

NIRLON
METAL INDIA PVT. LTD.
12 CAVITY
NON- STICK APPAM PATRA
WITH LONG HANDLE & LID
MRP ₹999/-
SHOP NOW
₹399/-
BAKELITE LONG HANDLE
COLOUR THAT WON'T COME OFF EASILY
FOOD GRADE NON STICK COATING
•2 COLOURS OPTIONS: BLUE & RED •COOK HEALTHY SNACKS FOR YOUR FAMILY •EASY TO CLEAN •MAKE FOOD IN LESS OR NO OIL

LUXURY QUEEN
10 BEDSHEET SETS
+ 15 PILLOW COVERS
MEGA COMBO
MRP ₹8,000/-
SHOP NOW
₹1,999/-
5 DOUBLE BEDSHEETS
WITH 10 PILLOW COVERS

5 SINGLE BEDSHEETS
WITH 5 PILLOW COVERS
•SUPER SOFT FABRIC •NO COLOUR BLEEDING •WRINKLE & SHRINK RESISTANT FABRIC •NO ALLERGY, NO RASHES •ELEGANT & BRIGHT DESIGNS
•IDEAL FOR GIFTING PURPOSES •EASY TO CARE & MAINTAIN •SIZE: DOUBLE BEDSHEETS: 208 cm X 213 cm
•SIZE: PILLOW COVERS: 43 cm X 60 cm •Size: Single Bedsheets: 213 cm x 150 cm •Size: Pillow Covers: 43 cm x 60 cm

SCOTTISH CLUB
Easy Go Stylish
LEATHERITE TROLLY BAG
MRP ₹4,999/-
SHOP NOW
₹1,499/-
•2 COLOUR OPTIONS: BROWN & BLACK •EASY TO CARRY •20 LITRES CAPACITY •ADJUSTABLE HANDLE
•ZIPPER CLOSURE •GOOD QUALITY ZIPPER •PIPING FOR STURDY STRUCTURE, •DOUBLE STICH •WHEELS FOR EASY TRAVELLING
•EASY TO STORE WHILE TRAVELLING •EQUIPPED WITH INTERNAL ZIP •STYLISH

आलू की खेती...

आलू की खेती परिचय आलू की उत्पत्ति दक्षिण अमेरिका को माना जाता है, लेकिन भारतवर्ष में आलू प्रथम बार सत्रहवीं शताब्दी में यूरोप से आया। चावल, गेहूँ, गन्ना के बाद क्षेत्रफल में आलू का चौथा स्थान है। आलू एक ऐसी फसल है जिससे प्रति इकाई क्षेत्रफल में अन्य फसलों (गेहूँ, धान एवं मूँगफली) की अपेक्षा अधिक उत्पादन मिलता है तथा प्रति हेक्टर आय भी अधिक मिलती है। आलू में मुख्य रूप से ८०-८२ प्रतिशत पानी होता है और १४ प्रतिशत स्टार्च, २ प्रतिशत चीनी, २ प्रतिशत प्रोटीन तथा १ प्रतिशत खनिज लवण होते हैं। वसा ०.१ प्रतिशत तथा थोड़ी मात्रा में विटामिन्स भी होते हैं। जलवायु आलू समशीतोष्ण जलवायु की फसल है। उत्तर प्रदेश में इसकी खेती उपोष्णीय जलवायु की दशाओं में रबी के मौसम में की जाती है। सामान्य रूप से अच्छी खेती के लिए फसल अवधि के दौरान दिन का तापमान २५-३० डिग्री सेल्सियस तथा रात्रि का तापमान ४-१५ डिग्री सैल्सियस होना चाहिए। फसल में कन्द बनते समय लगभग १८-२० डिग्री सेल्सियस तापकम सवोत्तम होता है। कन्द बनने के पहले कुछ अधिक तापक्रम रहने पर फसल की वानस्पतिक वृद्धि अच्छी होती है, लेकिन कन्द बनने के समय अधिक तापक्रम होने पर कन्द बनना रूक जाता है। लगभग ३० डिग्री सैल्सियस से अधिक तापक्रम होने पर आलू की फसल में कन्द बनना बिलकुल बन्द हो जाता है। भूमि एवं भूमि प्रबन्ध आलू की फसल विभिन्न प्रकार की भूमि, जिसका पी. एच. मान ६ से ८ के मध्य हो, उगाई जा सकती है, लेकिन बलुई दोमट तथा दोमट उचित जल निकास की भूमि उपयुक्त होती है। ३-४ जुताई डिस्क हैरो या कल्टीवेटर से करें। प्रत्येक जुताई के बाद पाटा लगाने से ढेले टूट जाते हैं तथा नमी सुरक्षित रहती है। वर्तमान में रोटावेटर से भी खेत की तैयारी शीघ्र व अच्छी हो जाती है। आलू की अच्छी फसल के लिए बोने से पहले पलेवा करना चाहिए। बुआई का समय आलू तापक्रम के प्रति सचेतन प्रकृति वाला होता है। २५ से ३० डिग्री सेंटीग्रेड दिन का तापमान आलू की वानस्पतिक वृद्धि और १५-२० डिग्री सेंटीग्रेड आलू कन्दों की बढ़वार के लिए उपयुक्त होता है। सामान्यतः अगेती फसल की बुआई मध्य सितम्बर से अक्टूबर के प्रथम सप्ताह तक, मुख्य फसल की बुआई मध्य अक्टूबर के बाद हो जानी चाहिए।

भूमि का चयन

आलू की खेती के लिए भूमि का चयन करना बहुत ही जरूरी है आपको बता दें क्षारीय भूमि को छोड़ कर सभी प्रकार की भूमि आलू की फसल के लिए उपयुक्त होती है। परंतु मध्य से लेकर हल्की दोमट भूमि आलू की खेती के लिए सबसे उपयुक्त मानी जाती है। जिसमें पानी का निकास अच्छा तथा जीवांश की मात्रा उपयुक्त हो।

भूमि की तैयारी

यदि खेत में नमी नहीं है तो खेत में पानी भरकर पलेवा कर लेना चाहिए बताऊ आने पर खेत की जुताई हैरो तथा कल्टीवेटर से करके मिट्टी को भुरभुरा कर ले।

प्रजातियों का चयन

आलू की प्रजातियों का चयन करना बहुत ही आवश्यक है अधिकांश हमारे किसान भाई मुख्य प्रजाति की बुवाई करके अधिक लाभ नहीं कमा सकते हैं इसलिए जिन पर जातियों को हम बता रहे हैं आप उन्हीं पर जातियों का प्रयोग करें ताकि आप अधिक से अधिक लाभ कमा सकें।

इन प्रजातियों में से किसान भाई अपनी सुविधा अनुसार किसी भी किसी भी प्रजाति का चुनाव कर सकते हैं। किसी के साथ साथ बीच का आकार तथा रंग एक जैसा होना चाहिए। आलू का वजन ३० से ४० ग्राम होना चाहिए। बीज की बुवाई से लगभग १५-२० दिन पहले सितगीरी से निकाल देना चाहिए उसमें से खराब आलू के बीज को निकाल देना चाहिए। जब आलू में आंखें निकलनी आरंभ हो जाए तब बीज बोने के लायक हो जाता है। यदि बड़े आकार का आलू है तो उसे काटकर होना चाहिए।

बीज दर

आलू की बुवाई के लिए २५ से लेकर ३० कुंतल प्रति हेक्टेयर की दर से बीज की आवश्यकता होती है।

बीज का शोधन

आलू की बुवाई से पहले बीज का शोधन करना अति आवश्यक होता है। बीज शोधन के लिए कैप्ट्रेन २ ग्राम, डाईथीन-M45, 2gm प्रति लीटर पानी में घोलकर प्रति किलोग्राम बीज दर के हिसाब से पानी में घोलकर २० से ३० मिनट तक डूबा कर रखें। बाद में निकाल कर उसे छायादार स्थान पर रख कर सुखा लें। बीज का शोधन करने के बाद ही आलू की बुवाई करें।

खाद एवं उर्वरक

आलू की बुवाई के से एक महीना पहले लगभग २५ से ३० टन प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर की खाद मिट्टी में अच्छी तरह मिला दे। इसके अतिरिक्त बुवाई से पहले अंतिम जुताई के समय नत्रजन १२० से १५० किलो ग्राम की दर से फास्फोरस ८० से १०० किलोग्राम की दर से तथा पोटाश १०० किलोग्राम के साथ नत्रजन की आधी मात्रा अंतिम जुताई के समय खेत में भली भांति प्रकार से मिला देनी चाहिए।

बुवाई की विधि

हमारे देश में आलू की बुवाई मुख्य रूप से तीन विधि के द्वारा की जाती है जो निम्न प्रकार से है।

१. समतल भूमि में बुवाई करके मिट्टी चढ़ाना।

अधिकतर किसान इसी विधि के द्वारा आलू की बुवाई करते हैं। इसमें खेत को तैयार करने के बाद खुदाआली की सहायता से उचित दूरी नाली बना ली जाती है जिसमें आलू की बुवाई करके फावड़े से मिट्टी चढ़ा दी जाती है।

२. मैडो पर आलू बोना।

इस विधि में तैयार खेत में मेड बनाने वाले यंत्र से मेड बना ली जाती है। जिसके बाद आलू को ८ से १० सेंटी मीटर की दूरी पर दबा दिया जाता है।

३. पोटैटो प्लांट से बुवाई।

पोटैटो यंत्र से तैयार खेत में मेडे तैयार कर ली जाती है, और आलू की बुवाई की जाती है इस यंत्र का उपयोग अधिक क्षेत्र में आलू की बुवाई के लिए किया जाता है।

आलू की अगेती बुवाई का उचित समय

आलू की अगेती फसल की बुवाई के लिए उपयुक्त समय १५ सितंबर से १० अक्टूबर तक होता है।

निराई गुडाई एवं मिट्टी चढ़ाना

जब आलू के पौधे १२ से १५ सेंटीमीटर के हो जाते हैं तो सिंचाई कर देनी चाहिए। जब खेत बुनाई के लिए तैयार हो जाए तो आलू के खेत से खरपतवार निकाल कर गुड़ाई करने चाहिए। गुड़ाई करने के बाद शेष बचे नत्रजन की मात्रा को आलू के खेत में छिड़क कर मिट्टी चढ़ा देना चाहिए।

सिंचाई

आलू की बुवाई के १ सप्ताह बाद हल्की सिचाई अवश्य करें। मिट्टी चढ़ाने के बाद आवश्यकता अनुसार समय के अनुरूप आलू की फसल की सिंचाई करते रहना चाहिए। सिंचाई करते समय यह बात बहुत जरूरी ध्यान में रखना चाहिए कि ज्यादा पानी फसल के लिए नुकसान दे सकता है।

आलू की खुदाई व उपज

आलू की खुदाई के लिए पोटैटो डिगर यंत्र से अथवा फावडे से की जाती है। उपरोक्त विधि से खेती करते किसान भाई अगेती किस्मत से २०० से ढाई सौ क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से आलू की उपज प्राप्त कर सकते हैं। ■

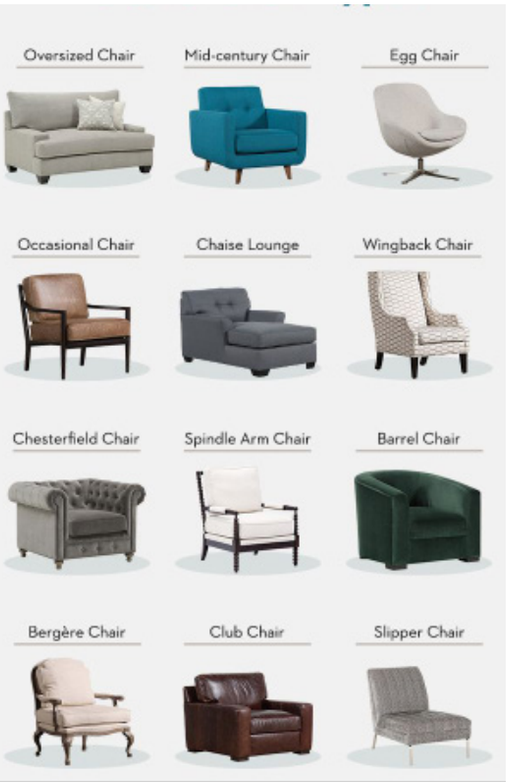

New lifestyle Furniture

KIRTI NAGAR: Timber Market-9717005829; **FARIDABAD:** Crown Interiorz Mall-9910869944; **GHAZIABAD:** Shipra Mall-9717198235;

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

ADVERTISEMENT TARRIF

No.	Page	Colour	Rate
1.	Last Cover full page	Colour	50,000/-
2.	Back inside full page	Colour	40,000/-
3.	Inside full page	Colour	25,000/-
4.	Inside Half page	Colour	15,000/-
5.	Inside Quater page	Colour	07,000/-
6.	Complimenty Adv.	Colour	03,000/-
7.	Bottam Patti	Colour	2500/-

6 Months Adv. 20% Discount

1 Year Adv. 50% Discount

Mechanical Data: **Size of page:** **290mm x 230mm**

PLEASE SEND YOUR RELEASE ORDER ALONG WITH ART WORK IN PDF & CDR FORMAT

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532